सोना-उगले मिट्टी

देश की सर्वाधिक लोकप्रिय कृषि पत्रिका

दिसम्बर, 2025 व जनवरी, 2026

मूल्य : 25/- रुपये

जेपीका · insecticides (INDIA) LIMITED · medisquad CLASSES INDORE · JAIN Jain Irrigation Systems Ltd.

चलो नाशिक · चलो सूरत · चलो बुरहानपुर · चलो दिल्ली · चलो इन्दौर · चलो दिल्ली · चलो चंडीगढ़ · चलो रतलाम

पूसा कृषि विज्ञान मेला 25 - 27 फरवरी, 2026 विकसित कृषि - आत्मनिर्भर भारत

12-14 March 2026

krishi MACH EXPO 13-14-15 MARCH 2026 CHANDIGARH

Agri Expo 20-21-22-23 Mar 2026

सैफरॉन

करे फसल की POWER ON

insecticides (INDIA) LIMITED हर क़दम, हम क़दम

62 वर्षों से

स्थापना 1963

500 से अधिक प्रकार की

ऑटोमैटिक मशीनें

ग्राइंडर • मिक्सर • इम्पेक्ट पल्वराइजर

M.S. and S.S.

3000 से अधिक शहरों एवं विदेशों में कार्यरत हैं

• ऑल ग्राइंडिंग (गीली/सूखी) • आटा चक्की (पत्थर/बिना पत्थर) • ग्रेडर छालना (बड़े/छोटे) • कोल ब्रिकेट्स • वाइब्रेटिंग सिफ्टर (छालना) • पेलेट • राईस मिल • पोल्ट्री फीड प्लांट्स • ऐलीवेटर • वर्म • डिस्टोनर • डिकार्टिकेटर • मावा • आमरस • रोस्टर • पापड़ • बूंदी-लड्डू मेकिंग • पेकिंग • लकड़ी गैस भट्टी • नमकीन • सुपारी • सर्फ-साबुन • मैग्नेटिक डिस्टोनर मशीनें

पेपर कटिंग भेजने पर 5% स्पेशल डिस्काउंट

निर्माता एवं विक्रेता : सभी मशीनों के केटलॉग एवं रेटलिस्ट निःशुल्क मंगवाएं

पंजाब इंजीनियरिंग इन्दौर

ऑफिस/फेक्ट्री: 251/1, इंदिरा नगर वाली गली, लाबरिया भेरू, धार रोड, इन्दौर (म.प्र.)-452 002

ऑफिस: 26, खालसा स्टेडियम, धार रोड, इन्दौर, E-mail : punjabei@gmail.com

98260 53289 | 94253 20160 | 93292 05352

रबी फसल नियंत्रण

शिवालिक क्रॉप साइंस (प्रा.) लिमिटेड

शिवालिक करे किसानों के सपने साकार

(1974 से किसानो की सेवा में समर्पित)

Shivalik Crop Screience (P) Limited

Head Office: Neelam Cinema Complex, Sector 17-E, Chandigarh-160017
Ph.: +91-172-5045397, Fax: 2702911 Branch Office: No.27, A.E. Compound, Lasudia Mori, Dewas Naka,
Indore-452010, Ph.: 0731-4293668 (0) 9827223520 (M) E-mail: indore_sac@yahoo.com, indore@shivalikcropsciences.com

VIGOUR
GROUP
किसानों
की पहली
पसंद
Let's Lead
VIGOUR
www.vigourseeds.in
vigourbiotech
Vigour Biotech Pvt. Ltd.

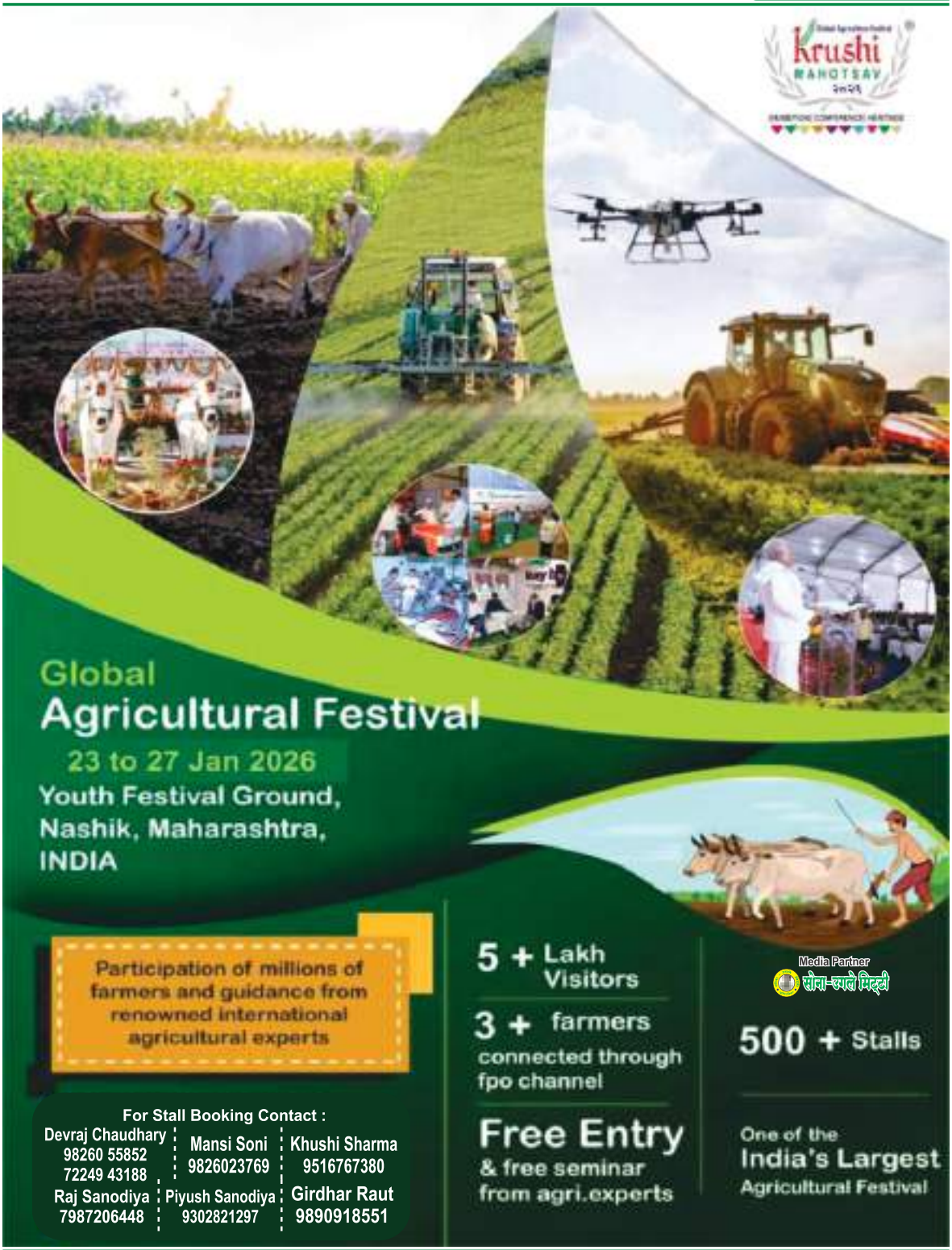
Krushi
MAHOTSAV
Global
Agricultural Festival
23 to 27 Jan 2026
Youth Festival Ground,
Nashik, Maharashtra,
INDIA
Participation of millions of farmers and guidance from renowned international agricultural experts
5 + Lakh Visitors
3 + farmers connected through fpo channel
Free Entry
& free seminar from agri.experts
Media Partner
सोना-उगले मिट्टी
500 + Stalls
One of the India's Largest Agricultural Festival
For Stall Booking Contact :
Devraj Chaudhary 98260 55852 72249 43188
Mansi Soni 9826023769
Khushi Sharma 9516767380
Raj Sanodiya 7987206448
Piyush Sanodiya 9302821297
Girdhar Raut 9890918551

कृषि
उद्यानिकी, वानिकी,
घरेलू बागवानी, मत्स्य पालन, पोल्ट्री,
पशु पालन, कृषि मशीनरी एवं यंत्र, स्वास्थ्य
खाद्यान्न, बैंकिंग, परिवहन एवं ग्रामीण विकास
शिक्षा, पर आधारित सम्पूर्ण ग्राम्य पत्रिका

सोना-उगले मिट्टी

ई.ए.-155, स्कीम नं. 94, रिंग रोड,
भारत पेट्रोल पंप के सामने, इन्दौर-452010 (म.प्र.)
फोन : 0731-7965405, मो. : 9826055852, 7224943188
E-mail : devrajchaudhary@rediffmail.com, info@sonauglemitti.com
sonauglemitti25@gmail.com website : www.sonauglemitti.com

वर्ष-16 | दिसंबर-25 व जनवरी 2026 | अंक : 176-177 |

प्रधान संपादक : **देवराज चौधरी** -098260 55852

संरक्षक मण्डल

कर्नल हर्ष कौल
पं. राजेंद्रप्रसाद पाठक (बावई वाले)
श्रीमती काजल दीक्षित
श्री भरत गुप्ता
श्री राजेश पाहवा

सम्पादकीय सलाहकार (कृषि विशेषज्ञ, तकनीकी लेख)

डॉ. एस.एस. तोमर
डायरेक्टर रिसर्च, ज. ने. कृ. वि. विद्यालय, जबलपुर
मो. 94254-69184

डॉ. विनोदलाल एन. श्रॉफ
वरिष्ठ कृषि विशेषज्ञ, पूर्व डीन, कृषि महाविद्यालय, इन्दौर
फोन : 0731-2490730, मो. 94259-00896

श्री एस.एस. भटनागर 'कृषिरत्न'
सलाहकार, म.प्र. राज्य सहकारी बीज महासंघ,
पूर्व क्षेत्रीय प्रबंधक, राष्ट्रीय बीज निगम, भारत सरकार
(म.प्र. एवं छत्तीसगढ़)
मो. 94256-02483

श्री जी.पी. सक्सेना (पूर्व डायरेक्टर सोपा)
पूर्व प्रबन्ध निदेशक, म.प्र. राज्य बीज प्रमाणिकता
फोन : 0731-4003978, मो. 91790-84550

डॉ. ओ.आर. मिश्रा मो. 094250-59127
कृषि विशेषज्ञ, से.नि. प्रोफेसर, कृषि महा. वि., इन्दौर

डॉ. ए.एम. राजपूत डीन, कृषि महाविद्यालय, इंदौर
फोन : 0731-2591739, मो. 94253-46029
राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर

डॉ. आर.के. बघेरवाल
प्रोफेसर, पशु चिकित्सा एवं पशुपालन महा.वि. महू, जि. इन्दौर
फोन : 07324-274150, मो. : 94250-57170

डॉ. ए.आर. वर्मा
प्रोफेसर, पशु चिकित्सा एवं पशुपालन महा.वि., महू, जि. इंदौर
फोन : 07324-275098, मो. 99260-29370

भानुप्रतापसिंह
पूर्व वरिष्ट वैज्ञानिक एवं प्रियासिंह शस्य विज्ञानी,
कृषि क्लीनिक केन्द्र शहडोल (म.प्र.) मो. 9300240113

मैग्जीन डिजाइन एवं ग्राफिक्स
गुफरान अंसारी
मो.: 8871371499

विशेष मार्गदर्शक
राजेन्द्र सिंह भदौरिया
मो.: 99263 23857

अनुक्रमणिका

हमारे प्रतिनिधि	04
संपादकीय	05
पत्र सम्पादक	06
गेहूं के प्रमुख कीट	07
चने के रोग	09
सरसों के प्रमुख कीट	10
अफीम में लगने वाले प्रमुख रोग	11
सूरजमुखी के रोग	12

इसके अतिरिक्त जैविक, उद्यानिकी कृषि यंत्र, भण्डारण, पशु-पालन, आध्यात्म, स्वास्थ्य, खेल, फिल्म, महिला जगत, बाल जगत, भविष्यफल आदि पर नियमित लेख.

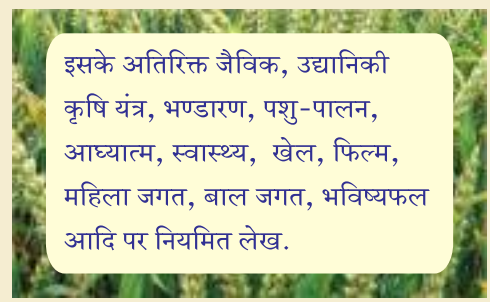

स्वत्वधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक : देवराज चौधरी के लिए
स्पूतनिक प्रिंटिंग प्रेस, बी-9, फिरोजगांधी प्रेस परिसर, इन्दौर (म.प्र.) से मुद्रित
ई.ए.-188, स्कीम नं. 94, रिंग रोड़,
भारत पेट्रोल पंप के सामने, इन्दौर-452010 (म.प्र.)
सम्पादक : देवराज चौधरी मो. 9826055852, 7224943188

सुश्री नताशा गोम्स हमारे कार्यालय :

ग्वालियर ऑफिस :
हेमन्त चौधरी (ब्यूरो चीफ)
चौधरी का बाड़ा, पुलिस मेस रोड
कम्पू, लश्कर, ग्वालियर (म.प्र.)
फोन : 0751-2379232
मोबाईल : 98270 48400

नोयडा ऑफिस :
तनुश्री
अनिकेत सिंह, ह.नो. 4, ब्लॉक 13,
नियर डीटीसी बस स्टैंड,
कोटला विलज, मयूर विहार फेस-I,
ईस्ट **दिल्ली**-110091
मो. **8376881227**

छत्तीसगढ़ ऑफिस :
तुलसीराम नामदेव
ब्यूरो चीफ, छत्तीसगढ़
मकान नं. 1, आरडीए कॉलोनी,
टिकरापारा, रायपुर 492001 (छ.ग.)
मो. 0810943815,
09329601368

पूना ऑफिस :
सचिन दरेकर
जी एफ-38, सी विंग,
कुणाल प्लाजा, गगनगिरी पथ,
शिवाजी चौक, चिंचवड़ स्टेशन
(पूर्व), **पुणे**-411019
मो. : 09850643651

दिल्ली (एन.सी.आर.)
सारिका सागर
105 ए-ब्लॉक,
जहांगीरपुरी गंज,
आजादपुर मंडी, दिल्ली
मो.: 07701971499
मो.: 09953010468

राजस्थान
शिवम पटेल
अमृत संजिवनी हर्बल
20, अरीहंत कॉम्प्लेक्स,
फतेहपुर चौराहा,
उदयपुर (राज.)
मो.: 09799931200,
09602635727
E-mail:amritstevia@gmail.com

हमारे प्रतिनिधि :

लाखनसिंह गेहलोत
एल जी एग्रो एण्ड इलेक्ट्रॉनिक्स
कृष्णा मार्केट के सामने, एम जी रोड,
इंदौर नाका, देपालपुर फोन : 07322-225615 मो : 94251 90916

राजेश परमार (गौतमपुरा तह.देपालपुर)
राजश्री कृषि सेवा केंद्र
गीता भवन, **गौतमपुरा**
तह. देपालपुर जिला इंदौर
फोन : 07322-314888
मो.: 9907700136

नरोत्तम चौधरी (हातोद क्षेत्र)
चौधरी कृषि सेवा केंद्र
बस स्टेंड, **हातोद**
जिला इन्दौर
मो. : 98939 29115

सोभरणसिंह कौरव
घाटीगांव, जि. ग्वालियर (मप्र)
मो. : 94257 77980

विवेक रघुवंशी
विवेक बीज भंडार
ए.बी. रोड़, लुकवासा,तह. कोलारस
जि. शिवपुरी म.प्र. मो. 09993272205

पवन कुमार पालीवाल
मेसर्स अशोक कुमार
पवनकुमार पालीवाल
अनाज मंडी, बीनागंज, जि.-गुना
फोन. 07546-240472
मो.: 9425134491

सुरेश सिंह रघुवंशी
संगम कृषि सेवा केंद्र,
सरकारी कृषि फार्म के सामने,
एबी रोड, गुना (मप्र)
फो : 07542 400268
मो : 98931 25268

मुकेश कुमार केवट
केवट कृषि सेवा केन्द्र, कुंभराज, जि. गुना
मो. 09098458803

दीपेंद्र रघुवंशी
जी.एस. ऑटोमोबाईल,
ए.बी. रोड, बदरवास
जि.-शिवपुरी (म.प्र.)
फोन. 07495-245310,
मो.: 09425136320

सुनील गुप्ता
ग्राम-लोहारी, तह. कुक्षी,
जिला-धार (म.प्र.)
मो. 09755741145

तेजराम जाखड़
जाखड़ एग्रो एजेंसी
छोटा नागदा, तह. बदनावर जिला
धार मो. : 99931 10351

द्वारकाप्रसाद पाठक
द्वारका निवास भवानी माता रोड़,
खण्डवा (म.प्र.)
मो. 09200303237

विभाष खेड़ेकर
ग्राम ब्राम्हणगांव तह.ठीकरी जिला
बड़वानी-451660 (म.प्र.)
मो. : 99931 30699

योगेश गोस्वामी
ग्रा.पो. भामपुरा
तह महेश्वर जिला खरगोन (मप्र)
मो : 098265 99130

दिनेश अग्रवाल
अग्रवाल मशीनरी स्टोर, 418/3 मेन रोड़,
आर.एन. काम्पलेक्स, हरदा (म.प्र.)
फोन: 07577-222077,222434
मो.94250-42277

भवानीशंकर जोशी
C/o रस्सी वाला इंटरप्राइजेस, तहसील के सामने, बड़नगर
निवास: चन्द्रशेखर, आजाद चौक, बड़नगर,
जिला -उज्जैन मो. 09009299913

बद्रीलाल जाट
जाट श्री ट्रेडर्स
उज्जैन रोड, टेलीफोन ऑफिस के पास,
बडनगर, जिला- उज्जैन
मो. 09300837591

सुनिल कनासिया
महू (म.प्र.)
मो.: 09589633595

कमलसिंह आंजना
ग्राम -सांकलीकाड़ा, पो. पिपलिया,
यामाहा, ति. घटिया
जिला-उज्जैन (म.प्र.)
मो. 098269-34854

बालमुकुंद चौरसिया
ग्राम : **भाटपचलाना,**
तह. बड़नगर जिला **उज्जैन** (मप्र)
फोन : 07367-263739
मो. : 99773 30521

शिवम लौहार (शहर क्षेत्र)
244/1, स्टेशन रोड़, **खाचरोद**
जिला उज्जैन (मप्र)
मो. : **09617949959, 08305626412**

फिरोज पटेल
बिलोदा नायता, पोस्ट-तह. सांवेर
जिला इंदौर
मो. 09926078602

ब्रजबिहारी वाजपेई
510, न्यू कटनी, एनकेजे
राजा किराना स्टोर्स
जि : कटनी (मप्र)
फो : 07622 237084
मो : 94243 22101

शब्बीर पिता हाजी राजुबा अजमेरी
ग्राम सेमली, पोस्ट-मालिया खेर खेड़ा,
तह. जिला- मन्दसौर-458895 फोन : 07422-284913 मो. 9753027568,

शीतल जैन
515, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी
कोटा (राजस्थान)
मो. 09828090283

मोतीलाल शर्मा
गोकुलपुरा वार्ड नं. 11, कलवाड़ रोड
तेजाजी मंदिर के पास, श्री शर्मा फ्लोर मील
पो.- मीनावाला, **जयपुर** (राज.)

अरविन्द दांगी
मां विजासनी कृषि सेवा केंद्र
मंडी गेट अन्नपूर्णा के पास,
सोनकच्छ, जि. देवास (मप्र)
मो : 093013 91395

शाद अहमद खान
मकान नं. 58, वार्ड नं. 23
सुल्तान डेयरी के सामने,
शहडोल फोन : 07652-230230
मो. 9329411200.

मे अग्रवाल केमिकल्स एंड फर्टिलाइजर्स
97, धानमंडी, **रतलाम** (मप्र)
फोन: 07412-236199
मो : 094251 03299, 93297 53555

राकेश कुमार जाट
जाटपुरा,कमलापुर, तह. बागली
जि. देवास (म.प्र.)
मो. 9755805221

शाहिद सिदकी
जय किसान कृषि सेवा केंद्र
टोंक खुर्द, जि. देवास (मप्र)
मो. : 98932 95685

मनीष महेश्वरी
महेश्वरी ट्रेडर्स
मेन रोड़ पिपलरवां,
तह. सोनकच्छ, जि. देवास
मो.: 9827350779, 9424029779

पुनमचंद विश्नोई
वार्ड नं.5, रैनबसेरा कॉलोनी
म.प्र. विद्युत मंडल ऑफिस के पीछे,
खातेगांव जिला-देवास (म.प्र.)
मो. 98264-86406

भगवती प्रसाद शर्मा
भगवती कृषि सेवा केन्द्र, सारंगपुर
रोड़, कानड़ जि. आगर-मालवा
(म.प्र.) **मो. 09755225713**

बलवंत सिंह किरार
सत्यम कृषि केंन्द्र,
शुजालपुर रोड बायपास चौपाटी,
आष्टा, जि. सिहोर
मो.: 9754728383

अनारसिंह ठाकुर
ग्राम-आमला मज्ज पोस्टः फूडरा,
तह. आष्टा जिला-सीहोर (म.प्र.)
मो. : 07489957803

डॉ राधेश्याम गोस्वामी
105, गोविंद भवन, गुरूनानक कॉलोनी,
बूंदी (राजस्थान) मो. 09672465439

दुर्गेश नागपाल
दुर्गेश प्रापर्टी, दु. नं. 1 मॉडल टॉउन, बालविकास स्कूल के निकट,
पानीपत हरियाणा मो. 09017736409

मिथलेश सिंह मधुवन फर्टिलाइजर्स
जैवरा सिरस्सा धमदा रोड, **दुर्ग** (छग)
मो : 098271 57832

स्वदेश अग्रवाल
दादाजी कृषि सेवा केंद्र
मण्डी रोड, **राजनंदगांव** (छग)
फोन : 07744 407336
मो : 99932 37877

जितेंद्र चंद्रकर / मे किसान मितान
बागबेरा रोड, **महासमुंद** (छग)
मो : 98267 23932

कृष्णदास बैरागी
3067/सी, आयुर्ध नगर (ऑर्डनेंस फैक्ट्री)
इटारसी म.प्र. फोन : 07572-263156
मो. : 9907270259

उदयराज ठाडाजी
ओम फोटो फ्रेम
जादम गुजर धर्मशाला के सामने
ओंकारेश्वर जि. खंडवा
मो. 98937 60915

अतुल अग्रवाल
अतुल ट्रेडर्स, सांडिया रोड, पिपरिया,
जिला-होशंगाबाद (म.प्र.)
मो. 09425020089

विनय तिवारी
केशव बीज भण्डार
34, शोभापुर रोड, पिपरिया जिला-होशंगाबाद
मो. 08103209304, 09425311033

अंकित पाल, सनावद मो.: **9617614775**
ऋषी शर्मा, जोबट मो.: **9630377330**
अकरम शाह, बदनावर मो.: **7869381161**
फिरोज खान (मुन्ना) मो.: **9826057444**
राकेश मीणा मो.: **9926182677**
यश कृषि सेवा केन्द, नसरुल्लागंज
धर्मेन्द्र कुमार मो. 09754041905 तराना
नवीन वर्मा मो. 9993100797 शाजापुर
राहुल काशिव मो.: **08463080269**
चन्द्रभान चौहान अमरावदकलॉ मो.: **9893022478**
अमित चौहान बकतरा मो.: **9993947477**
अम्बालाल पटेल जोबट मो.: **7999584514**
किशोर दत्ता मो.: **7067899532**

सम्पादकीय एवं मार्केटिंग

मनोरमा काशिव मो.: 9009076895	मानसी सोनी मो.: 9826023769
सुनील सोलंकी मो.: 9926397460	श्वेता ठाकुर मो.: 9827131121
रचना पचोरकर मो.: 9516767380	रश्मि शर्मा मो.: 9111486377
राज सनोड़िया मो.: 7987206448	पियूष सनोड़िया मो.: 9302821297

मेरी लेखनी की आवाज...

प्रिय कृषक / व्यापारी बंधुओं ,

सोना–उगले मिट्टी का रबी फसल पोषण, फसल सुरक्षा भाग–2 लेकर आपकी सेवा में उपस्थित है, आशा है सदैव की भांति हमारी टीम की मेहनत आपको अवश्य पसंद आयेगी। सभी देशवासियों को नव वर्ष, लोहडी एवं मकर संक्रांति की हार्दिक शुभकामनाएँ।

अब बात किसानों की। गेहूँ की फसल का रकबा पूरे देश में बढ़िया रहा, चने के रकबे में बढ़ोत्तरी दर्ज की गई, नवम्बर में अचानक कई दिन तक बारिश आने से आये मौसम के बदलाव को समझना कठिन था पर गेहूँ के लिये तो यह वरदान साबित हुई, आलू एवं मटर की फसल पर इसका अवश्य विपरीत असर हुआ। मावठा भी समय पर पड़ा तो गेहूँ अभी तक सुरक्षित है, ईश्वर से यही प्रार्थना है कि आगे भी फसले सुरक्षित रहे, वैसे भी किसान भाई एवं व्यापारी सोयाबीन व खरीफ फसलों को लेकर तपे हुए है और अब सभी की आस रबी की स्वस्थ्य फसलों पर टिकी हुई है। खरीफ के नुकसान का आकलन पूर्ण रूप से नहीं हो पाया, सरकारी कर्मचारी अपने विभाग की ड्यूटी उगाई में ज्यादा रहती है और बेचारा किसान आस लगाये बैठा रहता है, कब बदलेगा यह सिस्टम कोई नहीं बताता, **हम तो इशारा कर समझा ही सकते है, पर कोई सुनता .....**

अब बात राजनिती की। देखा जाये तो भाजपा ने हिन्दुत्व को जगया और भुनाया भी, मोदी जी ने अपनी तूफानी यात्राओं और दिन–रात की भागदौड़ से देश की जनता सोचने पर मजबूर कर दिया जब अपने उद्बोधन में कहा कि ''भगवान श्री कृष्ण ने कौरवों से पाण्डवो के लिये 5 गांव मांगे थे, हम देश हित में 5 कानून मांग रहे है'' वो है – **समान शिक्षा, समान नागरिक सहिंता, धर्मांतरण नियंत्रण घुसपैठ नियंत्रण और जनसंख्या नियंत्रण ,** अगर ये 5 कानून नहीं आये तो पूरी दूनिया और भारत के 9 राज्यों की तरह सनातन धर्म पूरी तरह नष्ट हो जायेगा, एक तरह से ''**भारत छोड़ो आंदोलन की भांति भारत बचाओं आंदोलन**'', का बिगुल बजाकर मोदी ने बाजी को पलट कर तो रख दी थी लेकिन लगाम उनके हाथ में ना होकर राज्यों के मुख्य मंत्रीयों के व अधिकारियों के हाथ में ही रहती है, **हम तो इशारा कर समझा ही सकते है, पर कोई नहीं सुनता.....।**

देखा था कभी आदमी फिर सो गए थे हम, आज उठे हैं तो देखते हैं की इंसान बदल गया । सत्ता में आते ही जो शान से स्टेज पर स्वागत, वाहन रेली सरकारी मशीनरी का दुरूपयोग, कुछ नहीं बदला इस देश में और ना बदलेगा, जनता के पैसे पर नेताओं के फालतू के खर्चे, कब रूकेगा ये सब, **हम तो इशारा कर समझा ही सकते है, पर कोई नहीं सुनता।**

अब बात भष्ट्राचार की, हम पहले कई बार लिख चुके है कि इस देश में भष्ट्राचार और दो नम्बर का काम कभी समाप्त नहीं किया जा सकता, इमानदारी से दो वक्त की रोटी ही नसीब होती है, हम चाहे नोटबंदी करे, जी.एस.टी.लगाये या कोई भी कानून ले आये, सरकारी अमला व्यापरियों को नित नये रास्ते दिखाता है और नेताओं के संरक्षण में भष्ट्राचार बरकरार रहता है। **हमारा काम तो इशारा कर समझाना मात्र है, पर कोई नहीं सुनता.....।**

हाल ही में, भागीरथपुरा इंदौर में दूषित पिये जल से हुई कई मौतो ने सरकार की अंदेखियों को उजागर कर दिया, हम सदेव लिखते आऐं हैं कि कहां गई वो क्लोरीन की गोलियां जो पानी की टंकियों में डाली जाती थी, कहां गया वो डी. टी.टी. का स्प्रे जिससे मच्छर कीढे मर जाते थे, हब तो सारा फंड नेताओं व अधिकारियों की पकड में रहता है खर्च कहां होता है, हिसाब कौन मांगे ? **हम तो इशारा कर समझा ही सकते है, पर कोई नहीं सुनता.....।**

चलते–चलते इन पंक्तियों के साथ....

चिराग सी तासीर रखिए,
सोचिए मत की घर किसका रौशन हुआ..

आपका अपना

देवराज चौधरी

प्रधान संपादक एवं प्रकाशक

मैं **सोना-उगले मिट्टी** पत्रिका का बहुत पुराना सदस्य हूँ मुझे इस पत्रिका से बहुत उपयोगी लेख कृषि व पशुपालन के लेख प्राप्त होते है एवं भारत के अग्रिम मेलों को जानकारी भी मिल जाती है बहुत समय से डाक में पत्रिका नियमित प्राप्त नहीं हो रही है। कृपया इसे नियमित करने की कृपा करें ।

विनय तिवारी
केशव बीज भंडार
पिपरीया जि. होशंगाबाद

मैं **सोना-उगले मिट्टी** पत्रिका का सदस्य हूँ इसमे दी जाने वाली जानकारी बहुत अच्छी ज्ञानवर्धक है। क्योंकि इसमें सभी फसलों का पूरी जानकारी रहती है एवं कृषि मेलों की जानकारी मिलती है।

महेश पाटीदार
बालाजी कृषि सेवा केंद्र
नलखेड़ा जि. अगर मालवा

मैं **सोना-उगले मिट्टी** पत्रिका का बहुत पुराना सदस्य हूँ। मुझे बहुत अच्छी लगती। मेरा पोल्ट्री से संबंधित व्यवसाय व फार्म है, इसमें कुकुट पालन से संबंधित कई जानकारी आती है।

हरेंदर भाटिया
सिमरन ग्रुप, इंदौर

मैं **सोना-उगले मिट्टी** पत्रिका का सदस्य हूँ मुझे इस पत्रिका से बहुत उपयोगी लेख कृषि के लेख प्राप्त होते है एवं भारत के अग्रिम मेलों को जानकारी भी मिल जाती है बहुत समय से डाक में पत्रिका नियमित प्राप्त नहीं हो रही है। कृपया इसे नियमित करने की कृपा करें ।

मुकेश सिंह चौहान
चौहान कृषि सेवा केंद्र
पंधाना जि. खण्डवा

मैं **सोना-उगले मिट्टी** पत्रिका का बहुत पुराना सदस्य हूँ। मुझे बहुत अच्छी लगती। मेरा पोल्ट्री से संबंधित व्यवसाय व फार्म है, इसमें कुकुट पालन से संबंधित कई जानकारी आती है।

खलिल भाई
इंदौर

सोना-उगले मिट्टी का में बहुत पुराना सदस्य हूँ। इसमें मुझे भंडारण (कोल्ड स्ओरेज एवं वेयर हाउस) संबधित लेख मिलते हैं जो मेरे व्यापार में सहायक सिद्ध होते है। कृपया मुझे इसका अंक नियमित भेजने की कृपा करें

कपिल कालरा
गुरूकृपा कोल्ड स्टोर, इंदौर

क्या आप कृषि भूमि बेचना/खरीदना चाहते हैं

यदि हां! तुरंत हमसे संपर्क करें
सम्पूर्ण भारतवर्ष में मुख्य नगरों के निकट कॉलोनी/टाउनशिप डेवलप करने के हेतु बड़ी/छोटी कृषि भूमि की आवश्यकता है.

इसके अतिरिक्त
खरीदना/बेचना/किराए से...
बंगले/प्लाट/फ्लेट/ऑफिस
फेक्ट्री शेड/कृषि भूमि हेतु
संपर्क करें

घरोंदा
GHARONDA
CONSTRUCTION & ESTATE AGENTS

:: अन्य विशेषताएँ ::
- भवन निर्माण
- भवन सज्जा
- भवन मरम्मत
- इलेक्ट्रिक/प्लम्बर कार्य
- पूंजी निवेश
- शॉपिंग माल बुकिंग

ई.ए.–188, स्कीम नं. 94, रिंग रोड़,
भारत पेट्रोल पंप के सामने, इन्दौर–452010 (म.प्र.)
सम्पादक : देवराज चौधरी मो. 9826055852, 7224943188
Email : devrajchaudhary@rediffmail.com
हम आपके सपनों का आशियाना दिलाते है...

प्रतिनिधियों की आवश्यकता है

कृषि आधारित 'सोना-उगले मिट्टी' मासिक पत्रिका
एवं पाक्षिक समाचार पत्र धरती उगले सोना
को समस्त जिलों एवं तहसीलों हेतु
उत्साही, कर्मठ, ईमानदार एवं लगनशील
प्रतिनिधियों की आवश्यकता है. (पुरूष/महिला)
ग्रामीण परिवेश में रूचि लेने वालों का स्वागत है.
कृपया बायोडाटा भेजें अथवा स्वयं सम्पर्क करें:

प्रधान सम्पादक/मैनेजर
सोना-उगले मिट्टी/धरती उगले सोना
ई.ए.–188, स्कीम नं. 94, रिंग रोड़,
भारत पेट्रोल पंप के सामने, इन्दौर–452010 (म.प्र.)
सम्पादक : देवराज चौधरी मो. 9826055852, 7224943188
E-mail: devrajchaudhary@rediffmail.com
sonauglemitti25@gmail.com
website : www.sonauglemitti.com

गेहूँ में कीट तथा बीमारी प्रबन्धन

अनिल कुमार सिंह, प्रकाश टी.एल., कुलदीप सिंह सोलंकी एवं जेस्मि विजयन, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, इन्दौर

मध्य भारत में गेहूँ की खेती में यदि नवीन तथा संस्तुत प्रजाति का बीज इस्तेमाल किया जाता है तो प्रायः कोई कीट या बीमारी फसल में नहीं लगती है। कीट एवं बीमारी की समस्या सामान्यतः उन्ही क्षेत्रों में आती है जहाँ पर या तो पुरानी प्रजाति बोई जा रही है या पूर्व में उगाई गई गेहूँ की फसल में बीमारी हो, या फिर बीमारियों के लिए संवेदनशील खेत में नवीन प्रजाति की बुवाई की जा रही हो। कुछ बातों को ध्यान में रखा जाये तो गेहूँ की फसल को कीट एवं बीमारियों से मुक्त रखा जा सकता है। बीज चुनाव करते समय उचित रोगरोधी व नवीन प्रजाति का ही चुनाव करें। मध्य भारत में गेहूँ की फसल में लगने वाले प्रमुख कीट एवं बीमारियाँ तथा उनकी रोकथाम के उपाय निम्न उपायहैं ।

प्रमुख कीट एवं रोकथाम के उपाय :–

दीमक :– यह पौधे को सभी अवस्थाओं पर हानि पहुँचाती है। दीमक जमीन में सुरंग बनाकर रहती है तथा पौधों की जड़ों को खाती है, जिससे पौधे सूख जाते हैं।

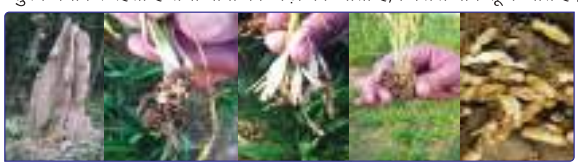

रोकथाम के उपाय :– इसकी रोकथाम के लिये बीज को क्लोरोपाईरीफॉस की 0.9 ग्राम सक्रिय तत्व या थाईमेथोकझाम 70 डब्ल्यू. पी. (क्रुसेर 70 डब्ल्यू. पी.) 0.7 ग्राम सक्रिय तत्व या फीपरोनील (रेजेन्ट 5 एफ.एस.) 0.3 ग्राम सक्रिय तत्व प्रति किलोग्राम द्वारा बीज उपचारित करें। खड़ी फसल में क्लोरोपाईरीफॉस की 3 लीटर मात्रा प्रति हैक्टर की दर से 50 किलोग्राम बालू या बारीक मिट्टी एवं 2–3 लीटर पानी मिलाकर प्रभावित खेत में प्रयोग करें तथा तुरान्त बाद पानी लगा दें। यदि पिछली फसल में दीमक का प्रकोप हुआ था तो अन्तिम जुताई के समय कोई भी कीटनाशी पाउडर की 20–25 कि. मात्रा/हेक्टेयर की दर से बुरकाव करें।

तना बेधक (स्टेम बोरर) :– इसका मॉथ पत्तियों पर अण्डे देता है। अण्डों से निकलने वाले कैटरपिलर तने में धुसकर उसे काट देते हैं जिससे बाली सूख जाती है एवं पूरा पौधा हरा बना रहता है।

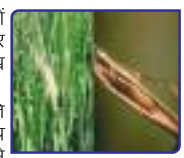

रोकथाम के उपाय :– जहाँ कीट का आक्रमण प्रति वर्ष होता है वहाँ बुवाई करते समय उर्वरकों के साथ कार्बोरिल दानेदार 20 किलो. प्रति हेक्टेयर की दर से कूड़ों में डालना चाहिये। खड़ी फसल में प्रकोप दिखाई देने पर ईमिडाक्लोप्रीड का 40 ग्राम सक्रिय तत्व प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

सैनिक कीट (आर्मी वर्म) :– इसका लार्वा (सुन्डी) भूमि की सतह से पौधे के तने को काटता है। ये प्रायः दिन में छुपे रहते हैं तथा रात होने पर निकलतें हैं। ये पौधे की जड़ें काट देते हैं फलस्वरूप फसल सूखना प्रारम्भ हो जाती है।

रोकथाम के उपाय :– इस कीट के नियंत्रण के लिए फसल में इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एस.जी./0.4 ग्राम/लीटर या क्लोरेंट्रानिलिप्रोएल 18.5 एस.सी,0.4 मिली/लीटर (ट्रेड नेमः कोरा/ रेनएक्सपायर) की दर से या क्विनॉल्फॉस 25 ई.सी., 400 मि.ली. की दर से 80–100 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ का छिड़काव करें। खेत में वर्म के वयस्क पतंगे की निगरानी के लिए फीरोमोन ट्रैप (4–5) प्रति एकड़ लगायें तथाफसल अवशेषों और खरपतवारों कों नष्ट कर दें। इसकी रोकथाम हेतु 2 प्रतिशत मीथाईल पैराथियॉन या 1.5 प्रतिशत क्यूनालफॉस 375 ग्राम सक्रिय तत्व या फोरेट (थीमेट) 10 जी. 10 किलो. प्रति हेक्टेयर सुबह या शाम के समय प्रयोग करें और बाद में सिंचाई कर दें।

चेंपा या माहू (एफिड़) :– इस कीट का शरीर कोमल एवं पीले हल्के रंग का होता है जिसकी पीठ पर गहरे हरे रंग की पट्टी होती है। इस कीट के शिशु एवं प्रौढ़ (वयस्क), पौधों की पत्तियों और बालियों से रस चूसते हैं। माँहू के प्रौढ़, 'हनी डीऊ' नामक एक मीठे पदार्थ को बहार निकालता है जिससे पत्तियों पर काले चिपचिपे धब्बे या निशान पड़ जाते हैं। इसके कारण अन्य सूक्ष्म जीवों जैसे सूटी मोल्ड का विकास पत्तों पर उत्पन्न हो जाता है, जो अक्सर पत्ते पर काले धुंधले पदार्थ के रूप में दिखाई देता है, जिससे प्रकाश संश्लेषण दक्षता कम हो जाती है।

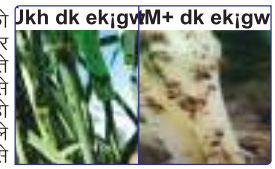

यह कीट जब पौधे की बालियों में दाने आते हैं तो उसके पत्तियों के रस को चूसता है। इससे पौधे पीला तथा दाने हल्के हो जाते हैं।

जड़ का माँहू हल्के हरे रंग का होता है। यह कीट गेहूँ, जौ एवं जई इत्यादि फसलों के, भूमिगत तने एवं जड़ों को खाकर नुकसान पहुँचाता है। जड़ माँहू कॉलोनी के रूप में रहकर जड़ों से रस चूसते हैं। प्रभावित पौधों की पत्तियाँ सूखने लगती हैं एवं ऐसे पौधों को उखाड़कर देखने पर रूट एफिड की कॉलोनी जड़ों में आसानी से देखी जा सकती है।

रोकथाम के उपाय :– कीटों की सतत निगरानी के लिए खेत मे जगह–जगह पीले चिपचिपे ट्रैप (4–5) प्रति एकड़ लगाना चाहिए। माँहू के प्राकृतिक शत्रु कीट परजीवी/परभक्षी जैसे– सर्फिड फ्लाई, लेसविंग, लेडी बर्ड बीटल इत्यादि का संरक्षण करें। जब कीट की संख्या आर्थिक क्षतिस्तर (ई.टी.एल.–10–15 माँहू प्रति शूट) को पार कर जाये तब क्यूनालफॉस 25 प्रतिशत ई.सी. नामक दवा की 400 मि.ली. मात्रा 500–1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें। या इस कीट का प्रकोप शुरू होते ही खेत में इमीडाक्लोप्रीड 200 एस एल (कॉनफीडोर 200 एस एल) का 100 मिली. प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें।

चूहा (रोडेन्ट) :– चूहा खेत में गडढे बनाता है तथा जमीन के उपर मिट्टी के ढेर लगाता है, इसके साथ ही पौधे के टुकड़े करके फसल को बर्बाद कर देता है। इसका प्रकोप फसल की बुवाई के कुछ दिन बाद ही शुरू हो जाता है तथा कटाई मड़ाई तक फसल को नुकसान पहुँचाता रहता है।

गेहूँ का भंडारण :– यदि गेहूँ के दाने को लम्बे समय तक भण्डारण करना हो दानों में नमी 10–12 प्रतिशत से अधिक नही होना चाहिए। भण्डारण के लिए भण्डारण गृह को कीट रहित करने के लिए 1.0 प्रतिशत मैलाथियान 50 ई. सी. का घोल (दो भाग दवाई व 100 भाग पानी) का छिड़काव फर्श, दीवारों और छत पर करें। या फिर भण्डारण के समय कमरे या कोठियों में एल्युमीनियम फॉस्फाईड, (सेल्फॉस / क्विकफॉस / फॉस्फ्यूम इत्यादि) की गोलियों को 1000 घन फुट (28 घन मीटर) की दर से एल्युमीनियम फॉस्फाईड की 3 ग्राम वाली 2–3 टिकिया प्रति 10 कुण्टल की दर से प्रयोग कर सकते हैं। इन गोलियों के इस्तेमाल करते ही तुरन्त कमरे या कोठी को मिट्टी तथा भूसे को मिलाकर लिपाई करके हवा–अवरुद्ध कर दें।

रोग एवं व्याधि प्रबंधन :–

बीज शोधन :– यदि बीज प्रमाणित न हो तो उसका शोधन आवश्यक है। कैप्टान 2.0 ग्राम या थीरम 2.5 ग्राम प्रति किग्रा बीज की दर से अच्छे जमाव एवं बीज जनित रोगों से बचाव के लिए बीज शोधन करें।

गेरूआ या रतुआ :– मध्य भारत में गेहूँ में भूरी और काली गेरूई मुख्यतः आते हैं जो अलग अलग फफूँद द्वारा फैलता है।

भूरागेरूआ :– यह बीमारी पक्सीनिया ट्रिटिसीना द्वारा फैलती है तथा इसे पत्ती के गेरूआ के नाम से जाना जाता है। इस रोग में पत्तियों में धब्बे बनते है जिनका रंग भूरा या नारंगी होता है। ये धब्बे बाद में काले हो जाते हैं और बिखरी हुई अवस्था में रहते हैं। रोग के अधिक प्रभाव के कारण ये धब्बे तने पर भी बन जाते है। यह रोग सामान्यतः जनवरी में दिखाई देता है। इसका प्रकोप लगभग पूरे भारत में होता है।

काला गेरूआ :– यह बीमारी पक्सीनिया ग्रेमिनी ट्रिटिसाई द्वारा फैलती है तथा इसे तना के गेरूआ के नाम से जाना जाता है। इस रोग का प्रकोप पौधे के तने एवं पत्तियों पर होता है, जिसमें काले भूरे रंग के उभरे हुये धब्बे बन जाते हैं। जो रोग के अधिक प्रकोप में पौधे के अन्य भागों जैसे बाली पर भी देखे जा सकते है। यह बीमारी भी लगभग पूरे देश में देखी जा सकती है।

गेरूआ रोकथाम के उपाय :– गेरूआ रोग से प्रतिरोधी नई प्राजातियों की खेती करें। शरबती–चन्दौसी गेंहूँ के साथ मालवी गेहूँ की खेती करने से गेरुआ रोग की सम्भावना कम हो जाती है। सामान्यतः चन्दौसी किस्में भूरा गेरूआ तथा मालवी गेहूँ में काला गेरूआ आता है। गेरूआ रोग से जल्दी ग्रस्त होने वाली पुरानी जातियाँ की खेती न करें तथा विश्वसनीय स्थानों से ही शुद्ध बीज का चयन करें। अधिक प्राकोप होने पर प्रोपीकोनाजोल (0.1 प्रतिशत) 1 एम.एल. / ली., या टेबुकोनेजाल (0.1 प्रतिशत) 1 एम.एल. / ली दवा का छिड़काव करें।

कंडवा रोग (लूज स्मट) :– यह बीज जनित फफूँदीजनित रोग है। इस रोग में बालियों में बीज के स्थान पर काला चूर्ण बन जाता है। यह पुरानी प्रजातियों में भारत के सभी हिस्सों में देखा जा सकता है।

रोकथाम के उपाय :– यह रोग हवा से फैलता है, प्रभावित पौधों को उखाड़कर सावधानीपूर्वक थैलियों में बंद कर मिट्टी में दबाना चाहिए अथवा जला देना चाहिए। स्वस्थ एवं प्रमाणित बीज का उपयोग करें तथा रोग रोधी किस्मों की ही बुवाई करें। इसके लिए बीज को ट्राइकोडरमा विरीडी 4 ग्रा. / कि. बीज या कार्बाक्सिन (विटावैक्स 75 डब्ल्यू. पी.) 1.25 ग्रा / कि. बीज या टेबुकोनेजाल (रैक्सिल 2 डी. एस.) 1.0 ग्रा. / कि. बीज के हिसाब से बीज को उपचारित करके ही उपयोग करें।

ध्वज कन्ड (फ्लैग स्मट) :– इससें पत्तियों पर भूरी काली व चौड़ी फूली हुई रचनायें दिखाई देती है। बाद में इनमें काला चूर्ण निकलता है। जिसमें फफूँद के बीजाणु भूसे और अनाज द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं तथा ये मिट्टी में भी काफी दिनों तक जीवित रह सकते हैं।

रोकथाम के उपाय :– रोकथाम हेतु फसल–चक्र अपनायें तथा प्रामाणित बीज का ही प्रयोग करना चाहिए। बीजोपचार कंडवा रोग (लूज स्मट) की तरह ही करें।

करनाल बंटः– इस रोग में संक्रमित दानें का आंतरिक भाग पूर्ण अथवा आंशिक रूप से काले चूर्णिल बीजाणु पुन्जो में परिवर्तित हो जाता है। संक्रमित बीजाणु पुन्जों से सड़ी मछली जैसी दुर्गन्ध आती है।

रोकथाम के उपायः– करनाल बंट से प्रभावित होने वाले क्षेत्रों में रोग से प्रतिरोधी नई प्राजातियों की खेती करें। करनाल बंट के प्रबंधन हेतु प्रोपीकोनाजोल (टिल्ट 25 ईसी.) 0.1 प्रतिशत का छिड़काव बाली निकलते समय करना चाहिए। इसके अतिरिक्त ट्राइकोडरमा विरिडी के दो छिड़काव बूट (फुटाव) एवं बाली निकलने वाली अवस्था पर करने नियंत्रण संभव है।

दाने का काला धब्बा रोग (ब्लैक पोइन्ट) :– इस रोग में दाने के भ्रूण के ऊपर काला धब्बा बन जाता है। जिससे दाने की गुणवत्ता और चमक कम हो जाती है। यह रोग वर्षा के कारण बाली में पानी भर जाने, अधिक आर्द्रता, कोहरा या फसल पकने के बाद अतिरिक्त सिंचाई करने के कारण होता है।

रोकथाम के उपाय :– इसके बचाव के लिये फसल पकने के समय सिंचाई न करें।

चूर्णिल आसिता (पाउड्री मिल्डयू) :– इसके लक्षण पत्तियों, बालियों व स्पाईकों पर सफेद चूर्ण के रूप में दिखई देते है। बाद में पत्तियों का रंग पीला व कत्थई होकर पत्ती सूख जाती हैं।

रोकथाम के उपाय :– रोग से बचने के लिए रोगरोधी किस्मों का प्रामाणित बीज प्रयोग करना चाहिए। नियंत्रण हेतू प्रोपीकोनाजोल (टिल्ट 25 ई. सी. 0.1 प्रतिशत) आवश्यकतानुसार 1–2 छिड़काव रोग की प्रारंभिक अवस्था में करना चाहिए।

झुलसा रोग (फोलियर ब्लाईट) :– यह बीज जनित फफूँदी रोग है। इसके आक्रमण से पत्तियों पर पीले भूरे रंग के छोटे छोटे अण्डाकार धब्बे बनते है। यह नम और गर्म वातावरण में जब पौधे एक डेढ़ माह के होते है, अधिक लगता है।

रोकथाम के उपाय :– रोग से बचने के लिए रोगरोधी किस्मों का प्रामाणित बीज प्रयोग करना चाहिए। नियंत्रण हेतू प्रोपीकोनाजोल (टिल्ट 25 ई. सी. 0.1 प्रतिशत) आवश्यकतानुसार 1–2 छिड़काव रोग की प्रारंभिक अवस्था में करना चाहिए। फसल के अंकुरण से लेकर कटाई तक फसल की पूरी तरह निगरानी रखें तथा कोई भी कीट या बीमारी दिखाई दे तो तुरन्त उसका उपचार वैज्ञानिक सलाह लेकर करें।

गेहूँ में कीट तथा बीमारी प्रबन्धन के लिए क्या करें :– • गर्मी के मौसम में खेतों की गहरी जुताई करें। • फसलों की प्रतिरोधी किस्मोंजैसे बीटी कपास आदि का चयन करें एवं फसल चक्र, अन्तः फसल, ट्रैप क्राप अपनाकर कीट नियंत्रण करें। • लाइट ट्रेप व चिपकने वाली ट्रैप का प्रयोग करें। • जैविक नियंत्रण के लिए परजीवी एवं कीट भक्षी जीवों (मित्र कीट) का उपयोग करें। • कीट नियंत्रण के लिए फेरोमोन ट्रेप, न्यूक्लियर पॉलीहाइड्रेसिस विषाणु (एन.पी.वी.) स्यूडोमोनास और ट्रइकोग्रामा कार्ड का प्रयोग करें। • जैविक व नीम आधारित कीटनाशकों को प्रोत्साहित करें। • कीट–व्याधि का प्रकोप आर्थिक क्षति स्थर से उपर होने पर ही रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग विशेषज्ञों सिफारिश के अनुसार ही करें। • मित्र कीट से कर लो यारी, खिल जायेगी क्यारी–क्यारी।

चने की फसल में लगने वाले प्रमुख रोग और उनकी रोकथाम

चने की फसल को नुकसान पहुँचाने वाले प्रमुख रोग उखेड़ा, रतुआ, एस्कोकाइटा ब्लाईट, तना गलन, सूखा जड़ गलन, आद्र जड़ गलन, ग्रे मोल्ड, अल्टरनेरिया ब्लाईट, एन्थ्रेक्नोज, स्टेमफाइलियम पत्ता धब्बा रोग, फोमा पत्ता ब्लाईट व स्टंट रोग हैं। इस लेख में इन सभी रोगों के नैदानिक लक्षण व नियंत्रण का वर्णन किया गया है। चना सबसे अधिक खेती की जाने वाली दाल की फसलों में तीसरे स्थान पर है। यह एक वार्षिक फसल है और प्रोटीन का समृद्ध स्त्रोत है। इसका वैज्ञानिक नाम सिसर एरीटिनम है। भारत चने के उत्पादन में प्रथम स्थान पर है तथा कुल उत्पादन का 65 प्रतिशत (9 मिलियन टन) भारत में उत्पादित किया जाता है। चने का सेवन करने से दिल, कैंसर व मधुमेह का जोखिम कम हो जाता है। इस फसल को बहुत से रोग प्रभावित करते हैं जिससे उत्पाद की मात्रा व गुणवत्ता भी घट जाती है। रोगों का उचित प्रबधंन निम्न प्रकार करें।

1. उखेड़ा रोगाणु : फ्यूजेरियम ऑक्सीस्पोरम नैदानिक लक्षण : उखेड़ा रोग फफूंद के कारण होता है जोकि मृदा तथा बीज जनित है। आमतौर पर यह रोग अंकुरित पौधों व फूल खिलने की अवस्था में पौधों को प्रभावित करता है। बिजाई के 3 हफ्तों बाद इसके लक्षण अंकुरित पौधों पर देखे जा सकते है। पत्ते पीले पड़ जाते है और सूख जाते हैं। पौधों के मुरझाने के साथ–साथ पत्ते भी गिर जाते हैं। परिपक्व पौधों में पहले ऊपर के पत्ते गिर जाते है व जल्दी ही पूरे पौधे के पत्ते गिर जाते हैं। तने व जड़ के हिस्सों में भूरा रंग का भाग देखा जा सकता है जो इस रोग के सक्रंमण को दर्शाता है। संक्रमण के प्रारंभिक चरण में पौधों में बाहरी सड़न, सूखापन और बदरंग जड़ों के लक्षण नही दिखाई देते। अंदर के हिस्से में भूरा व काला रंग का हिस्सा जब पौधे को चीर कर देखते हैं तो दिखाई पड़ता है। **रोग प्रबधंन :** रोगप्रतिरोधककिस्में जैसे– एच.सी. 1, एच.सी. 3, एच.सी. 5, एच.के. 1, एच.के. 2, सी.214, उदय, अवरोधी, बी.जी. 244, पूसा– 362, जे जी– 315, फूले जी– 5, डब्ल्यू आर – 315, आदि उगायें। बीजोपचार के लिए कार्बेन्डाजिम या थीरम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज या कार्बेंडाजिम 1 ग्राम + थीरम 1 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से प्रयोग करें। 4 ग्राम ट्राइकोडर्मा विरिडी प्रति किलोग्राम या स्यूडोमोनास फलोरेसेंस 10 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोपचार करें। बीजोपचार के लिए 4 ग्राम ट्राइकोडर्मा विरिडी + विटावैक्स 1 ग्राम का 5 मिली लीटर पानी में लेप बनाकर प्रति किलोगाम बीज की दर से प्रयोग करें। खेत में अधिक मात्रा में हरी व जैविक खाद डालें। जिन खेतों में उखेडा की ज्यादा समस्या है वहां चने की बिजाई 3 से 4 साल तक बंद कर देनी चाहिए। चने की गहरी बुवाई (8 से 10 सेंटीमीटर गहरी) खेत में उखेड़ा की समस्या को कम कर देती है।

2. रतुआ रोग रोगाणु : यूरोमाइसेस सिसेरी एरीन्ति नैदानिक लक्षणः रतुआ रोग के प्राथमिक लक्षण चने के पत्तों पर छोटे, गोलाकार, भूरे व चूर्णित धब्बों के रूप में देखें जा सकते है जो कि बाद में मिल जाते है। कुछ मामलों में बड़े धब्बों के चारों ओर छोटे धब्बों के घेरे देखे जाते है, जोकि पत्तों की दोनो सतहों पर मिल सकते हैं, लेकिन ज्यादातर पत्तियों के निचले हिस्से पर मिलते हैं। रतुआ रोग के धब्बे (पस्तुलस) पत्तों के अलावा तने व संक्रमित पौधे की फलियों पर भी मिलते है। बाद में ये गहरे रंग के टेलियोस्पोर्स के रूप में देखे जा सकते हैं। **रोग प्रबधंन :** सिफारिश की हुई प्रतिरोधी किस्में जैसे कि गौरव उगायें। खेत में यह रोग दिखाई देने पर कार्बेंडाजिम (1 प्रतिशत) या प्रोपिकानाजोल (0.1 प्रतिशत) का छिड़काव कर देना चाहिए। खेत को खरपतवार मुक्त रखें।

3. एस्कोकाइटा ब्लाईटरोगाणु : एस्कोकाइटा राबिए नैदानिक लक्षण : यह रोग बीज जनित फफूंद की वजह से होता है। आमतौर पर यह रोग फूल खिलने व फली बनने की अवस्था में पौधों पर दिखाई देते है। इस रोग के विशिष्ट लक्षण गोलाकार व लम्बे धब्बों के रूप में देखे जा सकते है। ये अनियमित धब्बे भूरे रंग के व लाल रंग के किनारों से घिरे होते हैं। इस तरह के विशिष्ट लक्षणों में तने व फलियों पर पाइक्नीडिया भी देखे जा सकते है। अधिक संक्रमण होने की अवस्था में पौधे का प्रभावित हिस्सा मर जाता है और ये धब्बे तने को घेर लेते है। **रोग प्रबधंन :** रोग प्रतिरोधक किस्में जैसे कि सी–235, एच सी–3 या हिमाचल चना–1 उगायें। केवल प्रमाणित बीज का ही प्रयोग करें। बीजोपचार के लिए थीरम 2 ग्राम या कार्बेंडाजिम 2 ग्राम या थीरम और कार्बेंडाजिम (1:1 अनुपात में) 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से प्रयोग करें। कार्बंडाजिम (1 प्रतिशत) या क्लोरोथेलोनिल (0.15 प्रतिशत) का छिड़काव करें। और यदि आवश्यकता हो तो 15 दिन के अंतराल पर पुनः छिड़काव करें। बीजोपचार के लिए बाविस्टिन 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से प्रयोग करें। संक्रमित पौधों व उनके अवशेषों को नष्ट करे दें। 3 से 4 साल का चने की खेती के लिए फसल चक्र अपनायें।

सरसों की फसल में लगने वाले मुख्य कीट एवं उनका नियंत्रण

देश में रबी फसलों में सरसों की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है, सोयाबीन, मूंगफली के बाद सरसों की खेती देश भर में सबसे ज्यादा होती है द्य खाद्य तेल के रूप में सरसों की मांग अधिक रहने के कारण पिछले कुछ वर्षों से किसानों को सरसों की खेती से अच्छा मुनाफा हो रहा है द्य सरसों का अच्छा उत्पादन कई कारणों पर निर्भर करता है जैसे मिट्टी, जलवायु, बीज, रोग तथा कीट द्य कीट एवं रोगों का प्रभाव सीधे सरसों के उत्पादन पर होता है इसलिए किसानों को समय पर इनकी पहचान कर उन पर नियंत्रण पाना आवश्यक है द्य सरसों की फसल में समय–समय पर विभिन्न कीट एवं रोग काफी नुकसान पहुंचाते हैं, जिससे उपज में कमी आती है द्य यदि समय रहते इन रोगों एवं कीटों का नियंत्रण कर लिया जाए तो सरसों के उत्पादन में बढ़ोतरी की जा सकती है द्य चेंपा या माहू, आरामक्खी, चितकबरा कीट, मटर का पर्ण सुरंगक कीट आदि सरसों के मुख्य कीट हैं

सरसों का माहूं (चैपा/मोयला/एफिडा) कीट : सरसों का माहू छोटा, लंबा व कोमल शरीर वाला कीट है द्य प्रौढ़ माहूं दो अवस्थाओं में पाया जाता है: पहला पंखरहित और दूसरा पंखसहित द्य पंखरहित प्रौढ़ 2 मि.मी. लंबे, गोलाकार व हरे रंग के या हल्के हरे पीले रंग के होते है द्य पंखसहित प्रौढ़ पीले उदर वाले व पंख पारदर्शी होते हैं द्य शिशु पंखरहित अवस्था के समान होते हैं, परन्तु आकार में छोटे होते हैं द्य दो नलीनुमा संरचनाएं (कोर्निक्ल्स) उदर के अंतिम भाग में उपस्थित होती है द्य हानि के लक्षण ये कीट प्रायः दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में प्रकट होते हैं और मार्च के अंत तक सक्रिय रहते हैं और मार्च के अंत तक विभिन्न भागों जैसे दृ पुष्पक्रम, पत्ती, तना, टहनी व फलियों से रस चूसकर नुक्सान पहुंचाते हैं द्य ये कीट समूहों में रहते हैं व तीव्रता से वंशवृद्धि करते हैं द्य माहूं पहले फसल की वानस्पतिक कलिका पर प्रकट होते हैं व धीरेदृधीरे पुरे पौधे को ढक लेते हैं द्य ये कीट मधुस्राव निकालते हैं और पौधों पर काले कवक का आक्रमण हो जाता है द्य तना व पत्तियाँ काली हो जाती हैं, जिससे प्रकाश संश्लेषण में बाधा आती है द्य इस प्रकाश यह कीट उपज व तेल की मात्रा में कमी करता है द्य बादालयुक्त व ठंडा मौसम वंशवृद्धि के लिए अत्यंत उपयुक्त होता है द्य समन्वित कीट प्रबंधन जहाँ तक संभव हो सरसों की बुआई 15 अक्टूबर तक कर देनी चाहिए, इससे फसल माहूँ के प्रकोप से बच जाती है द्य उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा का ही प्रयोग करना चाहिए द्य माहूँ के प्राथमिक आक्रमण पर 10 दिनों के अन्तराल पर 2–3 बार माहूँ ग्रसित टहनियों को तोड़कर नष्ट कर देने से माहूँ की वंशवृद्धि को कम किया जा सकता है द्य फसल में कम से कम 10 प्रतिशत पौधे माहूँ से ग्रसित हों तथा प्रत्येक पौधे पर 26 से 28 माहूँ हों, तभी छिड़काव करना चाहिए द्य ऑक्सी–डेमेटान मिथाइल (मेटासिस्टाक्स) 25 पायस सांद्रण अथवा डाइमिथोएट (रोगोर) 30 पायस सांद्रण अथवा मैलाथियान 50 पायस सांद्रण की एक लीटर मात्र को 600–800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें अथवा इमिडाक्लोप्रिड 1708 एस.एल. को 5 मि.ली. ६ 15 लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें द्य यदि दोबारा से कीट का प्रकोप हो तब 15 दिनों के अन्तराल से पुनः छिड़काव करें । सरसों की आरा मक्खी इस कीट की प्रौढ़ मक्खी 8द्11 मि.मी. लंबी, पीलेदृनारंगी रंग की ततैया की तरह होती है द्य इसके पंख धूसर रंग के व काली शिरायें लिए हुए होते हैं द्य इसका अंडरोपक दांतेदार व आरिनुमा होता है इसलिए इसे आरा मक्खी कहते हैं। सर व टाँगे काली होती है द्य इसकी सुंडी गहरे हरे रंग की होती है, जिसकी पीठ पर पांच लंबवत धारियां होती है द्य हानि के लक्षण यह कीट मुख्य रूप से फसल की पौधावस्था (अक्टूबर–नवंबर) में ही नुक्सान पहुंचाता है द्य सूंडी, पत्तियों को काटकर उनमें अनियमित आकार के छेद कर देती हैं द्य अधिक प्रकोप की अवस्था में पौधे को कंकालित कर देती हैं द्य फसल में आक्रमण पौधावस्था में अधिक होता है और 3–4 सप्ताह पुरानी फसल में ज्यादा नुक्सान होता है द्य मध्य जलवायु और कम आर्द्रता इसकी वंशवृद्धि के लिए अनुकूल है द्य समन्वित कीट प्रबंधन स्वच्छ कृषि क्रियाएं (खरपतवार नियंत्रण, वैकल्पिक पोषक पौधे व फसल अवशेषों आदि को नष्ट करना) अपनाना चाहिए द्य गर्मियों के दिनों (मई–जून) में खेत की मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई करनी चाहिए द्य फसल लगभग एक माह की हो जाए तब सिंचाई करनी चाहिए द्य इससे इस कीट की सूंडी पानी में डूबकर मर जाती है द्य इस कीट के प्रकोप की अवस्था में मैलाथियान 50 पायस सांद्रण की एक लीटर मात्रा को 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिडकाव करना चाहिए।

अफीम में लगने वाले प्रमुख रोग एवं कीट

1. मृदुरोमिल आसिता (कोडिया एवं काली मस्सी रोग)

अफीम उगाने वाले सभी क्षेत्रों में दौनी मिल्ड्यू (काली मस्सी) से बहुत हानि होती हैं। रोग का प्रकोप पौध अवस्था से लेकर फल आने तक रहता हैं। मस्सी से पौधे की पत्तियों पर भूरे या काळा धब्बे बन जाते हैं। इस रोग से प्रभावित फसल की बढ़वार निचे की पत्तियों पर फैल जाते हैं। इस रोग से प्रभावित फसल की बढ़वार कम हो जाती हैं। कोडिया रोग की रोकथाम के लिए बीजोपचार हेतु फफूंदनाशी दवा मेटालेक्सिल 35 एस.डी. (एप्रोन) 8 ग्राम प्रति किलो बीज दर से उपचारित करके ही बुवाई करें। इसके बाद फसल में रोग प्रकट होने पर फफूंदनाशी दवा मेंकोजेब 64ः मेटालेक्सिल 8ः (रिडोमिल एम जेड–72 डब्ल्यू.पी.) घुलनशील चूर्ण का (0.2ः) अर्थात 2 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में पहला छिड़काव रोग के लक्षण प्रकट होने पर दूसरा व तीसरा छिड़काव 15 दिन के अंतराल से दोहरावें।

2. छाछिया रोग

इस रोग को चूर्णिल आसिता या पाउडरी मिल्ड्यू भी कहते हैं। यह रोग इरिसीफी पोलिगोनाइ नामक फफूंद से होता हैं। रोग फफूंद के कोनिडिया से होता हैं। इस रोग के लक्षण पौधे के तना के निचले हिस्से पर दिखाई देते हैं। बाद में यह रोग धीरे–धीरे पत्तियों पर सफेदी के रूप में दिखाई देता हैं। बाद में सफेद धब्बे बन जाते हैं। धीरे–धीरे वह काले पड़ जाते हैं। इस रोग का प्रकोप तीव्र होने पर कभी–कभी सफेद चूर्ण डोडों पर भी दिखाई पड़ता हैं तथा पूरा पौधा सफेद चूर्ण से ढक जाता हैं। इसकी रोकथाम के लिए फसल बुवाई के 70, 85 एवं 105 दिनों पर टेब्यूकोनाजोल 1.5 मि.ली.ध्लीटर प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

3. विषाणु जनित (एफिड्स एवं सफेद मक्खी द्वारा) पीली पत्ती रोग (मोजेक) का प्रबंधन

रोग ग्रसित पौधों को उखाड़कर जलावें अथवा गहरे गड्ढे में दबाएं।

कीटनाशक दवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस. एल. का 0.3 मि.ली.ध्लीटर पानी या डाइमिथिएट 30 ई.सी. 2 मि.ली.ध्लीटर पानी में घोलकर पहला छिड़काव करें एवं दूसरा व तीसरा छिड़काव 10–12 दिन के अन्तराल से पुनः दोहरावें।

4. भूमिगत कीट दीमक एवं कटुआ इल्ली

इसके अंतर्गत वे कीट आते है जो भूमि में रहकर अफीम के पौधों की जड़ों को नुकसान पहुँचाते है। रोकथाम के लिए क्लोरोपायरीफास का छिड़काव करें। नीम की खल/500 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में डाले।

5. जड़ गलन रोग का समन्वित प्रबंधन

फसल बुवाई से पहले नीम की खली की खाद 500 किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से अथवा 80 किलो 20 आरी क्षेत्र में मिलावें। जैव फफूंदनाशी ट्राइकोड्रामा चूर्ण से 10 ग्राम प्रति किलो बीज के दर से बीज उपचार करें। अफीम की फसल के 35 एवं 60 दिनों के उपरान्त फफूँदनाशी दवाओं जैसे दृ हेक्जाकोनाजोल 5 ई. सी. (0.1ः) 1 मि.ली. प्रति लीटर या मेंकोजेब 75ः चूर्ण (0.3ः) 4 ग्रामध्लीटर की दर से पानी का घोल बनाकर फसल की जड़ों में ड्रेचिंग करें।

6. डोडे की लट

क्यूनालफॉस (25 इ.सी.) 1.5 मी.ली. से 2.0 मि.ली. एक लीटर पानी में मिलावें। (0.04–0.05ः) बिस आरी क्षेत्र के लिए 200–250 मि.ली. क्यूनालफॉस 125 लीटर पानी में मिलावें अथवा मोनोक्रोटोफॉस 1 मि. लीध्लीटर पानी में मिलावें। जैव फफूंदनाशक 10 किलोग्राम ट्राइकोडर्मा पाउडर 200 की.ग्रा. पकी हुई गोबर की खाद में मिलाकर भूमि उपचार करें। बिस आरी के लिए 100–150 मि.ली. मोनोक्रोटोफॉस 100–150 लीटर पानी में मिलावें।

7. पाला

अफीम की फसल को पीला से बहुत ज्यादा नुकसान होता हैं। अतः फसल को निम्न प्रकार बचाया जाये

पला पड़ने की संभावना हो या पाला पड़ गया हो तो तुरंत प्रारम्भ से सिंचाई करें। पाला पड़ने से पूर्व सिंचाई करने से पाले का असर कम होता हैं।

फसल के चारों और धुँआ करने से पाले का असर कम होता हैं।

गंधक का तेजाब का 0.1ः घोल अर्थात 120–150 मि.ली. गंधक का तेजाब 120–50 लीटर पानी में मिलाकर 20 आरी क्षेत्र में छिड़काव करें। उपरोक्त उपचार 15 दिन बाद दोहरा

वर्षो से विश्वसनीय
अफीम फसल के लिये वरदान
माइक्रॉन स्पेशल एवं डी-स्प्राउट एम-6
अन्य उत्पाद
माइक्रॉन® स्पेशल
ए फोलियर फर्टिलाइजर
6 छिड़काव माइक्रॉन स्पेशल
माइक्रॉन स्पेशल की विशेषताएँ:
माइक्रोफिक्स
एन्टी फ्रुट ड्रॉप कम्पाउन्ड
माइक्रोझाइम
द्रवरूप जैविक अर्क सेंद्रिय खाद
माइक्रोसल्फ-100
सुपर सल्फर साल्यूशन
माइक्रोन गोल्ड
बायो आर्गेनिक फोलियर स्प्रे
माइक्रॉन जी-100
सम्पूर्ण पोषक तत्वों का दानेदार मिश्रण
माइक्रो जिंक
जस्त की कमी को पूरा करने हेतु
सेन केप
(जल नियामक)
ट्रेसान®
अवशुत पौध उत्प्रेरक
• प्रति हेक्टयर 16 किलो ज्यादा अफीम।
• आखरी चीरे तक फसल को हरी रखता है।
• सफेद व काली मस्सी से सुरक्षा।
• दानों की ज्यादा पैदावार।
• रस को गाढा बनाता है व झरने से बचाता है।
• अफीम की डिग्री बढ़ाता है।
• दाने की उपज बढ़ाता है, 15 किलो प्रति दस आरी।
डी-स्प्राउट® एम-
अफीम फसल में दूध बढ़ाने वाला एकमात्र हारमोन
2 छिड़काव डि-स्प्राउट
डी-स्प्राउट एम-6 की विशेषताएँ:
• दूध ले जाने वाली नालिकाओं को अधिक समय खुला रखता है
• जड़, पत्तो व तने से सारा दूध खींचकर डोडे तक प हुँचाता है।
:: निर्माता ::
माइक्रो केमिकल्स (इण्डिया)
स्कीम नं.1, रोड नं.3, नई आबादी, मन्दसौर (म.प्र.)
फोन : 07422-405260 मो. 94251-05100

सूरजमुखी के रोग, उनका निदान और नियंत्रण

सूरजमुखी की उत्पत्ति अमेरिका में होती है। उन्हें पहले मेक्सिको और दक्षिणी संयुक्त राज्य अमेरिका में पालतू बनाया गया था। मेक्सिको में घरेलू सूरजमुखी के बीज पाए गए हैं, जो 2100 ईसा पूर्व के हैं। मूल अमेरिकी लोगों ने मेक्सिको से दक्षिणी कनाडा में एक फसल के रूप में सूरजमुखी उगाए 16 वीं शताब्दी में खोजकर्ताओं द्वारा पहली फसल नस्लों को अमेरिका से यूरोप लाया गया था। तीन दक्षिण अमेरिकी प्रजातियों को छोड़कर, हेलियनथस की प्रजातियां उत्तरी अमेरिका और मध्य अमेरिका के मूल निवासी हैं। सामान्य नाम "सूरजमुखी" और "सामान्य सूरजमुखी" आम तौर पर लोकप्रिय वार्षिक प्रजाति हेलियनथस एनुस को संदर्भित करते हैं, जिनके गोल फूल सिर लिग्यूल के साथ सूर्य की तरह दिखते हैं। यह और अन्य प्रजातियां, विशेष रूप से जेरूसलम आटिचोक, समशीतोष्ण क्षेत्रों और कुछ उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में मनुष्यों, मवेशियों और कुक्कुट के लिए खाद्य फसलों के रूप में और सजावटी पौधों के रूप में खेती की जाती हैं। प्रजाति भ्ण् ंददनने आमतौर पर गर्मियों के दौरान और शुरुआती गिरावट में बढ़ती है, जिसमें चरम वृद्धि का मौसम मध्य गर्मियों में होता है। आम सूरजमुखी के बीज और अंकुरित कई औषधीय उपयोग हैं। खाद्य बीज और अंकुर में पोषक तत्वों और जैविक गतिविधियों की प्रचुरता होती है और इसमें कई एंटीऑक्सिडेंट जैसे फेनोलिक एसिड, फ्लेवोनोइड और विटामिन होते हैं। आम सूरजमुखी में कई एंटीऑक्सीडेंट प्रभाव होते हैं जो सेलुलर क्षति के लिए एक सुरक्षात्मक कार्य के रूप में कार्य करते हैं।उनके फाइटोकेमिकल घटक, जिनमें फेनोलिक एसिड, फ्लेवोनोइड्स और टोकोफेरोल (विटामिन ई) शामिल हैं, के कई संभावित लाभ हैं। सूरजमुखी के बीज और अंकुर में भी विटामिन ए, बी और सी की उच्च सांद्रता होती है और नियासिन में उच्च होते हैं। इनमें कैल्शियम, पोटेशियम और आयरन जैसे कई खनिज भी होते हैं। सूरजमुखी के बीज के अर्क में एंटीडायबिटिक प्रभाव होते हैं, जहां उन अर्क के भीतर माध्यमिक मेटाबोलाइट्स ग्लूकोज के स्तर को प्रभावी ढंग से नियंत्रित करने में सक्षम होते हैं। आम सूरजमुखी के बायोएक्टिव पेप्टाइड्स को एंटीहाइपरटेन्सिव प्रभाव के लिए जाना जाता है। सूरजमुखी का तेल भी विरोधी भड़काऊ गतिविधि में मदद करता है, गैस्ट्रिक क्षति को रोकता है और सूक्ष्म और नैदानिक घावों के लिए उपचार प्रक्रिया में एक चिकित्सीय विकल्प है।

1. फुदका (जेसिड) : क्षति–वयस्क और शिशु दोनों पौधे का रस चूसते है। संक्रमक पत्तियां हल्के पीले रंग की हो जाती है। अधिक संक्रमण पर पत्तियां अन्दर की ओर मुड़ जाती है। पत्तियों के किनारे हल्के गुलाबी हो जाते है। **नियंत्रण**–निम्नलिखित कीटनाशकों में कोई भी नियंत्रण के लिए उपयोग करें। डाईमेथोएट 30 ई.सी. 650 मि.लीध्हे की दर से या डाईमेटोन 25 ई.सी. 650 मि.लीध्हे की दर से यह छिड़काव 600 लीटर पानीध्हे के साथ करना चाहिए। अगर प्रकोप बना रहता है तो दूसरा छिड़काव 15 से 20 दिन बाद करे। अधिक मात्रा में नत्रजन का उपयोग न करें। अगर फसल के आसपास खेतों में जेसिड का प्रकोप हो तो उचित उपाय करें। अरहर को अन्तरवर्तीय फसल के रूप में 2:1 के अनुपात में उगाए। **2. चने की इल्ली : क्षति**–यह कीट बहुभोजी है। लार्वा अकुंरित पौधों को जमीन या जमीन के ऊपर से काटता है जिससे अकुंरित पौधे मर जाते है। लार्वा का ऊपर का भाग भूरे रंग का होता है एवं हल्की स्लेटी रंग की धारी होती है। बाजूओं में काली धारियां होती है। बाजू हरे रंग का होता है। **नियंत्रण**– कीटनाशकों का उपयोग आर्थिक देहली स्तर को पार करने पर ही करना चाहिए। क्लोरोफायरीफॉस 20 ई.सी. 3.75 लीटरध्हे को मिट्टी में छिड़काव करे। गर्मी में गहरी जुताई करें। खेत और इसके आसपास मेढ़ों आदि में सफाई रखें। खरपतवार नष्ट करें। रिज और फेरो विधि से बोनी करें। कीट के लार्वा को हाथ से एकत्रित करवाकर नष्ट करें। **3.पक्षियों द्वारा नुकसान : क्षति**– दूध भरते समय से कटाई तक पक्षी फसल को नुकसान पंहुचाते है। **नियंत्रण**–10 ग्राम/लीटर नीम कर्नल के चूर्ण के घोल का अकुंरण पूर्व छिड़काव करें। पौधों की जल्दी रोपाई करें। पक्षियों को भगाने के लिए खेत में बुत बनाये। पटाखे फोड़े। सुरजमुखी की खेती बड़े पैमाने पर करें। पक्षियों को घोंसले को खेत और उसके आसपास नष्ट करें।**4. बिहार की रोएदार इल्ली : क्षति**– कीट ग्रस्त पत्तियों का सूखना इस कीट के आक्रमण का प्रमुख लक्षण है। **नियंत्रण**– यदि कीट की संख्या आर्थिक देहली स्तर से कम हो तो 5 प्रतिशत नीम आधारित कीटनाशकों का छिड़काव करें।

यदि कीट की संख्या आर्थिक देहली स्तर से अधिक हो तो निम्नलिखित में से कोई भी कीटनाशक का छिड़काव करें। अच्छी तरह सड़ी हुई देशी खाद का उपयोग करें। समय पर बोआई और स्वच्छ खेती करें। हानिकारक कीटों के अण्ड समूह इल्लियों को एकत्रित कर नष्ट करें। कीट का प्रकोप रोकने के लिए अरहर के साथ 2:1 के अनुपात में अन्तरवर्तीय फसल उगाए। **5. तम्बाखू इल्ली : क्षति**– यह कीट पत्तियों पर आक्रमण करता है। **नियंत्रण**– निम्नलिखित में से कोई भी कीटनाशक का उपयोग करें। 20 ई.सी. फेनवेलरेट 150 मि.लीध्हे की दर से 25 ई.सी. साइपरमेथरीन 125 मि.लीध्हे की दर से 5. 2. 8 ई.सी. डेल्टामेथरीन 375 मि.लीध्हे की दर से गर्मी में गहरी जुताई करें। अच्छी तरह सड़ी हुई देशी खाद का उपयोग करें। समय पर बोआई और स्वच्छ खेती करें। हानिकारक कीटों के अण्ड समूह इल्लियों को एकत्रित कर नष्ट करें। कीट का प्रकोप रोकने के लिए अरहर के साथ 2:1 के अनुपात में अन्तरवर्तीय फसल उगाए। इस तरह से किसान फसल में लगाने वाले कीट को नियंत्रित कर, कीट द्वारा होने वाली आर्थिक हानि से फसलों को, बचा सकते है और, अधिक उपज प्राप्त कर सकते हैं।

लहसुन की फसल में लगने वाले प्रमुख रोग और उनकी रोकथाम

भारत के लगभग सभी भागों में लहसुन की खेती होती है. तो वहीं उत्तर प्रदेश, गुजरात, राजस्थान, तमिलनाडु, मध्य प्रदेश के इंदौर, रतलाम और मंदसौर में बड़े पैमाने पर खेती होती है. भारतीय रसोई में लोग इसका उपयोग मसाले के रूप में करते है. साथ ही इसका उपयोग अचार, चटनी बनाने में भी किया जाता है. यह एक नकदी फसल है. जिसमें विटामिन सी, फास्फोरस समेत कई पौष्टिक तत्त्व पाए जाते हैं. लहसुन औषधीय गुण से भरपूर है. इसमें पाए जाने वाला 'एल्सीसिन' हमारे शरीर के खून में जमे कोलेस्ट्रोल को कम करने की क्षमता रखता है. लहसुन की फसल में कीट रोग का प्रबंधन कैसे करें व कटाई के बाद कैसे भंडारण करें, इसकी जानकारी यहां दी जा रही है. देशभर में कई किसान भाई लहसुन की फसल उगाते है. इसकी अच्छी पैदावार के लिए फसल पर नजर बनाए रखना जरुरी है. जिससे फसल रोग और कीट से बच सके. आज हम अपने इस लेख में लहसुन में होने वाले रोग और कीट के नियंत्रण की जानकारी देने वाले है.

लहसुन की फसल में कीट रोग थ्रिप्स : लहसुन की फसल में थ्रिप्स नाम का कीट लगते है. इस कीट के बच्चे और वयस्क दोनों सैकड़ों की तादाद में फसल को नुकसान पहुंचा सकते है. ये कीट पत्तियों को खरोंच और छेदकर कर उसका सारा रस चूस जाते है. जिस वजह से पत्तियां मुड़ जाती हैं और पौधे सूख कर गिरने लगते है. इन कीटों से लहसुन की गांठें छोटी रह जाती हैं. ये कीट सारी फसल को भी बर्बाद कर सकते है. **रोकथाम :** फसल को इस कीट से बचाने के लिए डाइमिथोएट 30 ईसी, मैलाथियान 50 ईसी या फिर मिथाइल डिमेटान 25 ईसी एक मिलीलीटर प्रति लीटर की दर से छिड़क दें.

झुलसा व अंगमारी : इस रोग में पत्तियों पर सफेद धब्बे पड़ने लगते है. इसके बाद पत्तियों का रंग बैगनी होने लगता है. रोग बढ़ने पर पत्तियां झुलस जाती हैं. जिससे लहसुन के पौधे मर जाते है. जिसका असल फसल की पैदावार पर पड़ता है. **रोकथाम :** इस रोग का समाधान करने के लिए फसल चक्र अपना सकते है. ध्यान रखें कि इसमें लहसुन, प्याज न लगाएं. ◆ पौधों को कम संख्या में लगाए ◆ सिंचाई का उचित प्रबंधन रखें. साथ ही ज्यादा सिंचाई नहीं करें. ◆ बुवाई के लिए स्वस्थ खेत से लहसुन प्राप्त करें. ◆ फसल में रोग के लक्षण दिखाई देने पर मैंकोजेब करीब 0.2 प्रतिशत या फिर रिडोमिल एमजेड करीब 0.2 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें. **ब्लैक मोल्ड :** लहसुन के पकने की अवस्था में ब्लैक मोल्ड आमतौर पर देखा जाता है. इस रोग के लक्षण लहसुन की कलियों के बीच और गांठों पर काले पाउडर के रूप में दिखाई देते है. इससे बाजार में लहसुन की कीमत कम होने लगती है. साथ ही भंडारण ज्यादा समय तक नहीं रख सकते. **बल्ब रोट :** अगर लहसुन की फसल में उचित हवा पानी का प्रबंधन न हो, तो खेत में अधिक पानी के भराव से कंद सड़ने लगते है. इसलिए खेत में पानी और खाद संतुलित मात्रा में देना चाहिए. **रोकथाम :** ◆ लहसुन के भंडारण से पहले कंदों को अच्छी तरह सूखाकर साफ करे. ◆ भंडारण में अच्छी तरह से पके, ठोस और स्वस्थ कंदो को रखें.. ◆ भंडारण की जगह नमी रहित और हवादार होनी चाहिए. ◆ भंडारण करने वाली जगह में कंदों का ढेर नहीं लगाना चाहिए. इसके अलावा कंदों को पत्तियों से गुच्छों में बांध कर रस्सियों पर लटका दें. साथ ही बांस की टोकरियों में भरकर रखें. ◆ समय–समय पर सड़ेगले कंदों को निकालते रहें. ◆ लहसुन की फसल की खुदाई के 3 हफ्ते पहले करीब 3000 पीपीएम मैलिक हाइड्रोजाइड का छिड़काव कर दें. इससे लहसुन के सुरक्षित भंडारण की अवधि बढ़ जाती है.

टमाटर में लगने वाले 3 प्रमुख रोग एवं सरल उपचार

टमाटर की फसल यदि आप लेते हैं तो टमाटर की नर्सरी डालने से लेकर और फल आने तक कोई ना कोई रोग लगता ही रहता है और उसके लिए तरह–तरह के उपाय भी किए जाते हैं। यह उपाय बहुत से भाई रासायनिक तरीके से करते हैं तो बहुत से किसान भाई जैविक तरीके से करते हैं। लेकिन जब तापमान कम होता है या मौसम ठंडा हो जाता है तब वातावरण में आर्द्रता अधिक आ जाती है। इस समय टमाटर में कुछ ऐसे रोग लग जाते हैं, जो हमारी फसल को बिल्कुल बर्बाद कर सकते हैं। फिर चाहे उसको हम गार्डन में कर रहे हो या हम व्यवसायिक तौर पर खेती कर रहे हैं। कहीं ना कहीं हमारी इन रोगों से काफी अधिक नुकसान पहुंचती है। तो दोस्तों आज हम इसी पर जानकारी देने जा रहे हैं और आपको बताने वाले है कि टमाटर में कौन कौन से रोग लगते है और उनका उपचार क्या है ?टमाटर में लगने वाले 3 प्रमुख रोग एवं उनका सरल उपचार किसान भाइयों, आज हम जो बात करने वाले हैं टमाटर में लगने वाले जो ठंड के मौसम में खास तौर पर रोग लगते हैं, उनके बारे में। यह मुख्यतः तीन प्रकार के रोग हमारी फसल ज्यादा प्रभावित करते हैं। ◆ एक टमाटर के पौधे का गलना या मुरझा कर सूख जाना। ◆ दूसरा रोग जो लगता है वह पत्तियों का सिकुड़ना जिसको मोजेक रोग भी कहते है। ◆ तीसरा जो सबसे ज्यादा हमारे टमाटर के पौधे को प्रभावित करता है उसका नाम है झुलसा। ये दो प्रकार का होता है पहला दृ अगेती झुलसा और पिछेती झुलसा। टमाटर में लगने वाले इन तीनों प्रमुख बीमारियों की आप रोकथाम जैविक और रासायनिक तरीके दोनों कैसे करेंगे इसकी पूरी डिटेल बताने वाले हैं। **टमाटर में गलना या मुरझा रोग का उपचार :** सबसे पहला रोग टमाटर के पौधे का गलना या मुरझा करके सूख जाना यह एक बहुत खतरनाक जीवाणु के द्वारा हमारे टमाटर के पौधे में फैलता है और पूरी फसल यानी पूरे पौधे को खराब करके दूसरे पौधे में भी बहुत जल्दी फैल जाता है। इसके साथ दूसरे पौधे पर फैलकर उसको भी काफी अधिक नुकसान पहुंचाता है। यह जीवाणु के द्वारा यह रोग फैलता है और इस रोग के फैलने पर इसके लक्षण आपको स्पष्ट दिखाई पड़ जाएंगे। इस रोग के प्रारंभिक लक्षण में पहले पत्तियां मुरझाना शुरू होते हैं, उसके बाद पत्तियां धीरे–धीरे मुड़ जाते हैं, मुड़ने के बाद पत्तियां पीली पड़ने लगते हैं और नीचे से पत्तियां चालू हो जाती है और धीरे–धीरे पौधा सूख जाता है। इसका बहुत सरल उपाय यही है कि जब भी आप के पौधे में रोग लगा दिखाई पड़े तो इसको आप निकाल कर के बाहर कर दें और कहीं पर गड्ढे में दबा दें या जलाकर दें क्योंकि इसके लिए कोई भी दवा कारगर साबित नहीं हुई है इसलिए यही सबसे अच्छा तरीका है। लेकिन यदि आप लापरवाही करते हैं। अपने फसल से रोग ग्रस्त पौधों को नहीं निकालते हैं तो धीरे–धीरे ये जीवाणु अन्य पौधों को भी नुकसान पहुंचाता है। इसलिए इस रोग को देखते ही आपको सतर्क रहने की आवश्यकता होती है। **टमाटर में पत्तियों का सिकुड़ना या मोजेक रोग का उपचार :** अब दूसरा रोग जो हमने शामिल किया है पत्तियों का सिकुड़ना मोजेक रोग है और यह एक वायरस के द्वारा फैलता है।तो यह एक विषाणु जनित रोग है। इस रोग के लक्षण हमको दिखाई पड़ते हैं, सबसे पहले पत्तियों पर की पत्तियां ऐंठ जाते हैं और पत्तियां ऐंठ जाने पर धीरे–धीरे देखेंगे की पत्तियां छोटी हो जाती हैं और इसमें काफी सारी नीचे से जो शाखा निकले होते हैं वहां से बहुत ढेर सारी शाखाएं निकलती है और फूल तो आते हैं, लेकिन फल नहीं बनते हैं और पौधा एकदम इसकी वृद्धि रोकी जाती है। इसके साथ ही धीरे–धीरे पौधा या सूखने लगता है कमजोर होने लगता है। दूसरे स्वस्थ पौधों को भी नुकसान पहुंचाता है इसलिए इसको आप सबसे अच्छा उपाय है कि इन पौधों को आप बाहर निकाल दें। लेकिन इसके रोकथाम के लिए आप कुछ उपाय भी कर सकते हैं। यदि जैविक तरीके से आप उपाय करना चाहते है तो आप नीम का तेल या विवेरिया का इस्तेमाल कर सकते हैं। इससे पहले आपको ट्राइकोडरमा प्रयोग कर देना से काफी अधिक फायदा मिलता है और जैविक तरीके में इस प्रकार के उपाय कर सकते हैं। इसके साथ आप रासायनिक तरीके से खेती करते तो रासायनिक तरीके में रोकथाम के लिए **Imidacloprid** 36% मात्रा वाली **1 ML** मात्रा 1 लीटर पानी में मिला करके और छिड़काव कर दें। 8 दिन के बाद आप दोबारा इसका छिड़काव कर देंगे तो इस रोग पर आप नियंत्रण कर पाएंगे।

आलू के पौधों में लगने वाले प्रमुख रोग और उनकी रोकथाम

आलू की खेती भारत में बड़े पैमाने पर सब्जी फसल के रूप में की जाती है. इसकी खेती अगर उन्नत किस्मों का चयन कर उन्नत तरीके से की जाए तो ये किसानों के लिए काफी लाभदायक मानी जाती है. लेकिन कभी कभी मौसम या अन्य कारकों की वजह से इसकी फसल में कई तरह के रोग लग जाते हैं. जिनकी वजह से इसकी पैदावार को काफी ज्यादा नुक्सान पहुँचता है. आलू की फसल में कई तरह के मृदा, जीवाणु, कवक और कीट जनित रोगों का प्रभाव देखने को मिलता है. इन रोगों से प्रभावित होने पर फसल के उत्पादन में काफी कमी देखने को मिलती है. लेकिन किसान भाई इन रोगों की उचित टाइम रहते रोकथाम कर उत्पादन को बढ़ा सकता है।

चेपा :– आलू की खेती में चेपा रोग का प्रभाव पौधों की पत्तियों और उसके कोमल भागों पर दिखाई देता है. जो कीट के माध्यम से फैलता है. इस रोग के कीट पौधे पर एक समूह में पाए जाते हैं. जिनका आकार काफी छोटा दिखाई देता है. ये कीट पौधे के कोमल भागों का रस चूसकर उनके विकास को प्रभावित करते हैं. इस रोग के कीट पौधे का रस चूसने के बाद चिपचिपे पदार्थ का उत्सर्जन करते हैं. जिससे पौधे पर काली फफूंद का रोग उत्पन्न हो जाता है। **रोकथाम :–** 1. इस रोग की रोकथाम के लिए पौधों पर डाइमेथोएट या मैटासिस्टाक्स की 300 मिलीलीटर मात्रा को 300 लीटर पानी में मिलाकर पौधों पर प्रति एकड़ की दर से छिड़कना चाहिए। 2. इसके अलावा जैविक तरीके से नियंत्रण के लिए पौधों पर नीम के तेल या नीम के आर्क का छिडकाव 15 दिन के अंतराल में दो बार करना चाहिए।

अगेती अंगमारी :– आलू के पौधों में अगेती अंगमारी रोग का प्रभाव आल्टेरनेरिया सोलेनाई नामक फफूंद की वजह से फैलता है. इस रोग का प्रभाव पौधों पर रोपाई के लगभग एक महीने बाद दिखाई देता है। पौधों पर यह रोग नीचे से ऊपर की तरफ बढ़ता है. रोग की शुरुआत में इससे ग्रसित पौधों की नीचे की पत्तियों पर छोटे छोटे गोल आकार के भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं. रोग बढ़ने पर ये धब्बे पौधे की ऊपरी पत्तियों पर भी दिखाई देने लगते हैं. जिनका आकार बढ़ जाता है. इससे प्रभावित पौधों पर कंद छोटे और कम संख्या में बनते हैं। **रोकथाम :–** 1. इस रोग की रोकथाम के लिए इसके कंदों की रोपाई टाइम से करनी चाहिए और रोग रोधी किस्मों का चयन करना चाहिए। 2. इस रोग की रोकथाम के लिए पौधों पर मैंकोजेब या जिनेब दावा का 10 दिन के अंतराल में दो से तीन बार छिडकाव करना चाहिए।

हरा तेला :– आलू के पौधों में हरा तेला का रोग कीट की वजह से फैलता है. इस रोग के कीट पौधे की पत्तियों का रस चूसते हैं. जिससे पौधे की पत्तियां पीली और लाल दिखाई देने लगती हैं. जो कुछ दिनों बाद नष्ट होकर गिर जाती हैं. जिससे पौधों का विकास रुक जाता है। **रोकथाम :–** 1. इस रोग की रोकथाम के लिए पौधों पर डाइमेथोएट या ऑक्सी डेमेटान मिथाइल की 300 मिलीलीटर मात्रा को 300 लीटर पानी में मिलाकर पौधों पर प्रति एकड़ की दर से छिड़कना चाहिए।

सफेद मक्खी :– आलू के पौधों में सफेद मक्खी रोग का प्रभाव पौधों के विकास के दौरान दिखाई देता है. इस रोग के कीट सफेद रंग के होते हैं. जो पौधे की पत्तियों की निचली सतह पर दिखाई देते हैं. इस रोग के कीट पौधे की पत्तियों का रस चूसकर पौधों के विकास को रोकते हैं. रोग के अधिक उग्र होने की स्थिति में पौधे की पत्तियां पीली दिखाई देने लगती हैं. जो कुछ दिन बाद सूखकर गिर जाती हैं. इस रोग के कीट पौधे की पत्तियों का रस चूसने के बाद चिपचिपे पदार्थ का उत्सर्जन करते हैं. जिससे पौधों पर फफूंद जनित रोग का प्रभाव बढ़ जाता है। **रोकथाम :–** 1. इस रोग की रोकथाम के लिए खेत में चार से पांच फोरमेन ट्रेप को प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में लगा देना चाहिए। 2. इसके अलावा रासायनिक तरीके से रोकथाम के लिए इमिडाक्लोप्रिड की उचित मात्रा का छिडकाव पौधों पर करना चहिये।

पछेती अंगमारी :– आलू की फसल में पछेती अंगमारी सबसे ज्यादा हानि पहुंचाने वाला रोग है. इस रोग के लगने पर सम्पूर्ण फसल चंद दिनों में खराब हो जाती है. पौधों में ये रोग फफूंद की वजह से फैलता है. इस रोग के लगने पर पौधों की पत्तियों पर काले चित्ते दिखाई देते हैं. रोग का प्रभाव बढ़ने पर धब्बों का आकार बढ़ जाता है. जिससे पौधे प्रकाश संश्लेषण की क्रिया नही कर पाते. जिस कारण पूरे पौधे नष्ट हो जाते हैं। **रोकथाम :–** 1. इस रोग की रोकथाम के लिए रोग रोधी किस्म के कंदों को उचित समय पर उगाना चाहिए। 2. खड़ी फसल में रोग दिखाई देने पर पौधों पर मैंकोजेब या जिनेब की उचित मात्रा का छिडकाव पौधों पर करना चाहिए. इसके अलावा रिडोमिल एम. जेड की उचित मात्रा का छिडकाव भी काफी लाभदायक होता है।

कुतरा कीट :– आलू के पौधों में इस रोग का प्रभाव पहाड़ी क्षेत्रों में अधिक देखने को मिलता है. इस रोग के कीट की इल्ली पौधे की पत्तियों और तने को काटकर पौधों को नुक्सान पहुँचाती है. जबकि इसकी सुंडी आलू के कंद को नुक्सान पहुँचाती हैं. इसकी सुंडी आलू के कंदों में छेद बना देती हैं. जिससे किसान भाइयों को फसल से उचित दाम नहीं मिल पाते हैं।

एन.पी.वी. (विषाणु): एक प्रभावी जैविक कीटनाशक

सुनील कुमार बर्डे, बी.आर. बरैया एवं रमन कुमार, कपास अनुसंधान केन्द्र, कृषि महाविद्यालय खंडवा 450 001(म.प्र.)

विगत् कई वर्षो से किसान कीट नियंत्रण के लिए रासायनिक कीटनाशियों का उपयोग करते आ रहे है लेकिन आज इनके उपयोग की सीमायें समझ में आ रही है । आधुनिक समय में होने वाली अधिकांश मानवीय बीमारियों का कारण जलवायु परिवर्तन के साथ–साथ कृषि में उपयोग हो रहे रसायन भी है । इनमें मुख्य रूप से मानव द्वारा उपयोग की जाने वाली विषाक्त सब्जियॉ , अनाज एवं फल है । जिनकी सुरक्षा हेतु अंधाधुंध रासायनिक कीटनाशकों का उपयोग किया जाता है। यद्यपि रासायनिक पीड़कनाशी प्रत्यक्ष लाभ की दृष्टि से लाभदायक है । लेकिन इसके उपयोग से आसपास की जमीन एवं तालाब संदूषित होते हैं और लाभदायक कीट एवं वनीय जैव विविधता को नुकसान पहुंचता है। दुर्घटना स्वरूप कभी कभी मानव एवं पशुओं को विषाक्तता हो जाती है। इन कीटनाशकों के प्रयोग से अत्यधिक प्रयोग से इनके प्रति कीटों में प्रतिरोधक क्षमता विकसित हो जाती है और कुछ प्रजातियों में तो प्रतिरोधक क्षमता विकसित भी हो चुकी है। इसके अलावा रासायनिक कीटनाशक अत्यधिक महंगे होने के कारण किसानों को इन पर अत्यधिक खर्च करना पड़ता है। कीटनाशकों के अत्यधिक प्रयोग से फसलों , सब्जियों व फलों की गुणवत्ता पर भी विपरीत असर पड़ता है । इन वस्तुस्थिति के फलस्वरूप वैज्ञानिकों का ध्यान प्राकतिक एवं जैविक कीटनाशकों एवं रोगनाशकों की ओर गया है जो न केवल सस्ते है बल्कि जिनके उपयोग से तैयार होने वाली फसल के किसी प्रकार के रासायनिक दुष्प्रभाव भी नहीं रहते है। इसलिए कीट प्रबंधन की अपारंपरिक विधियों का उपयोग काफी प्रभावी सिद्ध हो रहा है इस दिशा में प्रकृति में पाये जाने वाले विषाणु जीवाणु फफूंद एवं निमेटोड्स का उपयोग 'जैविक कीटनाशियों की तरह कीट नियंत्रण में सफलतापूर्वक किया जा रहा है । सूक्ष्म जीवियों के साथ कीटों का नियंत्रण हम वानस्पतिक कीटनाशियों द्वारा भी कर सकते है इन कीटनाशियों का कृषि में महत्व इस बात से बढ़ जाता है कि इनका वातावरण पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता और न ही लाभदायी कीटों पर होता है । इसी बात को ध्यान में रखते हुए आजकल एक विषाणु जो कि **न्यूक्लियर पोलीहेड्रोसीस वायरस** कहलाता है का उपयोग आजकल इल्लियों के नियंत्रण में प्रभावी रूप से किया जा रहा है ।

विषाणु (एन.पी.वी.):– यह एक कीट विषाणु है जो एक ऐसे परिवार का सदस्य है जो कि पौधों एवं जीवों में रोगजनक विषाणु से अलग होता है तथा कीट विशेष में बीमारी उत्पन्न कर उसे मारने की क्षमता रखता है ।खरीफ एवं रबी की विभिन्न फसलों में बहुभक्षी कीटों की इल्लियों जैसे चने की हरी इल्ली एवं तम्बाकू इल्ली कहते है जो हमारे क्षेत्र की प्रमुख फसलों जैसे कपास, अरहर, चना, मटर, टमाटर, बैंगन , भिंडी तथा कई अन्य फसलों को प्रकोपित कर उपज में कमी लाती है। कपास , टमाटर , चना एवं अन्य सब्जियों में इन कीटों के नियंत्रण के लिए कई प्रकार कीटनाशियों का उपयोग किया जाता है। ऐसे बहुभक्षी कीटों को नियंत्रित करने में यह विषाणु (एन.पी.वी.) काफी प्रभावी पाया गया है ।

यह विषाणु एक उदर विष की तरह कार्य करता है। जो हरी इल्लियों के शरीर में भोजन के माध्यम से प्रवेश करता है। विषाणु ग्रसित इल्लियॉ स्वस्थ इल्लियों की तुलना में कम खाना शुरू कर देती है। इल्लियों में वायरस से उत्पन्न बीमारी के लक्षण 2 से 3 दिनों में दिखाई देने लगते है । प्रथम अवस्था (फर्स्ट इन्स्टार) की इल्ली में त्वचा सफेद दूधिया हो जाती है और बाद वाली अवस्थाओं की इल्लियों की त्वचा गुलाबी रंग की हो जाती है । वायरस ग्रसित इल्लियॉ कभी कभी पीला भूरा रस अपने मुंह से निकालती है तथा जीवन के अंतिम क्षणों में इल्ली की त्वचा लीबलीबी (नरम एवं फ्रेजाइल) हो जाती है और फट जाती है जिससे उसके शरीर से तरह बाहर निकलता है । खेतों में रस विषाणु से ग्रसित इल्लियॉ प्रायः मरी हुई अवस्था में उल्टी लटकी हुई देखी जा सकती है । और ऐसी इल्लियों का रंग प्रायः पीला सफेद हो जाता है । बड़ी अवस्था की इल्लियॉ जो कि विषाणु ग्रसित हो जाती है वे शंखी अवस्था में ये खत्म हो जाती है । कुछ इल्लियॉ शंखी अवस्था में बदलती है लेकिन वयस्क (पतंगा) पूर्ण स्वस्थ निकलते है । यह विषाणु हरी इल्ली की सभी 6 प्रजातियों की संख्या कम करने में प्रभावी पाया गया है ।

सर्दी में आलू भंडारण के लिएस तापमान, नमी, प्रकाश और अन्य आवश्यकताओं

आलू विनाशकारी खाद्य पदार्थ नहीं हैं। हालांकि, सर्दियों में अनुचित भंडारण आपको परेशानी दे सकता है। आलू अत्यधिक नमी, उच्च तापमान पसंद नहीं करते हैं और ठंड को बुरी तरह प्रतिक्रिया देते हैं।

उपरोक्त सभी सब्जी भंडारण इतना आसान नहीं बनाता है। इसलिए, आपको आलू को सही ढंग से स्टोर करने के तरीके और लंबी अवधि की परिपक्वता के लिए कौन सी किस्में उपयुक्त हैं, इस बारे में कुछ जानना आवश्यक है। यह आलेख विस्तार से वर्णन करता है कि कैसे आलू को उचित रूप से स्टोर करना है और सब्जियों के दीर्घकालिक संरक्षण के लिए कौन सी आवश्यकताओं को देखना है।

बुनियादी आवश्यकताओं :– मुख्य आवश्यकता एक अंधेरा और ठंडा जगह है। आलू को लंबे समय तक रखने के लिए, कमरे को हवादार और सूखा मत भूलना। सब्जियों के उत्पादकों को दीवारों और छत को सफ़ेद करने की सलाह दी जाती है जहां सब्जी संग्रहित होती है। ऐसा किया जाता है ताकि कोई मोल्ड बन न सके। छेद और बतमअपबमे की उपस्थिति के लिए परिसर की जांच करें, यदि कोई हो, तो उन्हें सील करना सुनिश्चित करें।

इष्टतम तापमान :– आलू को किस तापमान पर रखा जाता है? सुनिश्चित करें कि कमरे का तापमान 4 डिग्री से अधिक नहीं है। लेकिन इसे इस निशान से नीचे मत बनाओ, क्योंकि आलू इसका स्वाद खो देगा।अधिकतम स्वीकार्य तापमान 7 डिग्री है। 0 डिग्री और नीचे, सब्जी फ्रीज, मीठा और अनुपयोगी हो जाता है, और जल्द ही तवजे।

नमी :– आर्द्रता को 85% के आसपास बनाए रखने की जरूरत है। कम या बहुत अधिक आर्द्रता आलू को नुकसान पहुंचा सकती है। अगर हवा बहुत सूखी है, तो पानी के साथ कंटेनर डालें, नमी उनके द्वारा वाष्पित हो जाएगी।

प्रकाश :– अंधेरे में संग्रहीत ट्यूबर। सब्जी को सीधे सूर्य की रोशनी से छिपाना सुनिश्चित करें।

शब्द कैसे बढ़ाएं :– शेल्फ जीवन कई कारकों पर निर्भर करता है। इसमें आलू की विविधता, भंडारण के लिए एक उचित ढंग से चयनित और सुसज्जित जगह शामिल है, सभी नियमों का अनुपालन। यदि आप अपने कंदों को सर्दियों में लंबे समय तक संग्रहित करना चाहते हैं, तो इसके बारे में सब्जी रोपण चरण पर विचार करें। उदाहरण के लिए, रेतीले मिट्टी में उगाए जाने वाले आलू लंबे समय तक कमजोर मिट्टी में उगाए जाने वाले लोगों की तुलना में लंबे समय तक चलेंगे।

खोने वाले पौधे भी भंडारण को प्रभावित करते हैं। इसलिए, कंद खोदने से पहले, रोगग्रस्त शीर्ष हटा दिए जाते हैं ताकि संक्रमण आलू पर न हो। यदि आप भंडारण स्थान के चयन पर सभी निर्देशों का पालन करते हैं और तापमान, आर्द्रता और प्रकाश को स्पष्ट रूप से नियंत्रित करते हैं, तो सब्जियों का शेल्फ जीवन बढ़ जाएगा।

क्या आलू वसंत तक रहेगा? :– आप सब्जियों को काफी लंबे समय तक स्टोर कर सकते हैं। यदि आप इसे बंद अंधेरे कमरे, तहखाने या पेंट्री में करते हैं, तो यह वसंत तक झूठ बोल सकता है।

हालांकि, आलू जो अनुभवी सब्जी उत्पादकों को कम से कम, उपस्थिति के उचित निरीक्षण के बिना खाने के लिए तीन महीने से अधिक समय तक लापरवाही की सिफारिश नहीं की जाती है।

क्या मैं वसंत तक बिक्री के लिए बचा सकता हूँ? :– यह सब आलू की विविधता और उन स्थितियों पर निर्भर करता है जिनमें यह बढ़ता है और संग्रहीत किया जाता है। अधिकांश किस्में वसंत तक अच्छी, वाणिज्यिक स्थिति में संग्रहित की जाती हैं। लेकिन क्षतिग्रस्त कंदों के कुल द्रव्यमान में शामिल होने के लिए, बेचने से पहले आलू को सॉर्ट करना बेहतर होता है।

रबी फसलों की कटाई को आसान बनाएगा कम्बाइन हार्वेस्टर, जानें इसकी विशेषताएं और कार्य

इस कृषि यंत्र की सहायता से अनाज एकत्रिकरण, फसल कटाई, दाना एकत्रिकरण और दाना संग्रहण आदि का काम आसान होता है. इसका उपयोग कई प्रकार की फसलों जैसे :— गेहूं, मकई, सोयाबीन, जई आदि फसलों की कटाई, गहाई और सफाई के लिए किया जाता है.

स्वचालित कम्बाइन हार्वेस्टर के मुख्य भाग

- इस कृषि यंत्र में कटाई इकाई, गहाई इकाई, सफाई व अनाज संचालन इकाई ली होती है।
- **कटाई इकाई** :— इसमें घिरनी, कटाई पट्टी, बरमा और फीडर कन्वेयर शामिल होते हैं।
- **गहाई इकाई** :— इसमें सिलेंडर, अवतल और सिलेंडर बीटर लगे होते हैं।
- **सफाई इकाई** :— इसमें काटने वाला छलनी और डेन इकठ्ठा करने के लिए आनाज कड़ाही लगे होते हैं।
- **अनाज संचालन इकाई** :— इसमें अनाज एलिवेटर और बहाव बरमा लगे होते हैं.

स्वचालित कम्बाइन हार्वेस्टर के मुख्य कार्य :— इस कृषि यंत्र से फसल कटने के बाद फीडर कन्वेयर के जरिए सिलेंडर और अवतल असेम्बली में जाती है. यहां इसकी गहाई होती है, साथ ही अनाज के डेन और भूसा कई भागों में एक—दूसरे से अलग हो जाते हैं. इसमें लगभग 4300 मि. मी. लम्बाई का कटाई पट्टी होती है. इसकी काटने की ऊंचाई 550 से 1250 है. इसके साथ ही 605 व्यास व 1240 लम्बाई का गहाई ड्रम लगा होता है, जो कि 540 से 1050 चक्कर प्रति मिनट की गति से चलता है. इसकी चाल 2 से 11.5 कि. मी. ⁄ घंटा है।

किसानों के खेतों में रबी की फसलें लगभग—लगभग तैयार हो चुकी हैं. अगर रबी फसलों की कटाई सही समय पर नहीं की जाए, तो अगली फसल की बुवाई पर प्रभाव पड़ता है. इसी तरह आंधी और बारिश आने की वजह से फसल को नुकसान भी पहुंच सकता है, इसलिए समय पर रबी फसलों को काटना जरूरी होता है।

ऐसे में अगर किसान परंपरागत या पुराने यंत्रों से रबी फसलों की कटाई का काम करते हैं, तो इसमें कई तरह की मुश्किलें आती है. इसके साथ ही समय व श्रम भी अधिक लगता है. इसके अलावा रबी फसलों की कटाई के लिए मजदूरी का भुगतान भी करना पड़ता है. ऐसे में आधुनिक कृषि यंत्रों से कटाई का काम करना चाहिए. इनके कृषि यंत्रों की सहायता से काम आसान हो जाता है, साथ ही समय व श्रम, दोनों की बचत होती है. ऐसा ही एक कृषि यंत्र स्वचालित कम्बाइन हार्वेस्टर है।

सौंफ की खेती

मोनू गौतम एवं अजय कुमावत (उद्यानिकी महाविद्यालय मंदसौर)

हमारे देश में सौंफ एक महत्वपूर्ण मसाला फसलों में अपना एक विशिष्ट स्थान है। ये अपनी औषधी गुणों के साथ साथ बहुत अच्छी महक के कारण मसला फसल के रूप में भी पहचानी जाती है। इसके कई औषधीय महत्व हैं जो कई रोगों की दवा रूप में प्रयोग किया जाता है। इसका प्रयोग सब्जियों एवं अचार बनाने मे विशेष रूप से किया जाता हैं। आयुर्वेद में सौंफ को त्रिदोष नाशक बनाया गया है। यानि ये वात, पित्त, कफ इन त्रिदोषों को खतम करने में सक्षम है। इसका किसी भी रूप में सेवन शरीर को लाभ ही पहुंचाता है। इसकी खेती भारत में मुख्यतः राजस्थान, पंजाब, उत्तरप्रदेश, आंध्रप्रदेश, गुजरात, हरियाणा व कर्नाटक राज्य में की जाती है। यदि व्यवसायिक स्तर पर इसकी खेती किसान भाई के लिए काफी अच्छी फसल हैं।

औषधीय उपयोग :– सौंफ का उपयोग हैजा, गोनोरिया, पेटदर्द के इलाज में किया जाता है। यह कृमि नाशक, कफनि, कामोद्दीपक, हृदय के लिए बल्य तथा स्त्रियों की ऋतु संबंधी व्याधियों के निराकरण में विशेष रूप से किया जाता हैं।

रासायनिक संगठन :– सौंफ की पत्तियों व बीजों में कई तरह के फ्लैवोनॉइड्स जैसे – क्वैरसेटिन 3 अराबिनोसाइड आदि पाये जाते हैं। इसकी जड़ों में अम्बैलीफेरोन, डिकरसिनोल, बरगैप्टेन तथा ग्रांडीविटिन नामक फ्लैवोनॉइड्स होते हैं। इसकी पत्तियों व बीजों में सुगंधित तेल पाया जाता है, जिसमें 50–60 प्रतिशत एनीथॉल, 10–15 प्रतिशत फेनकोन, लिमोनीन, टरपीनोलीन, पारस्ले, डायइलापिओल तथा मेथिल चौवीकोल पाये जाते हैं।

जलवायु :– सौंफ मुख्यतः रबी की फसल है। इसकी खेती के लिए औसत वार्षिक वर्षा 75–90 से.मी. होनी चाहिए, परंतु 125–130 से. मी. वर्षा वाले स्थानों में भी यह होती है। सौंफ की अच्छी उपज के लिए शुष्क और ठण्डी जलवायु उत्तम होती है। बीजों के अंकुरण के लिए उपयुक्त तापमान 20 से 29 डिग्री सेल्सियस है तथा फसल की अच्छी बढ़वार 15 से 20 डिग्री सेल्सियस पर होती है। 25 डिग्री सेल्सियस से अधिक तापमान फसल की बढ़वार को रोक देता है। यह खरीफ फसल के रूप में भी सफलतापूर्वक उगाई जा सकती हैं, परंतु सौंफ के फूलने के समय तथा बीज बनने के समय वर्षा होने से एफिड (माहो) कीट का प्रकोप ज्यादा हो जाता है।

सौंफ की उन्नत जातियाँ :– सौंफ की खेती से अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए उन्नत किस्मों का चयन किया जाना चाहिए। किस्म अपने क्षेत्र की प्रचलित और अधिक उपज देने वाली के साथ–साथ विकार रोधी भी होनी चाहिए। कुछ प्रचलित प्रजाति इस प्रकार है, जैसे– आर एफ–105, आर एफ–125, पी एफ–35, गुजरात सौंफ–1, गुजरात सौंफ–2, गुजरात सौंफ–11, हिसार स्वरूप, एन आर सी एस एस ए एफ–1, को–11, आर एफ 143 और आर एफ–101 आदि प्रमुख है।

1. **पी.एफ. 35 :–** इसे गुजरात कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित किया गया है। यह अच्छी उपज देने वाली उन्नत जाति है 19 से 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उपज प्राप्त होती है।
2. **यू.एफ. 8 :–** ये उदयपुर विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई उन्नत जाति है।
3. **सिलेक्शन 16 तथा ई.सी. 58 :–** राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय ढ़ोली (बिहार) द्वारा चयन किया है। यह माहो कीट निरोधी है।
4. **गुजरात सौंफ 1 :–** यह सौंफ की किस्म मसाला अनुसंधान केन्द्र, जगुदन (गुजरात) द्वारा विकसित की गई है। इसका पौधा लम्बा फैला हुआ झाड़ीनुमा होता है। यह किस्म शुष्क परिस्थिति के लिए उपयुक्त है। इसके पुष्पछत्रक कड़े तथा दानें गहरे हरे रंग के बड़े व लम्बे होते हैं जो झड़ते हैं। यह किस्म पकने में 200 से 230 दिन लेती है और 16.95 क्विंटल प्रति हैक्टेयर पैदावार देती है। इसमें वाष्पशील तेल की मात्रा 1.60 प्रतिशत होती है।
5. **गुजरात सौंफ–2 :–** यह सौंफ की किस्म सिंचित तथा असिंचित दोनों परिस्थितियों के लिए उपयुक्त है। इसे मसाला अनुसंधान केन्द्र जगुदन, गुजरात द्वारा विकसित किया गया हैं। इसकी औसत उपज 19.4 किंवटल प्रति हैक्टर हैं। इसमें वाष्पशील तेल की मात्रा 2.4 प्रतिशत होती हैंजरात सौंफ–2– यह सौंफ की किस्म सिंचित तथा असिंचित दोनों परिस्थितियों के लिए उपयुक्त है। इसे मसाला अनुसंधान केन्द्र जगुदन,

Feeling truly honoured and emotional today
Received the Child & Youth Welfare Award from Swadesh News Channel, presented by Mr. Praveen Khariwal, President – State Press Club.This one's for every child we've promised a brighter tomorrow.
Thank you for strengthening our resolve to keep serving. Grateful beyond words. #ChildWelfare #YouthEmpowerment #PrestigeUniversity #ProudMoment #EducationMatters #SwadeshNews

प्रेस्टीज इंस्टीट्यूट भोपाल में सोमवार 17 Nov 25 एक ऐतिहासिक अविस्मरणीय दिन रहा जहां हजारों छात्रों फैकल्टीज व स्टाफ ने डॉ सुधीर खेतावत व 9 सहयोगियों विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न रोगों में हुए तुरंत लाभ के बारे में बताया। लोगों ने वर्षों पुराना सिर, कमर, कंधा, माइग्रेन व अन्य दर्द में लाभ को स्वीकार। डॉ खेतावत के साथ डॉ अनिता ठाकुर श्रेया खुराना, श्वेता लोदवाल, अनिल दुबे राजेंद्र सिंग सोलंकी,v Bhopal शाखा के प्रमुख डॉ सतीश सेजकर माधवी नरवरे ने अपनी सेवाएं दी सामूहिक थ्री फिंगर विधि का जब डॉ खेतावत ने प्रयोग करवाए तो अधिकांश विद्यार्थियों ने भय, मनोबल की कमी, अनिद्रा, डिप्रेशन, IBS यादाश्त में हुए लाभ के बारे में बताया। डॉ अनिता ठाकुर ने सर्वप्रथम पीड़ित मानवता के हित में संस्था के 50 वर्षों की अद्वितीय उपलब्धियों की पीपीटी द्वारा जानकारी दी जिसकी सभी ने प्रशंसा की व कहा यह इंदौर का दुर्भाग्य है कि वहां के लोग डॉ खेतावत के वर्षों के अनुभव का लाभ नहीं ले रहे हे। डॉ अनिल बाजपेई ग्रुप डायरेक्टर प्रेस्टीज इंस्टीट्यूसभी के समक्ष डॉ खेतावत की थ्री फिंगर विधि से स्वयं के कंधे के दर्द में हुए तुरंत लाभ के बारे में बताया।

छात्रा कु. नेहा तोमर को Ph.D.

Ph.D. छात्रा कु. नेहा तोमर को राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, के दीक्षांत समारोह में Ph.D. में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए स्वर्ण पदक प्रदान किया जाएगा। इसके लिए कु. नेहा को सोना–उगल मिटटी की ओर से बहुत बहुत शुभकामनाएं।

MPPSC Result 2023: पूजा जैन सागर मुख्यालय से लगभग 70 किलोमीटर दूर शाहगढ़ कस्बे की रहने वाली हैं. उनके पिता एक साधारण किराना दुकानदार हैं. परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत मजबूत नहीं थी, लेकिन पूजा ने कभी हालात को अपनी कमजोरी नहीं बनने दिया. Pooja Jain success story: कभी अपने पिता की किराना दुकान में हाथ बंटाने वाली शाहगढ़ की बेटी पूजा जैन ने अपनी मेहनत और लगन के दम पर मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPSC) परीक्षा पास कर डीएसपी (उप पुलिस अधीक्षक) का पद हासिल किया है. सागर जिले के छोटे से कस्बे शाहगढ़ निवासी पूजा की यह सफलता पूरे क्षेत्र के लिए गर्व का विषय बन गई है ।

इंदौर में विद्यार्थियों का धरना

विगत दिनों MPPSC की विभिन्न मांगों को लेकर अभ्यर्थियों द्वारा शांतिपूर्वक ज्ञापन देने का कार्यक्रम निर्धारित था। लेकिन ज्ञापन से पूर्व ही छात्र नेता राधे जाट जी एवं 4-5 अन्य साथियों को पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया। यह कार्रवाई पूरी तरह दमनकारी, अलोकतांत्रिक और असंवैधानिक है।शांतिपूर्ण ढंग से अपनी मांगें रखना प्रत्येक नागरिक का मौलिक अधिकार है,जिसे इस पुलिसिया दमन के माध्यम से कुचलने का प्रयास किया गया है। यह घटना स्पष्ट रूप सेलोकतांत्रिक अधिकारों पर सीधा हमला है, जिसकी हम कड़ी निंदा करते हैं। हम प्रशासन से मांग करते हैं किसभी गिरफ्तार विद्यार्थियों को तत्काल रिहा किया जाएऔर अभ्यर्थियों की वाजिब मांगों पर संवाद स्थापित किया जाए।इस अन्याय के विरोध मेंसभी छात्र, अभ्यर्थी और लोकतंत्र में विश्वास रखने वाले नागरिकों सेएकजुट होकर आवाज बुलंद करने की अपील की जाती है।

पशुपालकों की आय में वृद्धि एवं किसानों को आत्मनिर्भर बनाने के लिये निरंतर प्रयास

भोपाल। पशुपालन एवं डेयरी राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री लखन पटेल ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के कुशल नेतृत्व में हमारी सरकार ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त करने तथा पशुपालकों की आय में वृद्धि एवं किसानों को आत्मनिर्भर बनाने के लिये निरंतर प्रयास कर रही है। हमारा यह सतत प्रयास रहा है कि पशुपालन को आजीविका का मजबूत आधार बनाया जाए। श्री पटेल ने बताया कि पिछले 02 वर्षों में प्रदेश ने विकास, सुशासन और जनकल्याण के पथ पर निरंतर प्रगति की है। हमने शासन की विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक लाभ पहुंचाने का संकल्प दृढ़ता से निभाया है। हमारी सरकार ने गौवंश के संरक्षण और संवर्धन को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए प्रदेश में निराश्रित पशुओं के लिए नवीन गौशाला नीति बनाई है। श्री पटेल कुशाभाऊ ठाकरे सभा हॉल में पशुपालन एवं डेयरी विभाग की दो वर्ष की उपलब्धियों की जानकारी मीडिया प्रतिनिधियों से साझा कर रहे थे।

प्रमुख सचिव पशुपालन एवं डेयरी श्री उमाकांत उमराव, संचालक पशुपालन एवं डेयरी डॉ. पी. एस. पटेल, मध्य प्रदेश सहकारी दुग्ध महासंघ के एमडी डॉ. संजय गोवानी, प्रबंध संचालक मध्य प्रदेश राज्य पशुधन एवं कुक्कुट विकास निगम डॉ. सत्य निधि शुक्ला और रजिस्ट्रार नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय जबलपुर डॉ. एस एस तोमर उपस्थित रहे। संचालन डॉ. अनुपम अग्रवाल ने किया ।

मंडी प्रांगणों को कृषक उन्मुख बनाये जाने के लिये प्रभावी कार्ययोजना तैयार की जाये

भोपाल। किसान कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री श्री एदल सिंह कंषाना ने कहा है कि मंडी प्रांगणों को कृष्नक उन्मुख बनाये जाने के लिये प्रभावी कार्ययोजना तैयार की जाये। किसानों को मंडियों में बेहतर सुविधाएं, पारदर्शी विपणन व्यवस्था एवं फसलों का उचित मूल्य दिलाना भी सुनिश्चित किया जाये। कृषि मंत्री श्री कंषाना मध्यप्रदेश राज्य कृषि विपणन बोर्ड के संचालक मंडल की 144वीं बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। बैठक में सभी प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित किये गये। बैठक में सचिव किसान कल्याण तथा कृषि विकास श्री निशांत बरबड़े, प्रबंध संचालक मंडी बोर्ड श्री कुमार पुरुषोत्तम, पंजीयन सहकारी संस्था तथा मंडी बोर्ड के अधिकारी उपस्थित रहे।

मधुमक्खी पालन में है अच्छी कमाई, सरकार से भी मिलती है बंपर सब्सिडी

कम लागत में बढ़िया मुनाफे के चलते मधुमक्खी पालन का व्यवसाय ग्रामीणों में काफी लोकप्रिय हो रहा है. बड़ी संख्या में ग्रामीण इससे जुड़कर अपनी कमाई बढ़ा रहे हैं. इसके लिए किसानों को 80 से 85 प्रतिशत तक की सब्सिडी दी जाती है. बिहार सरकार भी मधुमक्खी पालन के इच्छुक किसानों को 90 प्रतिशत तक की सब्सिडी देती है. वही, झारखंड सरकार भी इससे संबंधित व्यवसायों को शुरू करने के लिए 80 प्रतिशत तक सब्सिडी देती है. मधुमक्खी पालन के क्षेत्र में दिलचस्पी रखने वाले किसानों की नाबार्ड भी मदद करता है. राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड (NBB) ने नाबार्ड (NABARD) एक दूसरे से टाई अप कर एक फाइनेंसिंग स्कीम की भी शुरुआत की थी. इस स्कीम के जरिए मधुमक्खी पालन के इच्छुक किसानों को आर्थिक मदद मुहैया कराई जाती है.

टीकमगढ़ में मछुआ प्रशिक्षण

टीकमगढ़ – कलेक्टर श्री विवेक श्रोत्रिय के निर्देशानुसार सहायक संचालक मत्स्योद्योग श्रीमती मेघा गुप्ता एवं मत्स्य निरीक्षक श्री पंकज मौर्या, श्री सी.एल. कुशवाहा के द्वारा मुख्यमंत्री मछुआ समृद्धि योजना के तहत महेंद्र बाग मत्स्य बीज प्रक्षेत्र टीकमगढ़ में तीन दिवसीय मछुआ प्रशिक्षण समारोहपूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम में मछुआ कृषकों को सरकार की योजनाओं और तकनीकी नवाचारों जानकारी दी गई। की इस अवसर पर जनप्रतिनिधि श्री विवेक चतुर्वेदी, श्री अरविन्द खटीक, श्री स्वप्निल तिवारी, मछुआ समूह एवं समितियों के सदस्य एवं तकनीकी विषय विशेषज्ञ की विशेष उपस्थिति रहीं।

प्रदेश की प्रगति में पशुपालन एवं डेयरी क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान

भोपाल। पशुपालन एवं डेयरी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री लखन पटेल ने कहा है कि प्रदेश की प्रगति में पशुपालन एवं डेयरी क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान है। भारत सरकार द्वारा नीति निर्माण में पशुधन सांख्यिकी आंकड़ों की आवश्यकता होती है। संपूर्ण देश में ई–लिस एप सॉफ्टवेयर के माध्यम से इन आंकड़ों को डिजिटलाईज

ई–लिस एप सॉफ्टवेयरश संबधी दो दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ

किया जाता है। इस सॉफ्टवेयर का प्रशिक्षण प्राप्त करें और पशुधन संबंधी आंकड़ों के डिजिटाइजेशन में इनका पूरा उपयोग करें।

डिजिटाइजेशन के महत्व को रेखांकित किया

भारत सरकार के सांख्यिकीय सलाहकार, पशुपालन सांख्यिकी प्रभाग श्री जगत हजारिका ने बताया कि ग्राम स्तर पर एकीकृत नमूना सर्वेक्षण के माध्यम से प्राप्त होने वाले आंकड़ों का संकलन करने के बाद विश्व स्तर पर रिपोर्टिंग की जाती है। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. प्राची मिश्रा द्वारा सॉफ्टवेयर के उपयोग के संबध में महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। वीसीआई नई दिल्ली के अध्यक्ष डॉ. उमेश चंद्र शर्मा द्वारा देश और प्रदेश की प्रगति में पशुपालन और डेयरी क्षेत्र के योगदान और इससे संबंधित आंकड़ों और उनके डिजिटाइजेशन के महत्व को रेखांकित किया गया।

कार्यशाला में पशुपालन एवं डेयरी संचालक डॉ. पी. एस. पटेल, पशुपालन सांख्यिकी भारत सरकार के संचालक श्री आर.पी.एस. राठौर, पशुपालन प्रशिक्षण संस्थान के संयुक्त संचालक डॉ. मनोज गौतम, भारत सरकार से सहायक संचालक श्री बैधर स्वाइन, उप संचालक श्री चौतराम मीणा, म.प्र. से एकीकृत नमूना सर्वेक्षण की राज्य नोडल अधिकारी डॉ. उमा कुमरे (परते) आदि उपस्थित रहे।

दुग्ध समृद्धि संपर्क अभियानः पशुपालकों को दी जा रहीं आवश्यक जानकारियां

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मार्गदर्शन में प्रदेश में दुग्ध उत्पादन को दोगुना करने और पशुओं की नस्लों में सुधार लाने के उद्देश्य से ष्दुग्ध समृद्धि संपर्क अभियानष चलाया जा रहा है। प्रथम चरण में ऐसे पशुपालक जिनके पास 10 या 10 से अधिक पशु भारत पशुधन ऐप पर पंजीकृत हैं, उनके घर–घर जाकर पशुओं का सत्यापन किया जा रहा है। पशुपालकों को पशु नस्ल सुधार, पशु स्वास्थ्य, पशु–पोषण सहित अन्य जानकारियों से अवगत कराया जा रहा हैं। अभियान को सफल बनाने हेतु 30 पशु चिकित्सा सहायक क्षेत्र अधिकारी, 7 पशु चिकित्सक और 57 गौ–मैत्रियों की ड्यूटी लगाई गई है। कलेक्टर श्री हर्ष सिंह के निदेर्शानुसार जिले में अभियान की मैदानी स्तर पर चल रही गतिविधियों की मॉनिटरिंग के लिये मंगलवार को अधिकारियों ने ग्राम जैनाबाद, जैसिंगपुरा एवं घोसीवाड़ा का भ्रमण कर वस्तुस्थिति का जायजा लिया। प्रशासनिक अधिकारियों ने पशुपालकों से संवाद करते हुये उन्हें अभियान के उद्देश्य के बारें में बताया।

मत्स्य क्षेत्र में सहकारिता, गरीब मछुआरों को समृद्ध करेगी

श्री अमित शाह लने मझगांव डॉक, मुंबई में प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के अंतर्गत 'गहन सागरीय मत्स्य नौकाओं' का लोकार्पण किया मोदी सरकार मछलियों को प्रोसेसिंग और चिलिंग सेंटर एवं एक्सपोर्ट और कलेक्षन के जहाजों को सहकारिता से उपलब्ध कराएगी

मुंबई। केंद्रीय गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने मझगांव डॉक, मुंबई में प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के अंतर्गत श्गहन सागरीय मत्स्य नौकाओंश का लोकार्पण किया। इस अवसर पर महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री देवेंद्र फडणवीस, उप मुख्यमंत्री श्री एकनाथ शिंदे और श्री अजीत पवार, तथा केंद्रीय सहकारिता राज्य मंत्री श्री मुरलीधर मोहोल भी उपस्थित थे। अपने सम्बोधन में केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में यह भारत के समुद्री मत्स्य पालन क्षेत्र के आधुनिकीकरण और तटीय क्षेत्रों में सहकारिता–आधारित विकास को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण को साकार करने और ब्लू इकोनॉमी को मजबूत कर सहकारिता क्षेत्र की क्षमता का उपयोग करने के लिए कटिबद्ध है। सहकारिता मंत्री ने कहा कि अभी ट्रॉलर पर मछली पकड़ने का कार्य करने वाला व्यक्ति तन्खवाह पर काम करता है लेकिन अब कॉपरेटिव बेसिस पर ट्रॉलर से मछली पकड़ने से होने वाला पूरा मुनाफा पर हर मछली पकड़ने वाले के घर में पहुंचेगा। श्री शाह ने कहा कि अभी तो इस तरह के 14 ट्रॉलर दिए जाऐंगे परन्तु केन्द्र सरकार, सहकारिता मंत्रालय और मत्स्य विभाग आने वाले समय में और भी ट्रॉलर मछली पकड़ने वाले भाइयों को कॉपरेटिव बेसिस पर देंगे। उन्होंने कहा कि ये ट्रॉलर 25 दिन तक गहरे समुंद्र में रह सकेगा और 20 टन तक मच्छलिया ढ़ो सकेंगे।

झाबुआ में कड़कनाथ पालन को बढ़ावा देने हेतु प्रशिक्षण

झाबुआ। झाबुआ जिले में जीआइ (जीआई) टैग प्राप्त कड़कनाथ कुक्कुट पालन को आजीविका संवर्धन का सशक्त माध्यम बनाने के उद्देश्य से जिला पंचायत के मार्गदर्शन में जिला स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह प्रशिक्षण राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, पशुपालन विभाग एवं कृषि विज्ञान केंद्र झाबुआ के संयुक्त सहयोग से आयोजित किया गया। कार्यक्रम में जिले की क्लस्टर लेवल फेडरेशन से जुड़ी आजीविका दीदियों को कड़कनाथ पालन के तकनीकी एवं व्यावहारिक पक्षों पर विस्तृत प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रशिक्षण के दौरान कड़कनाथ की विभिन्न किस्मों एवं विशेषताओं, चूजों की देखभाल आदि का प्रशिक्षण दिया गया।

बकरी पालन करने की विधि और उपयोगी नस्लें

• बकरियों के रहने का स्थान जमीन से दो–तीन फीट ऊँचा हो. इसके लिए आप तख्त इत्यादि का इस्तेमाल कर सकते हैं क्योंकि गीलेपन और नमी से बकरियों मे बीमारी पैदा हो जाती है। • चूहों, मक्खियों, जूँ इत्यादि कीट पतंगे बकरियों के आवास पर बिलकुल नहीं होने चाहिए। • आवास को हमेशा पूर्व–पष्चिम दिशा में बनवाना चाहिए, ताकि हवा का आवागमन आसानी से हो सके। • आवास से पानी निकास की उचित व्यवस्था पहले से ही करके रखें, ताकि फार्म की साफ–सफाई के दौरान पानी की निकास बाहर की ओर आसानी से हो सके। • इस बात की उचित व्यवस्था करें कि बकरियों के आवास में किसी भी प्रकार का पानी चाहे वो बारिश का हो या कोई अन्य, अन्दर न आने पाए. यह पानी बीमारियों की जड़ है. आवास में तापमान को स्थिर रखने के लिए उचित प्रबन्ध करें. गर्मी तथा सर्दियों के लिए आवास में तापमान नियंत्रण के लिए उचित प्रबन्ध करें। • बकरी पालन से सम्बन्धित सभी तरह के उपकरणों, बर्तनों की साफ–सफाई का विशेष ध्यान रखें। **आहार प्रबंधन :–** बकरी एक जुगाली करने वाला पशु है लेकिन उनकी दूसरे पशुओं के मुकाबले खाने की आदत भिन्न होती है। बकरिया अपने हिलने डुलने वाले ऊपरी होठो तथा जिव्हा की सहायता से वे बहुत छोटी घास एवं पेड़ तथा झाड़ियों की पत्तियों को आसानी से खा जाती है। बकरी अपने शरीर के वजन का ३–४ प्रतिशत तक सूखा पदार्थ आराम से ग्रहण कर सकती है। बकरी के आहार को मुख्य तोर पर दो भागों में बाँटा जा सकता है। **चारा :–** चारे के रूप में किसान बकरियों को अनाज वाली फसलों से प्राप्त चारा, फलीदार हरे चारा, पेड़–पौधों की पत्तियों का चारा, विभिन्न प्रकार की घास आदि को काम में लिया जा सकता है। इसके अलावा कटहल, नीम, पीपल, पाकड़ की पत्तियों को समय–समय पर हरे चारे के रुप में दे सकते हैं।

PINGAKSH LIFE SCIENCE PVT. LTD.

Add.: 68, Bardan Mandi, Palda, Nemawar Road,
Indore - 452020 (M.P.) Ph.: 90750-60066
Email : jvsingh@pingakshlifescience.com | Web.: www.pingakshlifescience.com

साइबर फ्रॉड 3 दिन में बता दिया तो जवाबदेही बैंक की होगी, लोन और सेटलमेंट को लेकर क्या हैं नए नियम?

डिजिटल डेस्क, नई दिल्ली। आगामी कुछ महीनों में बैंक के कामकाज में कई बड़े बदलाव देखने को मिलेंगे। भारतीय रिजर्व बैंक (त्ठप्) ने 238 बैंकिंग नियमों का एक ड्राफ्ट जारी किया है। इस पर जनता से 10 नवंबर तक सुझाव मांगे हैं। आरबीआई के पूर्व गवर्नर आर गांधी ने बताया कि नियामक कानूनों में सुधार को लेकर पहली बार ड्राफ्ट जारी कर जनता से सुझाव मांगे जा रहे हैं।

कब से लागू होंगे नए नियम?

भारतीय रिजर्व बैंक ने जिन 238 बैंकिंग नियमों का ड्राफ्ट जारी किया है, वे नए नियम साल 2026 की शुरुआत से लागू होंगे। आरबीआई के प्रस्तावित सुधारों के तहत साइबर फ्रॉड के मामलों में यदि ग्राहक तीन दिन में जानकारी दे देता है तो उसकी जवाबदेही शून्य होगी। इसके बावजूद अगर बैंक समय पर कार्रवाई नहीं करते हैं तो उन पर 25,000 रुपये तक जुर्माना लगाया जा सकता है। वहीं चोरी या लापरवाही की स्थिति में बैंक को लॉकर किराये का 100 गुना तक हर्जाना भरना होगा।

हिप्पो कॉरपोरेशन का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

विगत दिनो इन्दौर के आनन्द माथुर समाग्रह में हिप्पो कॉरपोरेशन का वार्षिक उत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ। देश की कई गणमान्य हस्तियो ने इस कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। धोलेरा, इन्दौर व राऊ प्रोजेक्टस में उपलब्धि प्राप्त लोगो को चैक व उपहार से सम्मानित किया गया। श्री सुमित मिश्रा ने सभी का आभार व्यक्त किया। सोना–उगले मिट्टी के प्रधान सम्पादक श्री देवराज चौधरी इस कार्यक्रम में विशेष रुप से उपस्थित थे।

पहली बार शहर महिला कांग्रेस में दो शहर अध्यक्ष

महिला **कांग्रेस** की **नई कार्यकारिणी** की **घोषणा** शनिवार को कर दी गई **इंदौर शहर** और जिले की **महिला कांग्रेस** की कमान नए चेहरों को **सौंपी** गई है। **प्रदेश महिला कांग्रेस अधक्ष अर्चना जायसवाल** ने नया प्रयोग करते हुए पहली बार शहर **महिला कांग्रेस** में **दो अध्यक्षों** की **नियुक्ति** की है। जया **तिवारी** और **साधना भंडारी** को **शहर महिला कांग्रेस** का **अध्यक्ष** के **रूप** में **रीना बौरासी सेतिया** की **ताजपोशी** की गई है। **रीना पूर्व संसद प्रेमचंद गुड्डू** की **पुत्री** है जबकि **शहर अध्यक्ष** के दोनो नामों में **सामाजिक कार्यकर्ता** की **छवि** को संगठन के हित में भुनाने की **कोशिश नजर** आ रही है। के बाद अब तक संगठन ने इसके **कार्यक्षेत्र** का **प्रारूप साफ** नहीं किया है। **हालांकि** माना जा रहा है कि शहर के आधे–आधे वार्डों के दोनो **अध्यक्षों** में बाटङ्ग जाएगा। **शहर महिला कांग्रेस** की **अध्यक्ष** बने दोनों नाम **सामाजिक संगठनों** से **ताल्लुक** रखते है।

NM HERITAGE का भूमि पूजन सम्पन्न

NM HERITAGE की बुकिंग प्रारंभ विगत दिनो इन्दौर के बिचोली मर्दाना क्षेत्र के श्रीजी वैली में एन. एम. हैरीटेज हाईराज बिल्डिंग का भुमिपूजन सम्पन्न हुआ। प्रोजेक्ट डायरेक्टर श्री निकेत मंगल व मैनेजर श्रीमती प्रिया रघुवंशी ने पधारे सभी अतिथियों व प्राप्ट्री बोकर्स का स्वागत व आभार प्रकट किया। सोना–उगले मिट्टी व घरौंदा के श्री देवराज चौधरी इस कार्यक्रम में विशेष रुप से उपस्थित थे।

रस्सीवाला इंटरप्राईजेस
पता : कोर्ट चौराहा, बड़नगर (456771) जिला- उज्जैन (म.प्र.)
इकबाल हुसैन : 9826287335, कमल भाई : 9981723786
Hyveg
Seminis
SIDDHANT SEEDS
Power of Growth
SAFAL BIO
bella seeds
Remik
सहयोगी संस्थान : नाकोडा इंटरप्राईजेस
कमला नगर, पांचाल कम्पाउड, देवास नाका, इन्दौर

राधे राधे
बीज भण्डार
उच्च स्तरीय कम्पनियों के कृषि बीज, कीटनाशक दवाईयाँ,
पशु चारा, बीज एवं स्प्रे पम्प के विक्रेता
पता-स्टेशन रोड़, महिदपुर रोड़, तह. महिदपुर जि.उज्जैन (म.प्र.)
सोनू दाँगी : 7898213095

प्रो.प्रीतम मेवाड़ा
9981537467
अरविंद मेवाड़ा
9993898116
माँ सामल
कृषि सेवा केंद्र
ड्रिप मल्चिंग,उत्तम किस्मों के बीज, कीटनाशक, खरपतवार नाशक
दवाईयाँ,स्प्रे पम्प,प्लास्टिक आयटम आदि के थोक एवं फुटकर विक्रेता
पता- रेस्ट हाउस के सामने रंजीतसिंह कांप्लेक्स, गल्ला मंडी सीहोर

प्रगतिशील किसानों की पहली पसंद...
श्री बालाजी
कृषि सेवा केन्द्र
अलीपुर रोड, आष्टा, तह. आष्टा, जिला-सिहोर
प्रोप्रा. : भूरु मेवाडा, मो. : 97554 83616

KHS
प्रोप्रा. : अरुण खण्डेलवाल
मो. : 99260 77377
खण्डेलवाल
हाईवे सर्विसेस
उज्जैन रोड़, सांवेर, जिला-इन्दौर (म.प्र.)
khandelwalhighwayservices77@gmail.com
अधिकृत विक्रेता
syngenta
FMC
BASF
Coromandel
CORTEVA agriscience
BAYER
SUMITOMO CHEMICAL Co., Ltd
IFFCO

श्रीराम कृषि सेवा केन्द्र
कृषि किटनाशक दवाईयाँ
खाद एवं उन्नत बीज के विक्रेता
स्टेशन रोड़, लाल घाटी, उन्हेल, जि.उज्जैन (म.प्र.)
प्रोप्रा. : ईश्वर मण्डावलिया

सर्वोदय खाद केन्द्र
SUMITOMO CHEMICAL
ADAMA
IPL
प्रो: विवेक वाणी 94250 52977
हेड ऑफिस : 671, ए.बी. रोड, राऊ
0731—2856400

vfHk"ksd nqcs
9826034545] 0731-2702545
vafdr nqcs
9826670545] 0731-4009545
श्री सच्चिदानंद कृषि सेवा केन्द्र
बापू दादा बीज वालों की दुकान
बीज एवं कीटनाशक दवाईयों के थोक विक्रेता
syngenta
MITHAS
DU PONT
UPL
ADAMA
US Agriseeds
Taishita
107, देवघर कॉम्पलेक्स, नसिया रोड,
पेट्रोल पम्प के पास, इन्दौर

गजेन्द्रसिंह तँवर
9407175123
बागवाला केंचुआ खाद
केंचुए के साथ खाद बनाने की ट्रेनिंग भी दी जाती है।
ग्राम – बेरफड़ बुजुर्ग तह. बड़वाह, जिला–खरगोन म.प्र.

भुँवासा स्टार
एग्रो फार्मर प्रोड्युसर कम्पनी लिमिटेड
खाचरौद रोड़, भाटपचलाना, बड़नगर जि. उज्जैन
मो. : 97544 73985, 96175 90716
प्रोप्रा. : संजय राठौड़

TEXMO
प्रणय जैन, प्रत्युष जैन
AQUATEX
Mob: 98269 74211, 87705 20677
75879 64000, 75879 65000
सर्वोदय मशीनरी
गंज बाजार, खण्डवा (म.प्र.) e-mail : pamayjain40@gmail.com
अधिकृत विक्रेता
TEXMO
AQUATEX
TATA PIPES
SWITCHGEAR

वर्षों से किसानों की सेवा में तत्पर...
नर्मदा एग्रो एजेन्सी
भवानी माता रोड़, खण्डवा, जिला–खंडवा (म.प्र.)
प्रोप्रा. : दीपक राठौर
मो. : 98273 17401
अधिकृत विक्रेता :
ADAMA
UPL
BAYER
RASI

पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री प्रहलाद पटेल लने प्रेस वार्ता में बताई दो वर्ष की उपलब्धियाँ

भोपाल। पंचायत एवं ग्रामीण विकास तथा श्रम मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने मिंटो हाल में आयोजित पत्रकार वार्ता में विभाग की दो वर्ष की उपलब्धियों से मीडिया को अवगत कराया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश सरकार ने ग्रामीण क्षेत्र के विकास हेतु सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ उल्लेखनीय उपलब्धियाँ अर्जित की है। मध्य प्रदेश में श्रमिकों के हित में भी अनेक उल्लेखनीय कार्य हुए हैं।

(श्री पटेल ने कहा कि भारत की संसद ने विकसित भारत–रोजगार और आजीविका मिशन (ग्रामीण) विधेयक, 2025 (विकसित भारत जी राम जी विधेयक, 2025) को पारित किया है। यह विधेयक मनरेगा में व्यापक वैधानिक बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है, जो ग्रामीण रोजगार को विकसित भारत 2047 के दीर्घकालिक विजन के साथ संयोजित करेगा तथा जवाबदेही, बुनियादी ढांचे के परिणामों और आय सुरक्षा को सुदृढ़ करेगा। गांव इस अवसर पर अपर मुख्य सचिव श्रीमती दीपाली रस्तोगी, पंचायत आयुक्त श्री छोटे सिंह, एमपीआरआरडीए के श्री दीपक आर्य, विकसित भारत रोजगार एवं आजीविका मिशन (ग्रामीण) के सीईओ श्री अवि प्रसाद, एडिशनल सेक्रेटरी श्री दिनेश जैन सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित थे।

प्रदेश में दिया जा रहा है प्राकृतिक खेती को बढ़ावा : कृषि मंत्री

भोपाल। प्रदेश में रासायनिक मुक्त एवं विष–रहित खाद उत्पादन को बढ़ावा देने की दिशा में एक अभिनव पहल के अंतर्गत सागर स्थित पी.टी.सी. ग्राउंड में जैविकध्प्राकृतिक हाट बाजार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में किसान कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री मंत्री श्री एदल सिंह कंषाना शामिल हुए। कृषि मंत्री श्री कंषाना ने कहा कि प्रदेश में प्राकृतिक एवं जैविक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। प्राकृतिक एवं जैविक खेती किसानों के साथ–साथ आमजन के स्वास्थ्य और पर्यावरण संरक्षण के लिए अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने किसान भाइयों से अपील की कि वे रासायनिक खादों के स्थान पर प्राकृतिक खेती को अधिक से अधिक अपनाएं, जिससे भूमि की उर्वरता बनी रहे और सुरक्षित, पौष्टिक खाद्यान्न का उत्पादन हो सके।

कृषि मंत्री श्री कंषाना ने कहा कि प्रदेश सरकार किसानों के हित में जैविक एवं प्राकृतिक खेती के माध्यम से किसानों को अपने उत्पादों के लिए बेहतर बाजार उपलब्ध होगा और उपभोक्तओं को शुद्ध एवं विष–रहित खाद्य सामग्री मिलेगी।

कृषि के क्षेत्र में प्रदेश लगातार कर रहा प्रगतिः श्री कंषाना

भोपाल। किसान कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री श्री एदल कंघाना सिंह ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दी के मार्गदर्शन एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में कृषि के क्षेत्र में लगातार प्रगति कर रहा है। हमारी सरकार विकास और सेवा के दो वर्ष पूर्ण कर मुख्यमंत्री डॉ. यादव का समृद्ध मध्यप्रदेश का सपना पूर्ण कर रही है। यह बात मंत्री श्री कंषाना ने जनसंपर्क संचालनालय के सभागार में आयोजित पत्रकार वार्ता में कही। इस अवसर पर कृषि सचिव श्री निशांत बरवड़े एवं मंडी बोर्ड के एमडी श्री कुमार पुरुषोत्तम सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित थे। कृषि मंत्री श्री कंषाना ने कहा कि मध्यप्रदेश आज देश के अग्रणी कृषि राज्यों में शामिल है। सोयाबीन एवं मक्का के उत्पादन में प्रदेश का देश में प्रथम स्थान है तथा गेहूं, उड़द, मसूर, चना, सरसों, कुल तिलहन, कुल दलहन, कुल अनाज और मोटा अनाज में मध्य प्रदेश का देश में द्वितीय स्थान है। यह हमारे किसानों की मेहनत और सरकार की किसान–हितैषी नीतियों का प्रतिफल है।

खरीदी केंद्रों पर व्यवस्थाएं सुदृढ़ रखें

सोनिया मीना

नर्मदापुरम। जिले में धान खरीदी सफलतापूर्वक संपन कराएं। खरीदी केंद्रों पर व्यवस्थाएं सुदृढ़ रखें। जिन समितियों द्वारा खरीदी में निर्देशों का अवहेलना और गंभीरता नहीं बरती जा रही हैं। उन्हें कारण बताओं नोटिस जारी करें। उक्त निर्देश कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना ने उपार्जन समिति के अधिकारियों को दिए हैं। कलेक्टर सुश्री मीना ने कलेक्ट्रेट में धान उपार्जन को विस्तार से समीक्षा की। उन्होंने निर्देश दिए की नागरिक आपूर्ति निगम द्वारा उपार्जित धान के स्वीकृक्ति पत्रक शोध तैयार किए जाए जिससे किसानों को अविलंब भुगतान किया जा सके। साथ हो जिन किसानों के स्वीकृति पत्रक तैयार किए जा चुके हैं उनको भी भुगतान की कार्यवाही सुनिक्षित की जाए। सहकारिता, वेयरहाउसिंग, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति निगम सहित अन्य जिला एवं खंड स्तरीय उपार्जन समिति के अधिकारी अपने क्षेत्र के केंद्रों का सतत निरीक्षण करें और व्यवस्थित रूप से धान खरीदी कराएं। जिन उपार्जन केंद्रों पर भंडारण क्षमता पूर्ण हो गई वहां से जेवीएस गोदामों में धान का परिवहन भी सुनिश्चित किया जाए ।

प्राकृतिक खेती करती है जीवन की रक्षा

रीवा। विंध्य की धरती आज एक बार फिर ऐतिहासिक क्षण की साक्षी बनी, जब देश के केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह रीवा पहुंचे सेमरिया विधानसभा क्षेत्र के बसामन मामा स्थित गौ अभ्यारण्य में आयोजित भव्य किसान–कृपक सम्मेलन में केंद्रीय गृह मंत्री ने प्राकृतिक खेती प्रकल्प का आवलोकन किया. साथ ही लोगों से प्राकृतिक खेती करने की अपील की. इस अवसर पर अमित शाह ने प्राकृतिक खेती से जुड़े विभिन्न आयामों का भी अवलोकन किया. कृषक सम्मेलन कार्यक्रम में प्रकल्प के अंतर्गत परंपरागत बीजों का संरक्षण, गोमूत्र व गोबर से निर्मित जैविक खाद व कीटनाशक, अंतवर्तीय फसल प्रणाली, औषधीय पौधों की खेती और फलोद्यान विकास जैसे नवाचारों को किसानों के सामने पेश किया गया. यह प्रोजेक्ट न केवल पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अहम कदम है, बल्कि किसानों की आय बढ़ाने का भी सशक्त माध्यम बनेगा।

कृषि सम्मेलन एवं गौ वन्य बिहार का गृह मंत्री ने किया अवलोकन

अमित शाह ने बसामन मामा गौअभ्यारण्य में प्राकृतिक खेती के लिए बनाए गए प्रकल्प व कृषि सम्मेलन एवं गौ वन्य बिहार का अवलोकन किया. अमित शाह ने कहा कि भरित रत्न अटल बिहारी वाजपेयी की जन्म जयंती है. यह रीवा क्षेत्र अटलजी के सबसे प्रिय क्षेत्र में था, जब वह प्रधानमंत्री बने, उनके जो वाहन चालक थे वह यही रीवा के बहादुर सिंह थे ।

मनोज सक्सेना प्रचार प्रमुख बने

भोपाल। भारतीय किसान संघ भोपाल संभाग की बैठक संभागीय अध्यक्ष बिसन सिंह बघेल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई बैठक में पूरी संभाग की कार्यकारिणी उपस्थित रही। प्रान्त संगठन भरत पटेल द्वारा कार्यकर्ताओ से चर्चा कर विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन किया। बैठक में विभिन्न आयामों के लिए – संभाग के प्रभारी नियुक्त किए गए। इस बैठक में दो नवीन दायित्वों की घोषणा भी की गई। मनोज सक्सेना भोपाल से – संभागीय प्रचार प्रमुख एवं अरविंद पटेल भोपाल से नगर प्रचार – प्रमुख का दायित्व का निर्वहन करेंगे।

राष्ट्रीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान द्वारा राष्ट्रीय किसान दिवस एवं सोया कृषक मेला का आयोजन नवीनतम उन्नत सोयाबीन किस्मों के बीज का वितरण

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (भा.कृ.अनु.प.) के अंतर्गत राष्ट्रीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इंदौर द्वारा आज राष्ट्रीय किसान दिवस एवं सोया कृषक मेला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं राजस्थान से संस्थान के लगभग 150 अधिकारी–कर्मचारियों एवं 300 कृषकों ने सहभागिता की। कार्यक्रम का स्वागत भाषण डॉ बी.यू. दुपारे द्वारा दिया गया। इस अवसर पर आयोजित कृषक संगोष्ठी में किसानों ने अपने अनुभव साझा किए। परिचर्चा के दौरान सोयाबीन में पीला मोजेक वायरस रोग को प्रमुख समस्या के रूप में चिन्हित किया गया । इस वर्ष संस्थान के सोयाबीन बीजोत्पादन कार्यक्रम के अंतर्गत अधिक उत्पादन प्राप्त करने वाले कृषकों को सम्मानित किया गया। इनमें मध्यप्रदेश से श्री दशरथ शंकरलाल सोनगरा (रतनखेड़ी, जिला इंदौर), श्री मुकेश बलदेव राठौर एवं श्री सोहन सिंह पटेल (बेटमा खुर्द, जिला इदौर), श्री धर्मेन्द्र सिंह सोलंकी (बारखेड़ा, जिला उज्जैन), महाराष्ट्र के अमरावती जिले से श्री नरेन्द्र काशिराव शिंगणे तथा राजस्थान के झालावाड़ जिले से श्री मुकेश पाटीदार शामिल हैं। इस अवसर पर संस्थान की वैज्ञानिक डॉ. नेहा पांडे ने सोयाबीन के प्रसंस्करण विषय पर व्याख्यान दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. के.एच. सिंह ने बताया ।

सोना-उगले मिट्टी एवं मोबिएड डिजिटल ऑफिस में दिवाली उत्सव सम्पन्न

विगत दिनो दिवाली के शुभ अवसर पर सोना–उगले मिटटी एवं मोबिएड डिजिटल ऑफिस में दिवाली उत्सव सम्पन्न हुआ। श्री देवराज चौधरी व श्री देवांशु चौधरी ने अपने–अपने ऑफिस का पूजन श्री जीवनलाल जोशी से सम्पन्न कराया एवं स्टॉफ मेम्बर्स को मिठाई व उपहार दिये।

समर्थन मूल्य के अंतर की राशि का भुगतान राज्य सरकार करेगी

भोपाल। किसान कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री श्री एदल सिंह कंषाना ने कहा है कि भावांतर भुगतान योजना भारत सरकार की प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान अंतर्गत प्राईस डिफिसिट स्कीम के तहत संचालित की जा रही है। प्रदेश के किसानों की खरीफ 2025 में उत्पादित सोयाबीन उपज मंडियों में नीलामी प्रक्रिया के माध्यम से विक्रय होने पर विक्रय दरध्मॉडल प्राइस से प्राप्त राशि एवं न्यूनतम समर्थन मूल्य के अंतर की राशि की प्रतिपूर्ति मध्यप्रदेश शासन द्वारा की जाना है। इस योजना के अंतर्गत समर्थन मूल्य तथा मॉडल प्राईस की भावांतर की राशि का भुगतान भारत सरकार ध्राज्य सरकार द्वारा किया जायेगा। मंडी समिति में किसानों द्वारा अपनी सोयाबीन उपज नीलामी किये जाने के उपरांत व्यापारी द्वारा राशि का भुगतान उसी दिन किसान को किया जायेगा। किसानों को शासन द्वारा देय भावांतर राशि का भुगतान समय–सीमा में करने के लिए मंडी बोर्ड द्वारा अस्थाई रूप ऋटा की व्यवस्था की जायेगी, जिसकी प्रतिपूर्ति भारत सरकारध्राज्य सरकार द्वारा निर्धारित समय अवधि में जायेगी। इस योजना के तहत मंडी बोर्ड पर किसी तरह का अतिरिक्त व्यय–भार नहीं आयेगा।

सोलर पंप के लिए किसानों को मिलेगा 90% तक अनुदान

भोपाल। मध्य प्रदेश के किसानों के लिए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने एक और महत्वपूर्ण घोषणा की है। अब राज्य सरकार सोलर पंप स्थापना के लिए किसानों को 90: तक सब्सिडी प्रदान करेगी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने यह घोषणा मुख्यमंत्री निवास, भोपाल में सोयाबीन पर भावांतर भुगतान के उपलक्ष्य में आयोजित किसान आभार सम्मेलन में की।

उल्लेखनीय है कि इसके पूर्व किसानों को केवल 60 प्रतिशत अनुदान दिया जा रहा था। इस योजना के अंतर्गत किसानों को उनकी वर्तमान विद्युत पंप क्षमता से एक स्तर अधिक क्षमता वाला सोलर पंप दिया जाएगा।

श्री टी.सी. छाबनिया को परियोजना संचालक आत्मा धार का अतिरिक्त प्रभार

भोपाल। राज्य शासन द्वारा सहायक संचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग धार. श्री टी.सी. छाबनिया को वर्तमान पदीय दायित्वों के साथ अस्थायी रूप से आगामी आदेश तक परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला धार के पद का प्रभार अतिरिक्त रूप से सौंपा गया है।

मीत व विशाखा बंधे दाम्पत्य सूत्र में

विगत दिनों इंदौर के प्रतिष्ठित सलूजा परिवार में स्व. नरेन्द्र सिंह सलूजा के बेटे व सरदार भूपिन्द्र सिंह के पोते व श्रीमती प्रिया चाहत कपूर के भतीजे का शुभ विवाह श्री राजेश वाधवानी की पुत्री सौ. कां विशाखा से बायपास स्थित होटल प्राईड में धूम धाम से सम्पन्न हुआ । दूर दराज से पधारे रिश्तेदारों, नगर के गणमान्य नागरिकों ने उपस्थित हो वर–वधू को शुआर्शीवाद दिया। सोना–उगले मिट्टी परिवार की और से श्री देवराज चौधरी ने अपनी शुभकामनाएँ प्रोषित की ।

श्री देवांशु चौधरी हुए 35 वर्श के

सोना उगले मिटट्ी के प्रधान सम्पादक श्री देवराज चौधरी के पुत्र व मोबडिजिटल, धार्मिक देव व अन–फिल्टर्ड यूटयूब चैनल के स्वामी श्री देवांशु चौधरी का परिवार व स्टाफ के मेम्बर्स ने 35 वाँ जन्म दिन केक काटकर धूमधाम से मनाया व उन्हें बधाई प्रेषित की।

विगत दिनो इन्दौर के स्कीम 94 पर होटल एवेन्टस (Aventus) का पूजन आरती के साथ भव्य शुभारंभ हुआ होटल मालिक श्री महेंद्र दिवाकर, श्री ऋषि दिवाकर व मेनेजर कुंदन जी ने सभी अतिथियो का स्वागत किया एवं बताया कि इस होटल में यात्रियो के लिए सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं। सोना–उगले मिटट्ी के प्रधान संपादक श्री देवराज चौरधी व अन्य अतिथियो ने उपस्थित होकर श्री दिवाकर बंधुओ को बधाई प्रेषित की।

अब हर साल होगा इंदौर में किशोर अलंकरण समारोह

सुनिए महापौर जी। दिल जीत लिया आपकी घोषणा ने । अब हर साल होगा इंदौर में किशोर अलंकरण समारोह, नगर निगम बनेगा आयोजन का सारथी।

आज शाम 6 से रात 11 बजे तक इंदौर क्रिश्चियन कॉलेज में चले मूर्धन्य गायक किशोर कुमार के अलंकरण समारोह में जब महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने किशोर अलंकरण में गायक राजेश अय्यर (मुंबई) को प्रथम किशोर अलंकरण देकर सम्मानित किया तो किसी को उम्मीद नहीं थी कि महापौर इंदौर पुष्यमित्र भार्गव हजारों इन्दौरियंस श्रोताओं के बीच यह घोषणा भी कर देंगे कि इंदौर में किशोर अलंकरण समारोह अब हर साल आयोजित किया जाएगा ।नगर निगम इंदौर बनेगा उसका सारथी । महापौर जी ने कहा कि निगम में अब इस आयोजन को भव्यता देने के लिए बजट का प्रावधान किया जाएगा। उनकी द्वारा की गई घोषणा पर 5 हजार से अधिक श्रोताओं ने करतल ध्वनि से उनका स्वागत किया। सबसे खास बात अपनी घोषणा के पूर्व महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने मंच से अपने संबोधन में कहा कि इंदौर लताजी की जन्मस्थली है तो अपनी आवाज से करोड़ों दिलों पर राज करने वाले किशोर दा की कर्मस्थली भी, जहां उन्होंने खुदको तैयार किया। आयोजन में आई किशोर दा की पोती मुक्तिका गांगुली को सम्मानित करते हुए उन्होंने कहा कि इंदौर क्रिश्चियन कॉलेज किशोर दा कर्मभूमि है,हमे गर्व है कि उनका नाम इंदौर से जुड़ा है।

999
Brand Sortex Cleaned Gram Dall
लखन इण्डस्ट्रीज
उच्च क्वालिटी चना दाल के निर्माता एवं विक्रेता
प्लांट नं. 2-ए-1, धार रोड़ स्कीम नं. 71, चंदन नगर चौराहा, इन्दौर फोन: 0731-2382008/9
मो.: 94250-53899, 94250-64199

For True Stories Kindly Visit Us On:
AAPKI KHETI आपकी खेती

भारत को कॉमनवेल्थ गेम्स 2030 की मेजबानी दृ मुख्यमंत्री साय ने इसे बताया भारत के खेल जगत से जुड़ा एक और स्वर्णिम अध्याय

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने भारत को कॉमनवेल्थ गेम्स 2030 की मेजबानी मिलने पर हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि यह निर्णय भारत के बढ़ते वैश्विक प्रभाव, खेल के क्षेत्र में नई ऊर्जा और हमारे खिलाडियों की लगातार बढ़ती उत्कृष्टता का सम्मान है। मुख्यमंत्री ने इस उपलब्धि को भारत के खेल इतिहास में जुड़ा स्वर्णिम अध्याय बताया और कहा कि यह हर भारतीय के सपनों को नया पंख देने वाला क्षण है। मुख्यमंत्री ने अपने एक्स पोस्ट में लिखा कि कॉमनवेल्थ गेम्स 2030 की मेजबानी मिलना करोड़ों भारतीयों की उम्मीदों, जज्बे और जुनून का सम्मान है। उन्होंने कहा कि यह घोषणा उत्साह की नई लहर लेकर आई है। यह अवसर देश के हर बच्चे, हर युवा और हर खिलाड़ी को अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी प्रतिभा दिखाने की प्रेरणा देगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत खेल महाशक्ति के रूप में उभर रहा है और यह मेजबानी उसी यात्रा का महत्वपूर्ण पड़ाव है।

AAPKI KHETI
ADVERTISEMENT RATE CARD
आपकी खेती
www.aapkikheti.com info@aapkikheti.com +919827282081

NO.	DESCRIPTION	SIZE	RATE	PLACEMENT
01.	Homepage Top Banner (Leaderboard)	728x90 (Desktop) / 320x90 (Mobile)	₹50,000/month	Top of the homepage (high visibility)
02.	Homepage Sidebar Banner	300x250/ 300x600	₹30,000/month	Right-hand side of homepage
03.	In-Blog Banner (After First Paragraph)	728x90/ 468x60	₹25,000/month	Inside blog posts (high engagement)
04.	Footer Banner (All Pages)	728x90/ 468x60	₹25000/month	Bottom section of every page
05.	Article Sponsorship/ Featured Blog		₹ 20,000 per blog	A featured blog shared across our social media

विकसित भारत–जी राम जी योजना से रोजगारयुक्त गांव बनेंगे : चौहान

नागौर। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने राजस्थान में नागौर की मेड़ता सिटी में वृहद किसान सम्मेलन में विभिन्न योजनाओं के तहत किसानों के बैंक खातों में सहायता राशि हस्तातंरित की। इस अवसर पर राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा, राजस्थान के कृषि मंत्री डॉ. किरोड़ी लाल मीणा, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री श्री अविनाश, राजस्व राज्य मंत्री श्री विजय सिंह, किसान आयोग के अध्यक्ष श्री सी. आर. चौधरी, सांसद सुश्री महिमा कुमारी, विधायक श्री लक्ष्मण राम जी कलरू भी उपस्थित रहे। श्री चौहान ने कहा कि राजस्थान में कृषि क्षेत्र में तेजी से विकास हो रहा है।

इफको द्वारा कृषि अधिकारियों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण का किया गया आयोजन

मुरैना जिले के कृषि अधिकारियों के लिए आज एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें 115 कृषि अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉक्टर जे सी गुप्ता, प्रमुख कृषि विज्ञान केंद्र मुरैना थे तथा विशिष्ट अतिथि श्री श्री अनंत सरैया, उपसंचालक कृषि मुरैना थे स कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री दिनेश कुमार सोलंकी राज्य विपणन प्रबंधक इफको भोपाल ने की। कार्यक्रम में आधुनिक नवीन टेक्नोलॉजी नैनो उर्वरकों के इफको द्वारा विकास एवं किसान हित में जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ाने तथा फसलों की पैदावार बढ़ाने के लिए नैनो ताकनिकी से बने उर्वरकों के उपयोग करने की सलाह दी गई। कार्यक्रम में सर्वाधिक उपयोग करने वाले नैनो उर्वरकों से संतुष्ट किसानों के द्वारा भी अपने अनुभव प्रस्तुत किए गए कार्यक्रम में तकनीकी जानकारी डा बी एस कँसाना, वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केंद्र मुरैना द्वारा दी गयी। श्री अनंत सरैया, उप संचालक, कृषि, मुरैना द्वारा अपने उदबोधन में कृषि फील्ड स्टाफ को अधिक से अधिक तकनिकी जानकारी अपडेट कर किसानों को सही सलाह देने पर जोर दिया तथा रासायनिक खादों के उपयोग को घटाने के लिए किसानों को जाग्रत करने का संकल्प लेने की बात कही। श्री दिनेश कुमार सोलंकी, राज्य विपणन प्रबंधक, इफको भोपाल द्वारा जमीन में जैविक कार्बन बढ़ाने पर जोर दिया तथा नैनो उर्वरकों का उपयोग बढाकर परंपरागत खादों की खपत घटाने की विधियों पर चर्चा की। डा. जे. सी. गुप्ता, प्रमुख, के वी के, मुरैना ने अपने उदबोधन में संतुलित उर्वरक प्रबंधन पर जोर देते हुए सल्फर एवं जिंक की उपयोगिता पर जोर दिया गया । कार्यक्रम का संचालन डा. बी. एस. जादौन, मुख्य क्षेत्र प्रबंधक, इफको, मुरैना द्वारा किया गया। कार्यक्रम आयोजन में सहयोग श्री प्रदीप शर्मा, विक्रय अधिकारी, इफको बाजार ने किया गया ।

राष्ट्रीय किसान दिवस पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

(IARI) पूसा नई दिल्ली द्वारा आयोजि कार्यक्रम में कृषि कार्य में दक्षता बढ़ाना शारीरिक मेहनत कम एवं कम लागत में यंत्रीकरण के माध्यम से मुनाफा बढ़ाना विषय पर चर्चा में प्रगतिशील किसान श्री अश्वनी सिंह को मुख्य पैनलिस्ट के रूप में मंचासीन होने का सुअवसर प्राप्त हुआ । श्री बैसो धाकड़ को भी मधुमक्खी पालन (शहद) के क्षेत्र में पुरस्कार से नवाज़ा गया।

Devanshu Chaudhary was Awarded At Influencer Meet 2025 For DhaarmikDev

इंदौर में 92.7 BIG FM का फेलिसिटेशन इवेंट, 'धार्मिक देव' और 'Unfiltered With Dev' को मिला सम्मान इंदौर। 92.7 BIG FM द्वारा आयोजित फेलिसिटेशन सेरेमनी में शहर के प्रभावशाली और प्रेरणादायी डिजिटल क्रिएटर्स को सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में 'धार्मिक देव' और 'Unfiltered With Dev' को डिजिटल एवं सोशल मीडिया क्षेत्र में उनके महत्वपूर्ण और प्रभावशाली योगदान के लिए पुरस्कार प्रदान किया गया।

यह सम्मान डॉ. सीमा अलावा, अतिरिक्त पुलिस उप महानिरीक्षक (Additional Deputy Commissioner of Police), इंदौर द्वारा प्रावासा होटल, ए.बी. रोड पर आयोजित कार्यक्रम में यूटयूबर **श्री देवांशु चौधरी** को दिया गया।

BIG FM ने इस अवसर पर कहा कि इंदौर के क्रिएटर्स अपनी सकारात्मक सोच, गुणवत्ता और प्रभावशाली कंटेंट के माध्यम से पूरे शहर का नाम रोशन कर रहे हैं।

भारत एग्री टेक किसान मेले में कृषि रसायन ने मचाई धूम

भारत एग्री टेक किसान मेला में कृषि रसायन एक्सपोर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड की प्रभावशाली भागीदारीकृषि रसायन एक्सपोर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड ने भारत एग्री टेक किसान मेला में लगातार तीन दिनों तक अपना स्टॉल स्थापित कर किसानों को कंपनी के विभिन्न उन्नत कृषि उत्पादों की जानकारी प्रदान की। मेले में किसानों की भागीदारी अत्यंत उत्साहजनक रही। कृषि रसायन के स्टॉल पर 3ए000 से अधिक किसानों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और कंपनी के उत्पादों जैसे पौषक सुपर स्टारए के मैक्स एनर्जीए क्रि केलमैक्सए कोक्सी 55ए की शील्डए आदिए उनकी उपयोगिता एवं लाभों के संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त की। किसानों ने कंपनी की तकनीकों और समाधानों में विशेष रुचि दिखाई तथा मार्गदर्शन को सराहा। यह सहभागिता किसानों और कंपनी के बीच मजबूत संवाद और विश्वास का संदेश देती है।

भारत एग्रीटेक किसान मेले में सिमरन कम्बाइन्स पर उमडी भीड

विगत दिनो इंदौर में भारत एग्रीटेक कृषि मेले के दौरान सोना–उगले मिट्टी के प्रधान सम्पादक श्री देवराज चौधरी की सौजन्य भेंट सिमरन कम्बाइन्स, नामा (पंजाब) के सरदार कुलविंदर सिंह से हुई, आपने बताया की मुंडे इन्जीनियरिंग वर्क्स में निर्मतः

भारत की पहली मशीन है जो हर फसल की कटाई और साथ में घूसा भी बनाती है।

गीली फसले द्यान, मक्का, मूंग सोयाबीन खडी फसलो की कटाई भी करती है।

अधिक जानकारी के लिये

8437607600 पर सम्पर्क करें।

पंजाब इंजीनियरिंग तीन पीढ़ियों से देश-विदेश में कर रहा मशीनों की सप्लाई

इंदौर: शहर की पंजाब इंजीनियरिंग ने 60 सालों से भी अधिक समय से अपने गुणवत्तापूर्ण औद्योगिक मशीनरी उत्पादों के साथ बाजार में खास जगह बनाई है। तीन पीढ़ियों से भारत के विभिन्न राज्यों सहित यूके, यूएस, आस्ट्रेलिया, नेपाल, केन्या, बांग्लादेश आदि जैसे देशों में मशीनों की सप्लाई के साथ पंजाब इंजीनियरिंग एक भरोसेमंद ब्रांड बनी हुई है। कंपनी द्वारा बनाई गई ईफेक्ट पल्वराइजर्स, मिक्सर्स, ग्राइंडर्स, फ्लोर मिल्स, राइस मिल्स जैसी वाइड रेंज मशीनों की विस्तृत रेंज के साथ ही आटोमैटिक स्पाइसेस (मसाला), नमकीन मेकिंग मशीनों, कोल्हू प्रेस आयल एक्सपेलर्स, पाल्ट्री और केटल फीड, पिकिलिंग ग्राइंडर्स आदि की बहुत मांग है। नए साल में कंपनी ने बहुत छोटे आर्डर्स के अलावा 1000 आटा चक्की मशीनों का सिंगल आर्डर पाया है और उसके कारोबार में 25 प्रतिशत तक की वृद्धि भी हुई है। 1963 में सरदार बीरेन्द्र सिंह खालसा द्वारा शुरू की गई कंपनी को अब उनके बेटे मनविंदर सिंह और पोते जसलीन सिंह ने आगे बढ़ाया है। मनविंदर सिंह बताते हैं कि हमने घरेलू बाजार के बाद 1980 से विदेशी बाजार में सप्लाई शुरू की। इस साल का बड़ा आर्डर हमें मध्यप्रदेश के ग्वालियर और झाबुआ के साथ जम्मू-कश्मीर के लिए मिला है।

पंजाब इंजीनियरिंग के संचालकगण।

सोना-उगले मिट्टी अब फेसबुक पर भी

sonauglemittimagzine@gmail.com

शोक संदेश

स्व. श्रीमती नीना देवी अग्रवाल

स्व श्री राम कुमार जी अग्रवाल एवं स्व. श्रीमती चमेली देवी अग्रवाल की पुत्रवधु **श्री विनोद अग्रवाल की धर्मपत्नी**, अर्चना, अदिति एवं अर्पित, तपन एवं वंशिका की माताजी और राजवीर की दादीजी

श्रीमती नीना देवी अग्रवाल

का देवलोक गमपन 15 जनवरी 2026 को हो गया। उनकी दिवंगत आत्मा की शांति के लिए **सोना–उगले मिट्टी परिवार** परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि **स्व. श्रीमती नीना देवी अग्रवाल** को अपने श्री चरणों में स्थान दे एवं शोक संतप्त परिवार को इस क्षति को सहने की क्षमता प्रदान करे...

शोकाकुल परिजन

प्रमिला अग्रवाल, पुरूषोत्तम जी एवं सुशील अग्रवाल, धर्मपाल एवं राजकुमारी अग्रवाल, संजय एवं मीना अग्रवाल

AGARWAL
Emerald

२ वर्षों में उद्यानिकी रकबे में हुई सवा 3 लाख हैक्टेयर की वृद्धि

भोपाल। सामाजिक न्याय, दिव्यांगजन कल्याण एवं उद्यानिकी और खाद्य प्रसंस्करण मंत्री श्री नारायण सिंह कुशवाह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन–2047 और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश को कृषि एवं उद्यानिकी के क्षेत्र में अग्रणी राज्य बनाने की दिशा में ठोस प्रयास किए जा रहे हैं। सामाजिक न्याय से लेकर कृषि उद्यानिकी तक, समावेशी विकास की मजबूत नींव है। उन्होंने प्रदेश में गत 2 वर्षों में उद्यानिकी और सामाजिक न्याय के क्षेत्र में हुए उपलब्धियों, नवाचारों और आगामी 3 वर्षों में विभाग की कार्य योजनाओं के संबंध में अवगत कराया। इस अवसर पर अपर मुख्य सचिव उद्यानिकी एवं जनसंपर्क श्री अनुपम राजन, उद्यानिकी आयुक्त एवं एमपी एग्रो के एमडी श्री अरविंद दुबे सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित थे।

वर्ष 2026 रू कृषि वर्ष

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा वर्ष 2026 को कृषि वर्ष घोषित किया गया है। इसके अंतर्गत उद्यानिकी को बढ़ावा, खाद्य प्रसंस्करण से मूल्य संवर्धन और रोजगार सृजन के माध्यम से किसानों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि सुनिश्चित की जाएगी।

एग्रोविजन 2025 नागपुर कृषि मेला धुमधाम से सम्पन्न

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी एग्रोविजन, नागपुर कृषि मेला धूमधाम से सम्पन्न हुआ, कई प्रतिष्ठित कंपनियो ने अपने स्टाल लगाकर मेले में चार चांद लगाये। केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित थे। श्री नितिन गडकरी ने श्री शिवराज को मेले का अवलोकन कराया। सोना–उगले मिटट्री व धरती उगले सोना की टीम इस मेले में विशेष रूप से उपस्थित थी।

मध्यप्रदेश की फार्म–टेक इंडिया कृषि प्रदर्शनी 2025

इंदौर। प्रदेश और देश के किसानों, कृषि उद्योग से जुड़े उद्यमों एवं तकनीकी विशेषज्ञों के लिए रेडीकल कम्युनिकेशन्स द्वारा आयोजित फार्म – टेक इंडिया कृषि प्रदर्शनी 2025 का भव्य आयोजन 8 से 10 नवम्बर 2025 तक सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक लाभगंगा एग्जिबिशन सेंटर (लाभगंगा गार्डन), ए. बी. रोड बायपास, फीनिक्स मॉल के सामने, द पार्क होटल के बगल में, इंदौर में धूमधाम से सम्पन्न हुआ। यह प्रदर्शनी कृषि, डेयरी, सिंचाई, कृषि यंत्र, पशुपालन एवं जैव प्रौद्योगिकी जैसे विभिन्न क्षेत्रों पर आधारित थी। देश और विदेश की सैकड़ों अग्रणी कंपनियां अपने नवीनतम उत्पादों, तकनीकों और सेवाओं का प्रदर्शन किया। नई तकनीक और स्मार्ट फार्मिंग समाधान, आधुनिक कृषि यंत्र, ड्रोन और सिंचाई तकनीक, डेयरी, पशुपालन, बीज, खाद एवं ऑर्गेनिक खेती समाधान, विशेषज्ञों से मुफ्त सलाह और लाइव डेमो, किसानों ने लाभ उठाया। सोना–उगले मिट्टी की टीम उस मेले में विशेष रूप से उपस्थित थी।

SOLAR FAIR URBAN HAT, INDORE

जागरूकता रैली के साथ 3 दिनी जैविक महोत्सव व मिलेटस फूड फेस्टिवल धूमधाम से सम्पन्न...

विगत दिनो ग्रामीण हाट बाजार ढक्कन वाला कुंआ इंदौर में श्रीअन्न (मिलेट्स) फूड फेस्टिवल का शुभारंभ हुआ। यह महोत्सव 12 से 14 दिसंबर तक चलेगा। शुभारंभ के पूर्व श्रीअन्न के प्रति नागरिकों में जागरुकता बढ़ाने के उद्देश्य से रीगल चौराहे से ग्रामीण हाट बाजार तक मिलेट्स जागरूकता रैली का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के शुभारंभ में उपाध्यक्ष जिला पंचायत भारत ये रहे मौजूद सिंह पटेल, कंचन सिंह चौहान, जनक पलटा, महेश चौधरी, लक्ष्मीनारायण पटेल, राजेन्द्र पाटीदार, घनश्याम पाटीदार, वरदराज मंडलोई, उप संचालक कृषि सीएल केवडा, आत्मा परियोजना की शर्ती ग्रामस, रश्मि प्रचंड, संदीप यादव, विजय जाट, सहायक संचालक कृषि डीएस वर्मा, अनुविभागीय कृषि अधिकारी एसआर एस्के, राहुल मालवीय, जितेन्द्र पाटीदार, अधिकारी कृषि विभाग व आत्मा के उप संचालक कृषि श्री सी.एल. केवडा, आत्मा परियोजना की श्रीमती शर्ली थामस, श्रीमती रश्मि प्रचंड, संदीप यादव, विजय जाट, सहायक संचालक कृषि डी. एस वर्मा, अनुविभागीय कृषि अधिकारी एस. आर. एस्के, कृषि विकास अधिकारी श्री. शोभाराम आदि मंच पर उपस्थित थे।

फूड फेस्टिवल में पहली बार आने वाले लोगों के लिए सबसे बड़ा आकर्षण है–मिलेट्स से बने विभिन्न व्यंजन। ज्वार, बाजरा, कोदो, कुटकी जैसे अनाजों से बने डोसा, खिचड़ी, पिज्जा, हलवा, लड्डू और फ्यूजन डिशेज लोगों को सेहत और स्वाद का बेहतरीन मेल दे रही हैं। फेस्टिवल रोजा सुबह 10 बजे से रात 10 बजे तक चला।

महोत्सव की प्रदर्शनी में नीमच,

इंदौर, धार, बड़वानी समेत कई जिलों के जैविक किसान अपने अनोखे और शुद्ध उत्पाद लेकर पहुंचे है। नीमच के किसान भागीरथ नागदा अपनी ऑर्गेनिक अश्वगंधा और मसालों के कारण ध्यान खींचा । फेस्टिवल में आए लोगों का कहना है कि एक ही जगह पर इतने तरह के प्राकृतिक उत्पाद मिलना और किसानों से सीधे बातचीत करने का मौका मिलना इस कार्यक्रम की खास पहचान है। सोना–उगले मिट्टी की टीम उस मेले में विशेष रूप से उपस्थित थी।

SOLAR EXPO HOTEL SHERATON INDORE

इंदौर में होटल शेरेटन में 17,18 दिसम्बर को 'इंदौर ग्लोबल सोलर एक्सपो एवं सूर्यकॉन कॉन्फ्रेंसद्2025' का दो दिवसीय भव्य आयोजन किया गया,जिसमें पुरे भारत से कई नामी उद्योगपतियों की सोलर कम्पनियो ने अपने सोलर संबंधित उपकरणो का स्टॉल लगाकर सभी को उनकी जानकारी उपलब्ध करवाई गयी,सोलर एक्सपो में हमारी सोलर सोल्यूशन कंपनी उदयपुर,महिदपुर रोड़,रतलाम द्वारा भी अपना स्टॉल लगाकर आये हुए सभी विजिटर्स को अपने प्रोडक्ट की जानकारी उपलब्ध करवाई,जिसमें कंपनी के डायरेक्टर दिनेशजी पाटीदार,शशांक पाटीदार,आनंद पोरवाल,विजय पाटीदार,कीर्ति,अवनी,नेहा एवं ओलिवा लीथियम आयन बैटरी के मेन्युफैक्चरर जेनिल जी कोठारी अहमदाबाद,पैनासोनिक इन्चर्टर कंपनी के मध्यप्रदेश,राजस्थान के हेड अभिषेक जी शर्मा जयपुर उपस्थित थे..।

एक्सपो में मुख्य अतिथि मध्यप्रदेश शासन के नवीन एवं नवकरणीय केबिनेट ऊर्जा मंत्री श्री राकेश शुक्ला जी,केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराजसिंह चौहान के बेटे कार्तिकेय सिंह चौहान,कुणाल सिंह चौहान,म्फ सोलर एक्सपो के आयोजक आनंद गुप्ता, पंडित लोकेश शर्मा अधिकृत सलाहकार प्रमुख नीति विशेषज्ञ परामर्शदाता मुख्यमंत्री कार्यालय इंदौर,उत्साह ग्रुप के डायरेक्टर राजेंद्र धनोतिया,महिदपुर रोड़ से भरतजी शर्मा,राहुल बोथरा ने भी सोलर सोल्यूशन कंपनी के डायरेक्टर दिनेश पाटीदार से स्टॉल पर निरिक्षण के दौरान मुलाकात की और उपलब्ध उपकरणों के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त की दिनेश पाटीदार ने बताया की उनकी कंपनी सोलर सोल्यूशन कम्पनी पिछले 15 वर्षों से इस क्षेत्र में काम कर रही है यह भी बताया की आयोजन मध्यप्रदेश को नवकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में अग्रणी बनाने की दिशा में एक सशक्त पहल है,हरित ऊर्जा से आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को साकार करने हेतु हम सतत प्रयासरत हैं। सोना–उगले मिट्टी की टीम उस मेले में विशेष रूप से उपस्थित थी।

इंदौर में भव्य कृषि प्रदर्शनी का सफल समापन किसानों और कृषि व्यापार को मिली नई दिशा

इंदौर में आयोजित तीन दिवसीय भव्य कृषि प्रदर्शनी. भारत अग्री टेक 2026 का सफलतापूर्वक समापन हुआ। यह आयोजन किसानों कृषि उद्यमियों स्टार्टअप्स उद्योगों और नीति-निर्माताओं के लिए एक सशक्त मंच साबित हुआए जहां आधुनिक कृषि तकनीक नवाचार वित्तीय समाधान और विपणन के नए अवसरों पर व्यापक चर्चा और प्रत्यक्ष लाभ देखने को मिले। तीन दिनों में 2 लाख से अधिक किसानोंकी रिकॉर्ड उपस्थिति ने इस आयोजन की व्यापकता और सफलता को स्पष्ट रूप से दर्शाया।

युवा उड़ान फाउंडेशन द्वारा आयोजित इस कृषि मेले का उद्देश्य किसानो को आधुनिक तकनिकी कृषि के साथ फ़ूड प्रौसेसिंग वयवसाय और सरकार की योजनाओ की जानकारों एक मंच पर उपलब्ध करवाना था |

संस्था अध्यक्ष गोविन्द गोदारा, संरक्षक कपिल चौधरी और सीईओ विजय पाटीदार ने सभी किसान भाइयो और कम्पनियों का आभार माना | प्रदर्शनी में देश-विदेश की 400 से अधिक कंपनियोंने अपने स्टॉल लगाए जिनमें बीज उर्वरक ड्रिप व स्प्रिंकलर सिंचाई कृषि यंत्र ड्रोन तकनीक स्मार्ट एग्री सॉल्यूशंस डेयरी बागवानी जैविक खेती और मूल्य संवर्धन से जुड़े उत्पाद शामिल रहे। किसानों को एक ही मंच पर नई तकनीकों का लाइव प्रदर्शन विशेषज्ञों से मार्गदर्शन और तुलनात्मक जानकारी प्राप्त हुई जिससे उनकी निर्णय क्षमता मजबूत हुई। जिसमे सभी कंपनियों का ओवरआल 100 करोड़ से अधिक के बिजनेस का अनुमान है !

अनेक कंपनियों ने ऑन-द-स्पॉट एमओयू और ऑर्डर प्राप्त किए जिससे आयोजन की व्यावसायिक सफलता भी सिद्ध हुई।

आयोजकों प्रायोजकों विभागों प्रदर्शकों और स्वयंसेवकों के समन्वित प्रयास से यह आयोजन एकसफलता की कहानीबना। सुव्यवस्थित व्यवस्थाएँ किसानों के लिए निःशुल्क प्रवेश और अनुकूल वातावरण ने सहभागिता को बढ़ाया। आयोजक संस्था ने बताया कि भविष्य में भी ऐसे आयोजनों के माध्यम से किसानों उद्योग और सरकार के बीच सेतु बनाकर कृषि को समृद्ध बनाने के प्रयास जारी रहेंगे। कुल मिलाकर यह कृषि प्रदर्शनीकिसानों की आय वृद्धि कृषि व्यापार विस्तार और तकनीकी नवाचारको बढ़ावा देने वाला एक ऐतिहासिक और प्रभावशाली आयोजन सिद्ध हुई। सोना–उगले मिट्टी की टीम इस मेले में विशेष रूप से उपस्थित थी ।

KRISHI YANTRA
APOGEE

Future Communication
मध्य भारत की सबसे बड़ी औद्योगिक प्रदर्शनी
Industrial
ENGINEERING
XPO
RAIPUR
21 22 23 24
NOVEMBER 2025
INDORE
27 28 01 02
FEBRUARY | MARCH 2026
For Stall Booking Contact :
Devraj Chaudhary 98260 55852 72249 43188
Mansi Soni 9826023769
Rachna Pachorkar 9516767380
Raj Sanodiya 7987206448
Piyush Sanodiya 9302821297
Rashmi Sharma 9111486377

India's Leading EXHIBITION on
krishi
EXPO
13-14-15 March
Parade Ground, Sector -17
CHANDIGARH
For Stall Booking Contact :
Devraj Chaudhary 98260 55852 72249 43188
Mansi Soni 9826023769
Rachna Pachorkar 9516767380
Raj Sanodiya 7987206448
Piyush Sanodiya 9302821297
Rashmi Sharma 9111486377

इंदौर में मैक इन इंडिया–मेड इन इंडिया इंडस्ट्रियल एक्सपो सम्पन्न।

मैक इन इंडिया-मेड इन इंडिय इंडस्ट्रियल एक्सपो का शुभारंभ जब एक इंजीनियर के द्वारा हों तो उसका एक विशेष ही महत्व हेइंदौर महानगर के प्रिय, हँसमुख, मिलनसार और जनता में सदा उपलब्ध रहने वाले सांसद साथ ही इंजीनियर श्री शंकर लालवानी जी द्वारा ९ जनवरी, शुक्रवार को दोपहर १ बजें-मध्य प्रदेश के सभ से बड़े इंडस्ट्रियल एक्सपो का शुभारंभ किया गया इस अवसर पर भाजपा व्यापारी प्रकोष्ठ के सह मीडिया प्रभारी तथा महारानी ट्रेडर्स एसो एसोसिएशन के अध्यक्ष जितेन्द्र रामनानी ने बताया कि आदरणीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी के सूत्र मेक इन इंडिया मेड़ इन इंडिया के तारतम्य में आत्म निर्भर भारत तथा यशस्वी मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव जी के निर्देशानुसार आत्म निर्भर मध्य प्रदेश के तहत् एक्सपो का आयोजन किया गया हे | एसोसिएशन ऑफ़ इंडस्ट्री के तत्वाधान में अध्यक्ष योगेश मेहता,सचिव तरुण व्यास एवं महारानी रोड ट्रेडर्स एसोसिएशन से अध्यक्ष जितेंद्र रामनानी,सचिव जय जेठवानी, उपाध्यक्ष नंदकिशोर मेंघानी,जनकार्य प्रभारी नितिन गोयल न्यू सियागंज व्यापारी एसोसिएशन से अध्यक्ष विशेष जायसवाल,सचिव अरुण पटेल पम्प इंडिया वाल्व से सचिन जी तथा ३० से अधिक संस्थाओ के पदाधिकारी उपस्थित रहें २६० से अधिक स्टॉल संचालन के साथ-इस एक्सपो के आयोजक हे श्री अमेय नारायण गोखलें जी हे जिनके द्वारा इस इंडस्ट्रियल एक्सपो का सतत् १६ वा आयोजन वर्ष हे जिसमे आपको लघु एवं मध्यम इंडस्ट्री से संबंधित सभी उत्पादों की जानकारी एक ही छत के नीचे प्राप्त होगी। इस बहु उपयोगी इंडस्ट्रियल - इंजीनियरिंग एंड मैनुफैक्चरिंग एक्सपो का आयोजन इंदौर बायपास स्थित लाभ गंगा (होटल द पार्क) एक्ज़ीबिशन सेंटर पर किया गया हे ९ से १२ जनवरी २०२६ तक इस एक्सपो का लाभ अवश्य उठायें तथा अपने व्यवसाय-व्यापार - उद्योग में उन्नति की और |

सोना–उगले मिट्टी की टीम इस मेले में विशेष रूप से उपस्थित थी

SWADESHI AND OCTAVE FAIR PICS

DESIGN N'BUILD EXPO PICS

शोक संदेश

स्व. श्रीमती सतीश सहाय

विगत दिनो शूजाबाद परिवार की स्तंभ स्व. कर्नल बलदेव सहाय की धर्म पत्नी व श्री देवराज चौधरी की मामी जी का स्वर्गवास दिल्ली में हो गया। **सोना–उगले मिट्टी परिवार** परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि **स्व. श्रीमती सतीश सहाय** को अपने श्री चरणों में स्थान दे एवं शोक संतप्त परिवार को इस क्षति को सहने की क्षमता प्रदान करे...

|| ओम शांति ||

शोक संदेश

स्व. श्रीमती मंजू भार्गव

(जन्म 23.06.1943 – स्वर्गवास 04.11.2025)

धर्मपत्नी, स्वर्गीय श्री सतीश चंद्र जी, पेपर ट्रेड लिंक के श्री संदीप भार्गव की माता श्री अपनी सांसारिक यात्रा को पूर्ण करके मंगलवार 4 नवंबर कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी को प्रभु के श्री चरणों में लीन हो गई हैं। उनकी दिवंगत आत्मा की शांति के लिए **सोना–उगले मिट्टी परिवार** परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि **स्व. श्रीमती मंजू भार्गव** को अपने श्री चरणों में स्थान दे एवं शोक संतप्त परिवार को इस क्षति को सहने की क्षमता प्रदान करे...

|| ओम शांति ||

शोक संदेश

स्व. श्रीमती ब्रजराज कुमारी

विगत दिनो स्व. श्री जस्टिस चन्द्रपाल सिंह जी की धर्म पत्नी व अनंतपाल व गायत्री सिंह की माताजी श्रीमती ब्रजराज कुमारी का निधन हो गया। **सोना–उगले मिट्टी परिवार** परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि **स्व. श्रीमती ब्रजराज कुमारी** को अपने श्री चरणों में स्थान दे एवं शोक संतप्त परिवार को इस क्षति को सहने की क्षमता प्रदान करे...

|| ओम शांति ||

शोक संदेश

स्व. श्री बृजमोहन चोपड़ा

विगत दिनो जबलपुर के प्रतिष्ठित चोपड़ा परिवार में स्व. श्री रोशनलाल चोपड़ा के पुत्र, श्रीमती मधु व मंजू चौधरी व त्रृतु अरोरा के भाई व आस्तिक चोपड़ा के पिता, श्री देवराज चौधरी व भारत भूषण चौधरी के साले श्री बृजमोहन चोपड़ा का इन्दौर में निधन हो गया। **सोना–उगले मिट्टी परिवार** परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि **स्व. श्री बृजमोहन चोपड़ा** को अपने श्री चरणों में स्थान दे एवं शोक संतप्त परिवार को इस क्षति को सहने की क्षमता प्रदान करे...

|| ओम शांति ||

शोक संदेश

स्व. श्री हरबंसलाल नागपाल

विगत दिनो शूजाबाद परिवार के स्तंभ रिटायर्ड इंक्मटैक्स ऑफिसर श्री हरबंसलाल नागपाल जी का निधन हो गया। **सोना–उगले मिट्टी परिवार** परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि **स्व. श्री हरबंसलाल नागपाल** को अपने श्री चरणों में स्थान दे एवं शोक संतप्त परिवार को इस क्षति को सहने की क्षमता प्रदान करे...

|| ओम शांति ||

शोक संदेश

स्व. श्री धर्मेंद्र जी

भारतीय सिनेमा के एक युग का अंत कहा गया है, जिनकी सादगी, विनम्रता और शानदार अभिनय ने कई पीढ़ियों के दिलों को छुआ। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और कई अन्य हस्तियों ने उनके निधन को एक अपूरणीय क्षति बताया और दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की है। **सोना–उगले मिट्टी परिवार** परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि **स्व. श्री धर्मेंद्र जी** को अपने श्री चरणों में स्थान दे एवं शोक संतप्त परिवार को इस क्षति को सहने की क्षमता प्रदान करे...

|| ओम शांति ||

शोक संदेश

स्व. श्री नवाब सिंह कुशवाह

विगत दिनो साइंस कॉलेज ग्वालियर के पूर्व अध्यक्ष, म.प्र. वेयर हाउसिंग एंड लॉजिस्टिक में मैनेजर, श्रीमति मीरा (पत्नी), श्री बलबीर सिंह (पूर्व लोकसभा प्रत्याशी बसपा) (भाई), अभिषेक– दीक्षा (पुत्र–पुत्रवधु), सोनाली दिनेश (पुत्री–दामाद), शीतल – आनंद (पुत्री–दामाद) श्री नवाब सिंह कुशवाह का निधन हो गया है। **सोना–उगले मिट्टी परिवार** परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि **स्व. श्री नवाब सिंह कुशवाह** को अपने श्री चरणों में स्थान दे एवं शोक संतप्त परिवार को इस क्षति को सहने की क्षमता प्रदान करे...

|| ओम शांति ||

शोक संदेश

स्व. श्रीमती कुसुम पटेरिया

स्व. गोविन्दनायण पटैरिया की धर्म पत्नी, लक्ष्मीनारायण पटैरिया की पूज्यनीय माताजी, नेहुल, रितुल पटैरिया की दादी जी व राजेन्द्र चतुर्वेदी, लक्ष्मीनारायण पाठक की सासू मां, प्रकाश आदित्य नारायण, रमेश,महेश लिटौरिया की बड़ी बहन, रत्नेश भुवनेन्द्र, मन्नू, कपिस की बुआ जी का निधन हो गया है। उनकी दिवंगत आत्मा की शांति के लिए **सोना–उगले मिट्टी परिवार** परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि **स्व. श्रीमती कुसुम पटेरिया** को अपने श्री चरणों में स्थान दे एवं शोक संतप्त परिवार को इस क्षति को सहने की क्षमता प्रदान करे...

|| ओम शांति ||

शोक संदेश

स्व. श्रीमती आदर्श सहगल

विगत दिनो श्री संदीप सहगल की माताजी का स्वर्गवास हो गया हैं. आप बहुत ही धार्मीक एवं मिलनसार स्वभाव की महिला थी एवं श्रीमती मधु चौधरी की परम मित्र थी। **सोना–उगले मिट्टी परिवार** परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि **स्व. श्रीमती आदर्श सहगल** को अपने श्री चरणों में स्थान दे एवं शोक संतप्त परिवार को इस क्षति को सहने की क्षमता प्रदान करे...

|| ओम शांति ||

FORESTRY MEDICINAL PLANTS

Forwarded by
By Dr. JAGDISH PRASAD, IFS
Retd.Additional Principal Secretary
Advisor, Medicinal Plants,Gujrat
Mob.: 09978406168, 07923255816

Forestry medicinal plants are crucial for traditional/modern medicine, offering income and healthcare, but face threats from habitat loss (logging) and over-harvesting, highlighting the need for in situ/ex situ conservation, sustainable harvesting, and documenting indigenous knowledge to protect both biodiversity and cultural heritage, with studies finding valuable endemic species in old-growth forests and common ones in regrowth, showing forests as vital refuges and sources for remedies.

Key Themes in Forestry Medicinal Plant Articles:

Importance & Usage: Forests provide diverse medicinal plants (herbs, shrubs, trees) used for primary healthcare, contributing significantly to local economies (e.g., 64% of income for some communities) and modern drug discovery. Biodiversity & Threats: Old-growth forests shelter more vulnerable, economically important species, while logging degrades habitats, reducing diversity; unsustainable commercial extraction threatens key plants.

Chitrakoot: रानीपुर टाइगर रिजर्व खुला, 30 किमी सफारी में मिलेगा रोमांच

चित्रकूट। अगर आप प्रकृति और जंगल की खूबसूरती के दीवाने हैं, तो आपके लिए खुशखबरी है। उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जिले में स्थित रानीपुर टाइगर रिजर्व रविवार से पर्यटकों के लिए खोल दिया गया है। अब सैलानी यहां बाघ, तेंदुआ, हिरण, भालू और अन्य दुर्लभ वन्यजीवों को नजदीक से देखने का रोमांचक अनुभव ले सकेंगे।

30 किलोमीटर की सफारी यात्रा में मिलेगा जंगल का रोमांच

रानीपुर टाइगर रिजर्व में आने वाले पर्यटक लगभग 30 किलोमीटर लंबी सफारी यात्रा का आनंद उठा सकेंगे। इस दौरान वे टाइगर रिजर्व के भीतर बसे प्राकृतिक जंगलों में बाघ, तेंदुआ, भालू, हिरण और अन्य वन्यजीवों को देख पाएंगे। इस सफर के दौरान प्रकृति की नीरवता और जंगल की सरसराहट पर्यटकों को एक अनोखा अनुभव देगी।

'सोना-उगले मिट्टी' एक जानकारी

MEDIA PARTICULARS

Frequency	-	Monthly	Language	-	Hindi
Page	-	52	Size	-	A4
Prize	-	25/- Per Issue			

ADVERTISEMENTS RATES

SPACE	MULTI COLOUR	With Dharti Ugle Sona COMBINED ADVT.
➤ आवरण पृष्ठ	1,00,000/-	1,40,000/-
➤ आवरण पट्टी	25,000/-	40,000/-
➤ आवरण के अन्दर	70,000/-	1,00,000/-
➤ प्रथम पृष्ठ	70,000/-	1,00,000/-
➤ अन्तिम के अंदर पृष्ठ	70,000/-	1,00,000/-
➤ अन्तिम पृष्ठ	1,00,000/-	1,40,000/-
➤ मध्य पृष्ठ	1,00,000/-	1,40,000/-
➤ पूरा पृष्ठ	50,000/-	80,000/-
➤ आधा पृष्ठ	30,000/-	50,000/-
➤ चौथाई पृष्ठ	16,000/-	25,000/-
➤ 1/8 पृष्ठ	9,000/-	16,000/-
➤ 1/16 पृष्ठ	5,000/-	8,000/-

आकार एवं प्रकार	सोना साईज (से.मी. में)
आवरण पृष्ठ	19 H × 17 W.
आवरण पट्टी	04 H × 17 W.
पूर्ण पृष्ठ	24H × 17 W.
आधा पृष्ठ (क्षितिज)	12 H × 17 W.
आधा पृष्ठ (ऊर्ध्वाधर)	24 H × 8 W.
मध्य का पृष्ठ (डबल पृष्ठ)	24 H × 34 W.
चौथाई पृष्ठ (क्षितिज)	6 H × 17 W.
चौथाई पृष्ठ (ऊर्ध्वाधर)	12H × 8 W.
1/8 पृष्ठ (क्षितिज)	3H × 17 W.
1/8 पृष्ठ (ऊर्ध्वाधर)	6 H × 8 W.
1/16	2 H × 17W.
	5 H × 4 W.

एक से ज्यादा अंकों हेतु : 20% अंकों पर 3, 25% अंकों पर 6, 35 अंकों पर 9 एवं 40% अंकों पर 12 Insertions

एजेन्सी विज्ञापन : 15% out of above discount will be passed to Advt. Agency.

OTHER ADVERTISMENTS (Display Classified)

वर्गीकृत मल्टीकलर : 5cm x 4cm = 2000/- 5cm x 8cm = 3400/- शब्दों में : अधिकतम 50 शब्द 1000/- (अतिरिक्त शब्दों पर 5/– प्रति शब्द)

नोट : डिस्प्ले विज्ञापन एक वर्ष की सदस्यता के साथ दो बार प्रकाशित किया जावेगा.

SUBSCRIPTION RATES : (Inclusive of Postage) (New Rates)

1. एक प्रति रु. 25/-
2. एक वर्ष रु. 300/-
3. दो वर्ष रु. 500/-
4. तीन वर्ष रु. 700/-
5. चार वर्ष रु. 1000/-
6. पाँच वर्ष रु. 1200/-

आजीवन सदस्यता रु. 5000/-

सोना–उगले मिट्टी क्विज

क्विज प्रतियोगिता के विजेता को सोना–उगले मिट्टी की वार्षिक निःशुल्क प्रदान की जावेगी.

1. भारत का राष्ट्रीय पशु कौन सा है?
2. भारत के प्रथम प्रधानमंत्री कौन थे
3. जन-गण-मन राष्ट्रीय गान के रचयिता कौन हैं
4. क्षेत्रफल के हिसाब से भारत का सबसे बड़ा राज्य कौन सा है
5. विश्व का सबसे बड़ा महासागर (Largest Ocean) कौन सा है
6. प्रसिद्ध पुस्तक "हैरी पॉटर" (Harry Potter) किसने लिखी है?
7. हमारे सौरमंडल का सबसे बड़ा ग्रह कौन सा है?

नाम _____ पिता/पति _____

ग्राम _____ पोस्ट _____

तहसील _____ जिला _____

फोन _____ मोबाइल _____

उत्तर : 1. _____ 2. _____ 3. _____

4. _____ 5. _____ 6. _____ 7. _____

आपके बच्चे और अनुशासन

अनुशासन थोपा नहीं जा सकता। बच्चों को अनुशासन में इस प्रकार रखें कि उन्हें पता ही न चले, वे अुशास में है। अनुशासन के बिना किसी का गुजारा नहीं है। अनुशासन नहीं तो सफलता नहीं। बच्चे अनुशासन में तभी रहेंगे, जब वह उनके दिल से आ रहा होगा। उनकी समझ से आ रहा होगा। इसके लिए जरुरी है कि आप स्वयं कितने अनुशासन है।

बच्चों को, आज के जमाने में बेशक कोई हुक्म नहीं दिया जा सकता, किंतु इतना आप अवश्य साफ-साफ कह सकते है कि आप कहां तक सहमत है और कहाँ से असहमत। अपनी असहमति हमेश स्पष्ट व्यक्त करें, गोलमाल ढंग से नहीं। आपकी भाषा व हावभाव में कही भी धमकी न हो। कम से कम शब्दों में ज्यादा से ज्यादा बात कहें और जो कहे उससे पीछे न हटें। छोटी-छोटी बातों पर रोक-टोकी न करें। गंभीर मामलों में अपनी राय अवश्य जाहिर करें। बच्चों को साथ आप भी मॉडन बनने की कोशिश करें। जब भी आलोचना करें साथ में कुछ सकारात्मक सुझाव भी दें। आलोचना करने के बाद बच्चों को छूना थपथपाना, बाँहों में भरना न भूलें।

बच्चों से हीपूछों तुम क्या सोचते हो और समझते हो ? आप स्वयं जो बोलना चाहते है, उसी को बच्चों से बुलवा लें। बच्चों पर हाथ उठाना तो दूर, उन पर कभी चीख भी नहीं। बच्चों के साथ जिद कभी न कभी उन्हें अपनी कार्बन कॉपी जैसे साँचे में ढालने की महत्वकांक्षा न रखें। कठोर एक्शन लेने से पहले सोचें। दो बार चेतावनी देने के बाद भी असर न हो।

प्यार अपनी जगह, अनुशासन अपनी जक्षह रहेगा तभी परवरिश के मोर्चें पर आपकी विजय होगी आपको सफलता मिलेगी

स्व. डॉ. मन्मथ पाटनी
-डायरेक्टर, प्रेस्टीज ग्रुप

पिछले अंक से निरंतर

चाणक्य नीति

।। अथ अष्टमोऽध्यायः ।।
आठवां अध्याय

अजीर्णे भेषजं वारि जीर्णे वारि बलप्रदम्।
भोजने चामृत वारि भोजनान्ते विषप्रदम्।।

अपच की स्थिति में जल पीना औषधि का काम देता है। और भोजन के पांच जाने पर जल पीने से शरीर का बाल बढ़ता है। भोजन के बीच में जल पीना अमृत के समान है। परंतु भोजन के अंत में जल का सेवन विष के समान हानिकारक होता है।

हतं ज्ञानं कियाहीनं हतश्चाऽज्ञानतो नरः।
हतं निर्नायक सैन्य नष्टा हाभर्तृकाः।।

आचरण के बिना ज्ञान व्यर्थ है। अज्ञान से मनुष्य नष्ट हो जाता है। सेनापति के अभाव में सी नष्ट हो जाती है। और पति से रहित स्त्रियां भी नष्ट हो जाती हैं।

ठंड में फल खाने से लगता है डर ? जरूर खाएं, बीमारियां रहेंगी 10 फुट दूर

सर्दियों का मौसम आरामदायक, सुकून देने वाला और खुशनुमा होता है लेकिन सेहत के लिहाज से यह काफी चुनौतीपूर्ण भी होता है और अपने साथ कई वायरल इन्फेक्शन, फ्लू, कॉमन कोल्ड, निमोनिया जैसी बीमारियां लाता है. ऐसे में शरीर को बीमारियों से बचाने के लिए सर्दियों में खासतौर पर अपने इम्यून सिस्टम को मजबूत रखना बेहद जरूरी हो जाता है.

इम्यूनिटी बढ़ाने के लिए क्या खाएं ?

जब इम्यूनिटी बढ़ाने वाले फूड्स की बात आती है तो सर्दियों में फलों से बेहतर कुछ नहीं है. कई फलि वटामिन C से भरपूर होते हैं और ये हमारे इम्यून सिस्टम को बूस्ट करने में सबसे मदद करते हैं. सर्दियां इम्यूनिटी बढ़ाने वाले खादय पदार्थ खाने का सबसे सही समय है क्योंकि इसी समय आपको मौसमी और साल भर मिलने दोनों तरह के फल मिलते हैं जो एक-साथ मिलकर आपके शरीर को जरूरी पोषक तत्व देते हैं. यहां हम आपको कुछ ऐसे फल बता रहे हैं जो इम्यून सिस्टम के लिए सुपरफूड बताए जाते हैं और सर्दियों में हमारी डाइट में शामिल होने चाहिए.

संतरा आपको रखेगा बीमारियों से दूर

संतरे इम्यून सिस्टम को बूस्ट करने में काफी मदद करता है. संतरे विटामिन C और कैल्शियम से भरपूर होते हैं. डॉक्टरों का मानना है कि रोज एक संतरा खाने से शरीर में विटामिन C की रोजाना की जरूरत काफी हद तक पूरी हो जाती है.

इम्यूनिटी बढ़ाने वाले सबसे अच्छे खादय पदार्थों में से एक होने के अलावा संतरे त्वचा को किसी भी तरह के नुकसान से बचाने में भी मदद करते हैं, वजन कम करने में मदद करते हैं और हाई कोलेस्ट्रॉल लेवल को कम करने में भी मदद करते हैं.

कीवी भी रखेगा इम्यूनिटी मजबूत

संतरे के अलावा कीवी भी बेहतरीन फल है जो न सिर्फ देखने में अच्छा लगता है बल्कि इसका स्वाद भी बहुत अच्छा होता है. साथ ही यह भी विटामिन C का एक समृद्ध स्रोत है और इसे इम्यून सिस्टम के लिए सुपरफूड माना जाता है. विटामिन C से भरपूर होने के कारण यह आपके इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाने में मदद करता है और आपको आसानी से और बार-बार बीमार पड़ने से बचाता है.

मकर संक्रांति का पर्व

संदीप कौर खालसा
पंजाब इंजीनियरिंग इंदौर

मकर संक्रांति महज एक उत्सव नहींए बल्कि प्रकृति से हमारे गहरे जुड़ावए समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और मानवीय संबंधों के महत्व की याद दिलाने वाला त्योहार है। यह त्योहार हमें ऋतु की नई ऊर्जा को अपनानेए पर्यावरण की देखभाल करने और जीवन की सकारात्मकता का आनंद लेने के लिए प्रेरित करता है।मकर संक्रांति वह पर्व है जब सूर्य धनु राशि छोड़कर मकर राशि में प्रवेश करते हैं।यह त्योहार पूरे भारत में अलग.अलग नामोंए जैसे पोंगल ;तमिलनाडुद्ध या उत्तरायणए से मनाया जाता है।इस दिन सूर्य के उत्तर दिशा की ओर बढ़ने ;उत्तरायणद्ध से इसका महत्व बढ़ जाता है।मकर संक्रांति फसलों के मौसम के अंत और नई फसल के आगमन का प्रतीक है।लोग पवित्र नदियों ;जैसे गंगाद्ध में स्नान कर सूर्य देव को अर्घ्य देते हैं और दान.पुण्य करते हैं।तिल और गुड़ से बने व्यंजन ;जैसे लड्डूए चिक्कीद्ध इस त्योहार का मुख्य प्रसाद होते हैं।पतंग उड़ाना इस पर्व का एक प्रमुख आकर्षण हैए जिसे बच्चे और बड़े उत्साह से मनाते हैं।इस दिन खिचड़ीए गरम कपड़े और तिल का दान करना बहुत शुभ माना जाता है।यह पर्व आध्यात्मिक उन्नतिए नई शुरुआत और परिवार के साथ खुशियाँ बांटने का अवसर है।यह आपसी प्रेमए भाईचारे और नई ऊर्जा का संचार करने वाला एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक त्योहार है।मकर संक्रांति एक आनंदमय त्योहार है जहाँ लोग मिठाइयों का लुत्फ़ उठाते हैं और एक.दूसरे के प्रति दया और खुशी फैलाने के लिए प्रोत्साहित होते हैं। इस त्योहार की प्रमुख परंपराओं में से एक है तिल और गुड़ का आदान.प्रदानए जो मित्रों और परिवार के बीच एकताए प्रेम और सद्भावना का प्रतीक है। महाराष्ट्र में यह उत्सव विशेष रूप से धूमधाम से मनाया जाता हैए जहाँ महिलाओं के लिए हल्दी.कुमकुम की रस्में आयोजित की जाती हैं। यह त्योहार एक साथ आनेए स्वादिष्ट भोजन साझा करने और आने वाले वर्ष के लिए सकारात्मकता और शुभकामनाओं के साथ रिश्तों को मजबूत करने का समय है। यह फसल कटाई और एकजुटता दोनों का उत्सव है।मकर संक्रांति सिर्फ एक त्योहार नहीं हैय यह जीवन और रिश्तों के बारे में सार्थक सबक देती है। ष्तिलगुल घ्या आणि गोड गोड बोलाष्कहावतए जिसका अर्थ है घ्यह मिठाई लो और प्यार से बात करोष्ए सभी को प्रेम फैलाने और दूसरों के साथ अपने संबंधों को मजबूत करने की याद दिलाती है।

रेकी ग्रिड केन्द्रीयकरण

श्रीमती कुमुद अरोरा
मो. 098997-35355
097189-33456

रेकी एवं अन्तः स्त्रावी ग्रन्थियां

जैसे अच्छा सोचने से अन्तःग्रन्थियों से अमृतमयी (स्वास्थ्यवर्धक) स्त्राव होता है, वैसे ही रेकी साधना से भी अन्तः स्त्रावी ग्रन्थियों से अच्छे विचारों की भांति ही अच्छा स्त्राव होता है। इसलिए रेकी साधकों को अन्तः स्त्रावी ग्रन्थियों के संबंध में जानकारी आवश्यक है, जिससे रोगो की चिकित्सा में उसे सहायता मिल सके।

मानव शरीर में अन्तः स्त्रावी ग्रन्थियों का उसी प्रकार से महत्व है, जिस प्रकार किसी कारखाने में कारीगरों के न होने पर सारा काम बन्द हो जाता है। उसी प्रकार इन ग्रन्थियों के अभाव या अस्वस्थता मेंशरीर का स्वस्थ संचालन नहीं हो सकता।

अन्तः स्त्रावी ग्रन्थियों का निर्माण एवं इसकी प्रक्रिया भी अपने आप में विलक्षण है। इनका निर्माण बहुत छोटी एवं सूक्ष्म कोशिकाओं द्वारा होता है। सभी अन्तः स्त्रावी ग्रन्थियां अपने बनाए रस को अपने से सम्बन्धित शरीर के विभिन्न आन्तरिक अंगों तक रक्त द्वारा पहुंचाती है। अन्तः स्त्रावी ग्रन्थियों का मुख्य कार्य अपने द्वारा निर्मित रस की वृद्धि करना एवं मांसपेशियों का सन्तुलन बनाए रखना है। साथ ही अन्य ग्रन्थियों का नियंत्रण कर शरीर की विभिन्न क्रियाओं में महत्त्वपूर्ण योगदान देना है। अन्तः स्त्रावी ग्रन्थियों के विकार अथवा इनकी निष्क्रियता या अधिक सक्रियता सेशरीर में आश्चर्यजनक परिवर्तन आ जाते है, जो कि आयुर्विज्ञान पद्धति द्वारा सिद्ध हो चुके हैं । इनकी कार्यप्रणाली कुछ इस प्रकार है कि एक ग्रन्थि को दूसरी का पूरक कहा जा सकता है।

यहां पर गन्थियों के नाम एवं उनके कार्य की संक्षिप्त जानकारी दी जा रही है।

1. पिटयूटरी ग्रन्थि, 2. पीनियल ग्रन्थि, 3. पैराथॅयराइट ग्रन्थि, 4. थॉयराइड ग्रन्थि, 5. थायमस ग्रन्थि, 6. ऐड्रेनल ग्रन्थि, 7. पैकियाज ग्रन्थि, 8. प्रजनन ग्रन्थियां, 9. अण्डाशय ग्रन्थियां, 10. अण्डकोष ग्रन्थियां

सोने की चिड़िया

यकीन तो पूरा है
हाशिये के आदमी जो दमित है, शोशण,
अत्याचार, उत्पीड़न के शिकार है,
छाती पर आज भी भारी बोझ है
जातिवाद, छुआछूत का,
धर्म के ठेकेदार भी रह–रह कर
फतवा जारी करते रहते है
उत्पीड़ितों के प्रवेश से मंदिर,
अपवित्र हो जाएगा,
नतीजन मंदिर प्रवेश पर अपमान
मंदिर जो खड़ा है, इन्हीं का श्रम झरा है,
ये है कि मानते है नहीं
धर्म की विसात पर जगह नहीं
ना जाने क्यों कैद की रखा है
धर्म के ठेकेदारो ने,
शायद गिनती बढाने के लिये,
धर्म के ठेकेदार अपना मानते भी नहीं
न जाने किस दण्ड की सजा है
हाशिये के लोगों के लिये
छाती में ठोंका छूआछूत–भेदभाव का खूंटा,
दर्द देता रहता है जो पल–प्रतिपल,
धर्म के आवरण में लिपटा रहस्य है
गुलाम बनाये रखने का,
वक्त गवाह है जो आज हाशिये के लोग है
उनके पुरखों की सत्ता में,
यही देश जहां पग–पग पर छल है,
जातिभेद है, नफरत है,
वही सोने की चिडिया था एक दिन,
सच है वक्त ने बख्शा था विश्वव्यापी
सत्ता–सोहरत तभी तो था,
देश सोने की चिड़िया,

नन्दलाल भारती
सामाजसेवक
एवं साहित्यकार

पिता का दर्द

पिता के दर्द की खबर,
रेतती रहती है आजकल
पिता की पीड़ा स्वयं के टूटते अंग का,
एहसास कराती है
कुनबा पिता के दर्द में,
कराह रहा है आजकल.....
नशा को शिव का वरदान,
कहने वाले पिता को
वही वरदान,अभिशाप बन गया है
फेफड़े की सड़न,तन की अंकड़न
चैन से जीने नही देती आजकल.....
सब कहते काश नशा से दूर रहते तो
नित नई नई बीमारियों से दूर रहते
ना खुद ना कुनबा रक्त के आंसू रोता
परदेसी बदनसीब बेटा
चाहकर भी हाथ नही थाम पाता.....

श्री गोपाल नारसन

चुनाव का सच

यह सच है चुनाव आते ही
हम जाति धर्म मे बंट जाते है
भाईचारे सोहार्द की जगह
नफरत द्वेष में बदल जाते है
तब खो जाती है इंसानियत
केवल वोट नज़र आते है
वास्तव में हम खुद नही बंटते
हमें वोट से बांट दिया जाता है
हमारी गिनती हमारी पहचान
सब वोटो से होने लगती है
जिसकी जितनी संख्या भारी
उसकी उतनी ही हिस्सेदारी
नारा लगाकर वोट पाने वाले
कुर्सी मिलते ही भूल जाते है
टुकड़ो में बंट चुकी जनता को
उनसे किये चुनावी वायदों को
ठगे से हम असहाय रह जाते है
साल में फिर से ठगे
जाने के लिए।....

सूरज की महता

दिनभर के ताप का
अनुभव है ढलता सूरज
दिनभर के जीवन का
प्रमाण है ढलता सूरज
सर्दी से निजात का
रहबर है ढलता सूरज
तमस को हर लेने का
एहसास ढलता सूरज
वह ढलता सूरज जो
सांझ लेकर आया है
मेहनतकस इंसान के लिए
राहत लेकर आया है
स्वयं अस्त होकर वह
निशा को आने देता है
दिनभर थके मजदूर को
चैन की रात देता है
वह अस्त होता है
फिर उदय होने के लिए
जीवन के अंधकार को
परास्त कर देने के लिए
सूरज प्रतीक है अच्छाई का
सूरज प्रतीक है परोपकार का
जो स्वयं जलकर दुसरो को
प्रकाशमान करता है
उनके तमस को हरता है
वे रात को चैन से सो सके
स्वयं को अस्त करता है।

आपकी समस्त डिजाईनिंग एवं प्रिंटिंग समस्याओं का समाधान हमारे पास है...
सभी प्रकार के विज्ञापन डिजाईन, पब्लिसिटी संबंधी कार्य हेतु जैसे –
★कमर्शियल डिजाईनिंग ★ क्वालिटी स्क्रीन प्रिंटिंग ★ वॉल पेंटिंग ★ स्टीकर्स
★ मेटल प्लेट्स ★ पी.वी.सी. बैनर्स ★ डैंगलर्स ★ फ्लेक्स ★ बैग ★ ट्राफी ★ साइन बोर्ड
★ होर्डिंग्स ★ ऑफसेट प्रिंटिंग जाब एवं अन्य पब्लिसिटी आयटम।
नोंट : कृषि आधारित कंपनी के कार्यो में विशेष दक्षता।
राज एडवरटाइजर्स एण्ड कंसलेंटट्स
ई.ए.–188, स्कीम नं. 94, रिंग रोड़, भारत पेट्रोल पंप के सामने, इन्दौर–452010 (म.प्र.)
मो. 9826055852, 7224943188 Email : devrajchaudhary@rediffmail.com

बटाटा वड़ा

सामग्री : (15 बटाटा वडा हेतु) : 300 ग्राम आलू, 6 से 8 हरी मिर्च, 1 छोटा चम्मच लहसुन का पेस्ट, 2 छोटा चम्मच नींबू का रस, 2 छोटा चम्मच शक्कर, 2 छोटा चम्मच गरम मसाला, 2 बड़ा चम्मच कटा हुआ हरा धनिया, नमक स्वादानुसार, बेसन का घोल-150 ग्राम चने का आटा (बेसन), 1.5 छोटा चम्मच लाल मिर्च पाउडर, 1.5 छोटा चम्मच हल्दी पाउडर, 1.5 छोटा चम्मच सोडा बाईकार्ब (ऐच्छिक), नमक स्वादानुसार।

डिप : 1 कप दही, 1 छोटा चम्मच शक्कर, आधा छोटा चम्मच लाल मिर्च पाउडर, नमक स्वादानुसार, सजाने के लिए हरा धनिया।

विधि : आलू उबालकर छिलके उतार लें व मसल दें। मिर्च, लहसुन, नींबू का रस, शक्कर, गरम मसाला, हरा धनिया व नमक सबको पीसकर आलू के साथ मिला लें। 15 भागो में बाँटकर गोल आकार दें। बेसन, नमक, लाल मिर्चा, हल्दी पाउडर, सोडा बाईकार्ब व पानी मिलाकर गाढ़ा घोल तैयार कर लें। आलू के गोले को घोल में डुबा कर सुनहरा भूरा होने तक तल लें। 1 कप फेंटे हुए दही में स्वादनुसान नमक, 1 छोटा चम्मच शक्कर, आधा छोटा चम्मच मिर्च पाउडर आर कटे हरे धनिये की पत्तियों से सजाकर सर्व करें।

सरसों के साग की भुजिया

श्रीमती मधु चौधरी

सामग्री : आधा किलो सरसों का साग, एक चम्मच सरसों का तेल, पाँच कली बारीक कतरा लहसुन, तीन साबुत लाल मिर्च, स्वादानुसार लाल मिर्च पाउडर और नमक।

विधि : सरसों के साग के पत्तों को अच्छी तरह धोकर इच्छानुसार बारीक काट लें। लोहे की कड़ाही में सरसों का तेल गर्म करें। उसमें लहसुन के कतरे व साबुत लाल मिर्च को हाथ से तीन-चार टुकड़ों में तोड़कर भूनें। इसमें साग डाल दें और थोड़ी देर ढँक दें। साग का पानी घुट कर सुखने लगे, तो उसमें नमक डाल दें। साग गल जाए, तो स्वादानुसार लाल मिर्च पाउडर डाल कर खूब अच्छी तरह भूनें। यह भुजिया सर्दियों में बहुत अच्छी लगती है।

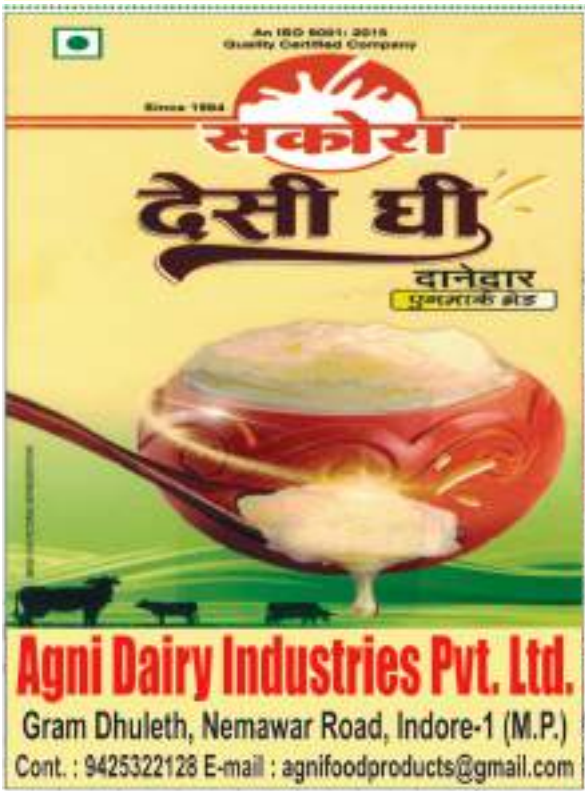

पं. राजेन्द्र प्रसाद पाठक (बावई वाले)
101, गुरुनानक मार्ग, डाक बंगला रोड़, सोनकच्छ
☎ 07270-222959, 98270-47936

मेष :

इस महीने आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है। कार्य की अधिकता के कारण स्वास्थ्य में निरंतर गिरावट महसूस होगी। साथ ही परिवार में स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं आ सकती हैं।

सिंह :

इस महीने आपको बड़े सोच विचार कर चलने की आवश्यकता है। साथ ही अपने खर्चों पर नियंत्रण करने की जरूरत है, नहीं तो आप बड़े लॉस में जा सकते हैं।

धनु :

यह महीना ज्यादा अच्छा नहीं कहा जा सकता, विशेषकर स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का आपको सामना करना पड़ेगा। साथ ही कार्यक्षेत्र में इस महीने अत्यधिक प्रयास करने पर भी आपको बड़ी सफलता मिलना मुश्किल है।

वृषभ :

यह महीना आपके लिए अच्छा रहने वाला है। महीने की शुरुआती समय में आपको आर्थिक लाभ के योग बन रहे हैं। किसी नए कार्य में आप सहभागी बन सकते हैं, साथ ही कार्यक्षेत्र में परिवर्तन के योग निर्मित हो रहे हैं।

कन्या :

यह महीना आपके लिए ठीक–ठाक रहने वाला है, मन प्रसन्न रहेगा। आप अपने अंदर एक नई आध्यात्मिक ऊर्जा को महसूस करेंगे। इस महीने आपको कोई सफल मार्गदर्शन मिलेगा,

मकर :

यह महीना शानदार रहेगा आपका कोई पुराना विवाद खत्म होगा, जिस कारण आप राहत की सांस लेंगे। इस महीने आर्थिक तौर से आपके लिए कोई बड़ा लाभ का योग बन सकता है।

मिथुन :

यह महीना आपके लिए कुछ नया लेकर आने वाला है। कार्यक्षेत्र में चल रही अपेक्षाओं के कारण आप जो नेगेटिव विचारों से परेशान है, इस महीने आपको उसमें राहत मिलने वाली है।

तुला :

यह महीना अच्छा रहेगा आप नए कार्य की शुरुआत करने का विचार मन में बना सकते हैं, जिसमें आप इस महीने सफल भी होंगे। इस महीने आप मानसिक पारिवारिक चिंताओं से मुक्त होंगे।

कुंभ :

यह महीना आपके लिए ठीक–ठाक रहने वाला है, हालांकि आप अपने परिश्रम से खोई हुई विरासत फिर से प्राप्त कर सकते हैं। राजनीतिक–सामाजिक क्षेत्र में कार्य कर रहे लोगों के लिए यह महीना अच्छा रहेगा।

कर्क :

यह महीना आपकी राशि के लिए ज्यादा अच्छा नहीं कहा जा सकता। आपका कोई पुराने विवाद उभर कर सामने आ सकते है, जिस कारण आपको कई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

वृश्चिक :

यह महीना आपके लिए अत्यधिक दौड़ भाग वाला रहेगा। आपको अपने अधिकारी वर्ग से काफी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

मीन :

यह महीना आपके लिए ज्यादा अच्छा नहीं कहा जा सकता। स्वास्थ्य और प्रशासनिक क्षेत्र की समस्याओं का इस महीना आपको सामना करना पड़ सकता है।

क्या आप
सोना-उगले मिट्टी
कृषि-पत्रिका

घर बैठे पढ़ना चाहते हैं? यदि हाँ.....
तो इस फार्म को भरकर हमें शीघ्र भेजे दें

महोदय,

मैं **सोना-उगले मिट्टी** पत्रिका का सदस्य बनना चाहता हूँ मेरा विवरण निम्नानुसार हैं।

1. पूरा नाम.....
2. पूरा पता.....
3. पिन कोड नं. .....
4. सदस्यता अवधि 1 वर्ष/2 वर्ष/3 वर्ष/आजीवन.....
5. पे ऑर्डर/बैंक डी.डी. क्र.....

बैंक का नाम .....

राशि रू. .....

(पे आर्डर या डी.डी. सोना-उगले मिट्टी के नाम ही बनाएं)

सदस्यता शुल्क

अवधि	
एक वर्ष	300/-
दो वर्ष	500/-
तीन वर्ष	700/-
आजीवन	5000/-

धन्यवाद

आवेदक

ई.ए.–188, स्कीम नं. 94, रिंग रोड़, भारत पेट्रोल पंप के सामने, इन्दौर–452010 (म.प्र.)
मो. 9826055852, 7224943188
Email : devrajchaudhary@rediffmail.com, sonauglemitti25@gmail.com
www.sonauglemitti.com

रजि. नं.: 03/27/01/18179/15

जय देवगुरू शक्ति सामाजिक कल्याण समिति

ई.ए.–188, स्कीम नं. 94, रिंग रोड़, भारत पेट्रोल पंप के सामने, इन्दौर–452010 (म.प्र.)
मो. 9826055852, 7224943188 E-mail : jaigurudevshakti@gmail.com

ईश्वर एवं आप सबके सहयोग से किसानों को जागरूक एवं शिक्षित करने के हेतु ***जय देवगुरु शक्ति सामाजिक कल्याण समिति*** एक रजिस्टर्ड एन.जी.ओ. है। हमारी इस संस्था में कई गणमान्य व्यक्ति व वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक जुडे है जिनसे हम अपने इस एन.जी.ओ के माध्यम से किसानों को हर स्तर पर स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि से जुडी नवीन तकनीक (खाद, बीज, कीटनाशक, नवीन मशीनों के प्रयोग) हेतु जागरूक कर रहें हैं। जैसा की आप सबको ज्ञात है की हमारे देश में किस तरह से सारे किसान कई मूलभूत समस्याओं से जूझ रहे हैं, इसके लिए हम सब को मिल कर आगे आना होगा तभी हम अपने अन्नदाताओं की स्थिति सुधार पायंगे। हमारे इस प्रयास में हम आपका सहयोग चाहते हैं जिससे हम देश के किसानो के लिए कुछ अच्छा कर सकें।

श्रीमान से निवेदन है की अपने क्षेत्र में भी हमारे एन.जी.ओ की टीम को कार्य करने का अवसर प्रदान करें। हमारी टीम ग्रामीण क्षेत्रों में जहां 50-200 किसान एकत्रित हो सकें, कृषि वैज्ञानिक व आपकी कंपनी के व्यक्ति को साथ ले उन्हें शिक्षित करती है। अतः इस अच्छे कार्य के लिए हमारे एन.जी.ओ. को बजट आवंटित करें। हमारा खाता क्र. 881010110009622, IFS Code No. BKID0008810 ***जय देवगुरु शक्ति सामाजिक कल्याण समिति*** के नाम से **बैंक ऑफ इण्डिया,** विजय नगर शाखा, इन्दौर (म.प्र.) में है। कृपया देय राशि हमारे खाते में NEFT करें अथवा चैक/ड्राफ्ट उपरोक्त दिए हमारे डाक पते पर भेजने का कष्ट करें। हमारा संस्थान गरीबों, ग्रामीणो को शिक्षित करने हेतु कुछ अच्छा करने जा रहा है जिसमें आपका दिल से दिया सहयोग अपेक्षित है।

भवदीय
वास्तेः जय देवगुरु शक्ति सामाजिक कल्याण समिति
देवराज चौधरी
(देवराज चौधरी) अध्यक्ष

India is creating the next wave of GREEN Entrepreneurs — and we're bringing them together!
HORTIINDIA EXPO
Agro-forestry | Agri-Tech | Handicrafts & Rural Enterprises
Impactful AND Profitable
With the right government support, grants, subsidies, and market visibility, these sectors can scale faster than ever.
12–14 March 2026
Empower farmers to become entrepreneurs
Build climate-smart, future-ready businesses
Interested in exhibiting, partnering, or visiting?
REGISTER / ENQUIRE:
+91-9501274021
Media Partner
सोना-उगले मिट्टी

न भूतो, न भविष्यति...
FEBRUARY 2026
6 7 8 9
Vanita Vishram Ground
SURAT
With 15th edition of
FOOD MECH
THE LARGEST FOOD INDUSTRY EXHIBITION
JOIN THE LARGEST INTERNATIONAL FOOD PROCESSING & PACKAGING EXPO
Explore cutting-edge innovations
Connect with global manufacturers & suppliers
Unlock new business opportunities
For Stall Booking Contact :
Devraj Chaudhary 98260 55852 72249 43188
Mansi Soni 9826023769
Rachna Pachorkar 9516767380
Raj Sanodiya 7987206448
Piyush Sanodiya 9302821297
Rashmi Sharma 9111486377
Media Partner
सोना-उगले मिट्टी

20 21 22 23 मार्च 2026
अंबेडकर ग्राउंड, रतलाम मध्यप्रदेश
Ambedkar Ground, Ratlam, Madhya Pradesh
MADHYA BHARAT
Agri Expo
DAIRY, SOLAR, EDUCATION AND MILLETS FESTIVAL
For Stall Booking Contact :
Devraj Chaudhary 98260 55852 72249 43188
Mansi Soni 9826023769
Rachna Pachorkar 9516767380
Raj Sanodiya 7987206448
Piyush Sanodiya 9302821297
Rashmi Sharma 9111486377
LARGEST AND MOST SUCCESSFUL INTERNATIONAL AGRICULTURE EXHIBITION OF MADHYA PRADESH
INTERNATIONAL EXHIBITION & CONFERENCE ON AGRICULTURE, HORTICULTURE, DAIRY AND FOOD PROCESSING TECHNOLOGY
Media Partner
सोना-उगले मिट्टी

AGROWORLD EXPO
2026
13 14 15 16 FEB
26th EDITION
26th EDITION
BURHANPUR (MP)
Smart Farming...
Stronger Future...
Corporate Office : 2nd Floor, Balaji Sankul, Khwajamiya Chowk, Jalgaon.
Email : marketing@eagroworld.in Website : www.eagroworld.in
MARKETING CHANNELS OF AGROWORLD
For Stall Booking Contact :
Devraj Chaudhary 98260 55852 72249 43188
Mansi Soni 9826023769
Raj Sanodiya 7987206448
Piyush Sanodiya 9302821297
Naresh Mundre 7389636510

पूसा कृषि विज्ञान मेला

IARI

25 – 27 फरवरी, 2026

विकसित कृषि – आत्मनिर्भर भारत

अंतर्राष्ट्रीय महिला कृषक वर्ष

स्थल : मेला ग्राउंड, भा कृ.अनु.प.-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली-110012

आप सादर आमंत्रित हैं

मुख्य आकर्षण

- कृषि योजनाएं
- फसल विविधीकरण एवं जलवायु तन्यक कृषि
- महिलाओं एवं युवाओं का उद्यमिता विकास
- कृषि विपणन, कृषक संगठन एवं स्टार्टअप
- डिजिटल कृषि
- किसानों के नवाचार
- जीवंत फसल प्रदर्शन एवं पूसा बीज विक्रय

संपर्क करें

निदेशक
भा.कृ.अनु.प.-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली-110012
director@iari.res.in 011-25843375 | 011-25842367

संयुक्त निदेशक (प्रसार)
भा.कृ.अनु.प.-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली-110012
jd_extn@iari.res.in 011-25842387, 25842905, 25841039, 25841670

Media Partner
सोना-उगले मिट्टी

A Trusted Destination For Your Get Together

Reception

Cilantro

Banquet

Lounge

Suite Room

Room 1

Lawn

Work Room

Facilities

Food and Dining Spaces/Services • Hotel Bar • Business Center • Meeting Rooms • High Speed Internet • Guest Lounges • Multi Cuisine Restaurant • Multiple Event Venues • Swimming pool (Nipania) • Live Music & Songs • Valet Parking • Travel Desk • Teen Imli has Roof top Lounge • Buffet Breakfast Served • Live kitchen at Cilantro • 31 Premium Rooms

108+ People in Banquet Nipania & 200 at Teen Imli & 2500+ in Lawn Nipania 600 People at Teen Imli (Ideal Place for Conference & Family Programs)

Rahul Kumar - Mob. : 98934 49187
Survey No. 348/3, 348/6 and 349/4, Village Chitavad,
Palda Road, Teen Imli Square, Ring Road,
Indore-452001 MP www.jardinhotels.com

JARDIN

Mohnish Bhandari - Mob. : 99931 62889
43/9 Tulsi Nagar, Nipania, Indore
0731 355 0000
www.jardinhotels.com

TRACTOR BRAND
IIL

शिनवा

सुरक्षा की गारंटी

In Technical Collaboration with
Nissan Chemical Corporation
JAPAN

बहुआयामी कीटनाशक

अनूठी ट्रान्सलैमिनार क्रिया

नुकसान तुरंत बंद

अद्वितीय एवं नवीन कार्यप्रणाली

पौधे में शीघ्र प्रवेश

160 मि.ली. प्रति एकड़

SHINWA
FLUXAMETAMIDE 10% EC
INSECTICIDE

insecticides (INDIA) LIMITED | हर क़दम, हम क़दम